

PRESS & MEDIA



**CSIR-CENTRAL BUILDING RESEARCH INSTITUTE,
ROORKEE, UTTARAKHAND**



क्विक रीड

श्री राम मंदिर में सूर्य तिलक प्रणाली का सीबीआरआई ने किया प्रदर्शन

रुड़की, 27 मार्च (अनिल) : राम नवमी के अवसर पर सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की द्वारा विकसित सूर्य तिलक प्रणाली का आज राम जन्मभूमि मंदिर परिसर में दोपहर 12:00 से 12:08 बजे तक सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया। इस वर्ष का आयोजन विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह सूर्य तिलक मंदिर के निर्माण कार्यों की पूर्णता के पश्चात आयोजित किया गया। सूर्य तिलक प्रणाली के सफल प्रदर्शन को सुनिश्चित करने के लिए लेंस प्रणाली को सावधानीपूर्वक साफ किया गया और पुनः संरेखित



श्री राम लला की मूर्ति पर चमकता सूर्य तिलक।

(रियलाइन्ड) एवं पुनः अंशांकित (रीकैलिब्रेट) भी किया गया। इस कार्य में सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की के वैज्ञानिक डॉ. आरएस बिष्ट और अभियंता वी. चक्रधर सहित ऑप्टिका टीम शामिल रही, जिन्होंने ऑप्टिकल सेटअप की गहन सफाई, पूर्व-कार्यक्रम अंशांकन, संरेखण एवं परीक्षण कार्य संपन्न किया।

सूर्य तिलक



अयोध्या: भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव रामनवमी पर शुक्रवार को 10 लाख से अधिक श्रद्धालु अयोध्या पहुंचे। राम मंदिर में दोपहर 12 बजे वैज्ञानिक तकनीक की मदद से रामलला का दिव्य 'सूर्य तिलक' किया गया। करीब नौ मिनट तक सूर्य की किरणें सीधे भगवान के मस्तक पर पड़ीं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में 'सूर्य तिलक' समारोह को ऑनलाइन माध्यम से देखा।

Home / राष्ट्रीय / Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा विकसित सूर्य तिलक प्रणाली का 'श्री राम मंदिर, अयोध्या' में सफलतापूर्वक प्रदर्शन

राष्ट्रीय

Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा विकसित सूर्य तिलक प्रणाली का "श्री राम मंदिर, अयोध्या" में सफलतापूर्वक प्रदर्शन



Manoj kumar 5 days ago

302 1 minute read



<https://www.nazariyanews.com/41526/>

CSIR-CBRI in the Limelight | 03.03.2026

बढ़ते वायु प्रदूषण और तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर की चर्चा

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में 'विज्ञान में महिलाएं : विकसित भारत को उत्प्रेरित करना' विषय पर विज्ञान दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस मौके पर विज्ञानियों ने कहा कि जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा है, जो नई खोजों व नवाचारों का मार्ग प्रशस्त करती है। इस दौरान हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र पर बढ़ते वायु प्रदूषण, ब्लैक कार्बन व तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर भी चर्चा की गई।

सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एआरआइएस) नैनीताल के उपाध्यक्ष एवं विज्ञानी डा. नरेंद्र सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने 'हिमालय में वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण

- सीबीआरआइ रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का किया गया आयोजन
- विज्ञानी बोले, जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा, जो नई खोजों का मार्ग करती है प्रशस्त

ग्लेशियरों का पिघलना, जल स्रोतों में कमी व प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता में वृद्धि गंभीर चिंता का विषय है। सीबीआरआइ रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी की सराहना करते हुए विशेष रूप से संस्थान की महिला विज्ञानियों एवं कर्मियों के योगदान को उल्लेखनीय बताया। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. नीरज जैन ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के महत्व व इसके उद्देश्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस मौके पर दीप्ति कर्माकर आदि उपस्थित रहे।



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह में उपस्थित अतिथि और विज्ञानी ● सागर-संस्थान



CSIR-CBRI in the Limelight | 11.03.2026

पर्यावास और प्रकृति के सामंजस्य से महका सीबीआरआई परिसर-51वें वार्षिक फ्लावर शो में प्रकृति संरक्षण और सतत विकास का अनूठा संदेश...



पर्यावास और प्रकृति के सामंजस्य से महका सीबीआरआई परिसर

■ 51वें वार्षिक फ्लावर शो में प्रकृति संरक्षण और सतत विकास का अनूठा संदेश

रुड़की, 10 मार्च (अनिल) : सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में मंगलवार को 51वां वार्षिक फ्लावर शो उत्साह और भव्यता के साथ संपन्न हुआ। इस वर्ष की थीम पर्यावास और प्रकृति का सामंजस्य रही, जो आधुनिक मानव आवास और प्राकृतिक संतुलन के बीच एक सेतु का कार्य करते दिखी।

संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि फूल न केवल सुंदरता के प्रतीक हैं, बल्कि वे हमारे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार भी करते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सतत



प्रदर्शनी का अवलोकन करते अतिथि।

(दीपक)

विकासतभी संभव है जब हम अपने प्राकृतिक संसाधनों और हरियाली के संरक्षण को प्राथमिकता दे। डॉ. चंदन स्वरूप मीना ने आम्रोजन की महत्ता पर प्रकाश डाला। पुष्प प्रदर्शनी के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं

दर्शकों का मन मोह लिया। इनमें पुष्प सज्जा: में फूलों को कलात्मक रूप देकर पर्यावरण का संदेश दिया गया। गमला प्रदर्शनी में विभिन्न सजावटी और दुर्लभ पौधों की प्रजातियों का प्रदर्शन। कार्यक्रम

का विशेष आकर्षण फैशन शो रहा।

कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजिका डॉ. लीना चौरसिया और सह-संयोजक डॉ. सोजू एलेक्जेंडर की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

पर्यावास और प्रकृति के सामंजस्य से महका सीबीआरआई परिसर

मेगा लोक उत्सव का



Share Copy Save Font D'load Size Image Image Text Listen

रंग-बिरंगे फूलों से महकी प्रदर्शनी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। सीबीआरआई में मंगलवार को पर्यावास और प्रकृति का सामंजस्य थीम के साथ 51वां वार्षिक फ्लावर शो उत्साह और उत्साह के साथ मनाया गया। इस आयोजन ने न केवल फूलों की सुंदरता को प्रदर्शित किया, बल्कि मानव आवास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखने का एक सशक्त संदेश भी दिया।

कार्यक्रम की शोभा मुख्य अतिथि विधायक प्रदीप बत्रा की पत्नी मनीषा बत्रा ने बढ़ाई। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि फूल सकारात्मकता के प्रतीक हैं जो मन को शांति प्रदान करते हैं। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. चंदन स्वरूप मीना के स्वागत उद्बोधन से हुई। प्रदर्शनी के दौरान संस्थान का परिसर रंग-बिरंगे फूलों और दुर्लभ पौधों की प्रजातियों से महक उठा। आयोजन के मुख्य



रुड़की के सीबीआरआई में मंगलवार को आयोजित पुष्प प्रदर्शनी का अवलोकन करते अतिथि।

आकर्षण विविध प्रतियोगिताएं रही। पुष्प सज्जा, गमलों की सजावट और बागवानी श्रेणियों में प्रतिभागियों ने अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। अस्वथी, दीप्ति कर्माकर और दीक्षा गुप्ता द्वारा आयोजित फैशन शो ने कार्यक्रम में ग्लैमर और उत्साह का तड़का लगाया। इस भव्य आयोजन को सफल बनाने में कार्यक्रम की

संयोजिका डॉ. लीना चौरसिया और सह-संयोजक डॉ. सोजू एलेक्जेंडर की महत्वपूर्ण भूमिका रही। मौके पर विशिष्ट अतिथि आईआईटी के निदेशक केके पंत की पत्नी हेमा पंत, सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार की पत्नी सरलाश्री और पूर्व मुख्य वैज्ञानिक पूर्णिमा परिदा आदि शामिल रहे।

कमजोर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया है। कानपुर से कला सीखी हरिद्वार में मिली पहचान नमिता गुप्ता मूलतः कानपुर

निराकरण का उन्हां कानपुर ल लकर पेंट तक के खर्च उठाकर मुकाम दिलाया है। नमिता के साथ सबसे अहम बात है कि उनके ससुराल में पति बेटे और अन्य सदस्यों का भी भरपूर सहयोग मिलता है।



सीबीआरआई में फ्लावर शो में फूलों का अवलोकन करतीं अतिथि महिलाएं। स्रोत:संस्थान

सीबीआरआई में फ्लावर शो का हुआ आयोजन

रुड़की। सीबीआरआई में मंगलवार को 51वां वार्षिक फ्लावर शो उत्साह आयोजित हुआ। इस वर्ष की थीम "पर्यावास और प्रकृति का सामंजस्य" रही।

रंग-बिरंगे फूलों और दुर्लभ पौधों से सजे परिसर ने दर्शकों को आकर्षित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि समाजसेवी मनीषा बत्रा रहीं जबकि विशिष्ट अतिथियों में हेमा पंत, सरला श्री और पूर्णिमा परिदा शामिल रहीं। संस्थान के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि सतत विकास के

लिए प्राकृतिक संसाधनों और हरियाली का संरक्षण आवश्यक है। पुष्प सज्जा, गमला प्रदर्शनी और बागवानी प्रतियोगिताओं ने दर्शकों का मन मोह लिया।

वहीं अस्वथी, दीप्ति कर्माकर और दीक्षा गुप्ता की ओर से आयोजित फैशन शो भी आकर्षण का केंद्र रहा। कार्यक्रम के अंत में विजेताओं को सम्मानित किया गया। आयोजन में संयोजिका डॉ. लीना चौरसिया और सह-संयोजक डॉ. सोजू एलेक्जेंडर की अहम भूमिका रही। संवाद

तीसरे दिन पहलवानों ने दिखाया दमखम

बहादुराबाद। बहादुराबाद में भारतीय किसान यूनियन (बेदी) और ग्रामीणों की ओर से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय एकता दंगल के तीसरे दिन विक्की पहलवान (पंजाब) और परवेज



सीबीआरआई ने ओडिशा में किया स्मार्ट विलेज पहल की शुरुआत

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने ओडिशा के केंद्रापड़ा जिले के राजनगर ब्लॉक स्थित कुसुनपुर गांव में सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक प्रदीप कुमार रमणचारला के नेतृत्व में किया गया।

इस पहल का उद्देश्य शोध संस्थानों, स्थानीय प्रशासन और कार्यान्वयन साझेदारों के सहयोग से वैज्ञानिक नवाचारों और व्यावहारिक समाधानों को ग्रामीण समुदायों तक पहुंचाना है ताकि गांवों में आधारभूत सुविधाओं, आजीविका और पर्यावरणीय स्थिरता को मजबूत किया जा सके। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एन कलैसेल्वी, सचिव वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद



स्मार्ट विलेज पहल का शुभारंभ करते अतिथि। स्रोत:संस्थान

ने वर्चुअल माध्यम से हिस्सा लिया।

कार्यक्रम के दौरान एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई जिसमें विभिन्न प्रयोगशालाओं द्वारा विकसित तकनीकों को प्रदर्शित किया गया। इन तकनीकों को कुसुनपुर गांव में लागू किया जाना प्रस्तावित है।

साथ ही कुसुनपुर स्मार्ट विलेज के लिए

तैयार की गई विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का भी अनावरण किया गया। विशेषज्ञों का मानना है कि यह पहल ग्रामीण अवसंरचना, आजीविका, पर्यावरणीय संरक्षण और आवश्यक सेवाओं तक पहुंच को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इसे देश के अन्य गांवों में भी लागू किया जा सकेगा।

Kusunpur all set to become Odisha's first smart village

Ashis Senapati / TNN / Mar 17, 2026, 00:48 IST

Select **TOI** as

Comments

Share



AA



Kendrapada: With modern technologies for daily life and agriculture, [Odisha](#) is all set to get its first "smart village" in Kusunpur under Rajnagar block in Kendrapada district, home to 130 families with a population of 700.

Aligning with the Prime Minister's vision of "Viksit Bharat@2047, Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), ministry of science and technology, has launched a mission-mode project on Monday to

develop Kusunpur into a smart village, marking a significant step towards promoting technology-driven, sustainable rural development. The initiative aims to bring practical solutions to rural communities through collaboration between CSIR research institutions, local administration and implementation partners.

<https://timesofindia.indiatimes.com/city/bhubaneswar/kusunpur-all-set-to-become-odishas-first-smart-village/articleshow/129618151.cms>

CSIR SMART VILLAGE initiative inaugurated in Kusunpur

The CSIR SMART VILLAGE: An Initiative was inaugurated today at Kusunpur Village, Rajnagar Block, Kendrapara District, marking a significant step toward promoting technology-driven and sustainable rural development

by [Sambad English Bureau](#)
March 16, 2026, 6:53 PM IST



<https://sambadenglish.com/news-from-around-the-state/csir-smart-village-initiative-inaugurated-in-kusunpur-11218353>

← Post



Collector and District Magistrate Kendrapara

@dmkendrapara



Building smarter villages!

The CSIR Smart Village Initiative was inaugurated at Kusunpur,Rajnagar Block, Kendrapara with support of District Administration,Bal Raksha Bharat & Nature's Club to promote sustainable rural development and better livelihoods.

@rdmodisha

@IPR_Odisha



7:24 PM · Mar 16, 2026 · 354 Views

<https://x.com/dmkendrapara/status/2033542479052693813>

Video

- Home
- Live
- Reels
- Explore



◆ ବିକଶିତ ଭାରତ ଲକ୍ଷ୍ୟ ପୂରଣ କରିବାକୁ ହେଲେ ଗ୍ରାମାଞ୍ଚଳର ସଶକ୍ତିକରଣ ଅତି ଆବଶ୍ୟକ । ବିଜ୍ଞାନ ଓ ପ୍ରଯୁକ୍ତିବିଦ୍ୟାର ସଫଳ ବ୍ୟବହାର ଦ୍ଵାରା କେନ୍ଦ୍ରାପଡ଼ା ଜିଲ୍ଲାର କୃଷକପୁରକୁ ସ୍ମାର୍ଟ ଗାଁ...



<https://www.facebook.com/share/v/1DXsfNQT97/>

CSIR 'Smart Village' Initiative Inaugurated in Kusunpur, Hosted by CSIR-CBRI Roorkee

- The CSIR Smart Village project has been launched in Kusunpur village, Odisha
- This initiative marks a significant step towards fostering technology-driven and sustainable rural development
- The program was hosted by the CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, under the leadership of Prof. Pradeep Kumar Ramacharia

Posted On: 17 MAY 2023 11:25AM by PIB Delhi/odisha

The CSIR SMART VILLAGE: An Initiative was inaugurated today at Kusunpur Village, Nagpur Block, Kandaspore District, Odisha, marking a significant step toward promoting technology-driven and sustainable rural development. The initiative aims to bring scientific innovations and practical solutions to rural communities through collaboration between research institutions, local administration, and implementation partners.



The event was graced nobly by Dr. (Mrs.) N. Kalabehri, Secretary, Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) and Director General, CSIR, as the chief guest. Shri Naghram K. Iyer, IAS, Collector and District Magistrate of Kandaspore, was also present, along with senior scientists and institutional representatives from participating CSIR laboratories.

The programme was hosted by CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, under the leadership of Prof. Pradeep Kumar Ramacharia, along with the Directors of the participating CSIR laboratories, including CSIR-CMAI, CSIR-IMB, CSIR-CEERI, CSIR-ICR, CSIR-CMERI, CSIR-SEHC, CSIR-NEERI, CSIR-AMRI, CSIR-CUII, CSIR-NGRI, CSIR-CSEI, CSIR-CIRI, CSIR-CITR, and CSIR-IMM. The programme was organized with the support of administrative officials of the Government of Odisha and the project implementation partner, Shri Saraju Chakraborty, CEO of the Nabatah Trust (Save the Children India), along with Mr. Madhusmita Pat, Secretary of Nature's Club.



Distinguished dignitaries present at the event included Dr. Ramraj Narayan, Director, CSIR-IMM, Bhubaneswar. The programme was also attended by scientists and technical staff from several CSIR laboratories, officials from the Government of Odisha, representatives from the project implementation partner organization, and members from corporate and industry sectors, and Kusunpur villagers.

During the inaugural event, an exhibition was organized to showcase the proposed technologies from various CSIR laboratories that are planned to be deployed in the village, along with the unveiling of the Detailed Project Report (DPR) for Kusunpur Smart Village.

The initiative showcases innovative technologies designed to strengthen rural infrastructure, livelihoods, environmental sustainability, and access to essential services. By integrating science, innovation, and community participation, the CSIR Smart Village initiative aims to create a replicable model for resilient and inclusive rural development.

(Release ID: 2241035) Visitor Counter : 492
Read this release in: Hindi, Odia , Odiya

The Himachal Times

Published from Dehradun & Shimla ● 77th year of Publication ● Founded by S.P Pandhi

VOL.LXXIV, No. RNI No 15357/67

UTTARAKHAND EDITION

DEHRADUN

TUESDAY

17 MARCH, 2026

Follow us on twitter.com/HimachalTimes47 & Instagram 

Pages 8 2.00

CSIR 'Smart Village' initiative inaugurated in Kusunpur, Odisha

Dehradun, March 16 (HTNS): The CSIR Smart Village initiative was inaugurated at Kusunpur village in Rajnagar Block of Kendrapara district, Odisha, marking a significant step toward promoting technology-driven and sustainable rural development. The project aims to bring scientific innovations and practical solutions to rural communities through collaboration among research institutions, local administration and implementation partners.

The programme was hosted by the CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, under the leadership of Prof. Pradeep Kumar Ramancharla. The initiative seeks to strengthen rural infrastructure, livelihoods, en-



vironmental sustainability and access to essential services through the use of innovative technologies.

The inaugural event was attended remotely by Dr. (Mrs.) N. Kalaiselva, Secretary, Department of Scientific and Industri-

al Research (DSIR) and Director General, CSIR, as the chief guest. Shri Raghuram R. Iyer, IAS, Collector and District Magistrate of Kendrapara, was also present along with senior scientists and representatives from participating CSIR laborato-

ries. Directors and representatives from several CSIR laboratories including CSIR-CIM-AP, CSIR-IHBT, CSIR-CEERI, CSIR-IICT, CSIR-CMERI, CSIR-SERC, CSIR-NEERI, CSIR-AMPRI,

CSIR-CLRI, CSIR-NGRI, CSIR-CSIO, CSIR-CRRI, CSIR-CFTRI and CSIR-IMMT participated in the programme.

The event was organised with the support of officials from the Government of Odisha and the project implementation partner, Bal Raksha Bharat (Save the Children India), represented by CEO Shri Santanu Chakraborty, along with Mr. Madhusmit Pati, Secretary of Nature's Club.

Among the dignitaries present was Dr. Ramanj Narayan, Director, CSIR-IMMT, Bhubaneswar. The programme was also attended by scientists and technical staff from various CSIR laboratories, government officials, representatives

from industry and corporate sectors, and villagers of Kusunpur.

An exhibition was organised during the event to showcase technologies developed by different CSIR laboratories that are proposed to be deployed in the village. The Detailed Project Report (DPR) for the Kusunpur Smart Village initiative was also unveiled.

The initiative highlights innovative solutions aimed at improving rural infrastructure, livelihoods and environmental sustainability. By integrating science, innovation and community participation, the CSIR Smart Village initiative seeks to create a replicable model for resilient and inclusive rural development across the country.



सीबीआरआई रुड़की ने धूमधाम से मनाया 80वां स्थापना दिवस

रुड़की, 10 फरवरी (अनिल): केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने मंगलवार को अपनी स्थापना के 80 वर्ष पूरे होने के अवसर पर भव्य समारोह का आयोजन किया। रवींद्रनाथ टैगोर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, छात्रों और कर्मचारियों ने संस्थान की आठ दशकों की यात्रा और राष्ट्र निर्माण में उसके योगदान को याद किया।

संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार एवं अतिथियों ने सीबीआरआई के नए प्रतीक चिह्न का अनावरण किया, जो संस्थान की आधुनिक पहचान और भविष्योन्मुखी दृष्टि को दर्शाता है। इस अवसर पर खान्ग्या: द लिविंग हाउस ऑफ लक्ष्य पुस्तक सहित वर्ष 2024 और 2025 के शोध प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया।

राष्ट्रीय

Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की का 80वाँ स्थापना दिवस पर भव्य समारोह आयोजित

Manoj kumar · 1 week ago

169 4 minutes read



Spread the love



0 Shares

रुड़की। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने आज अपना 80वाँ स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर संस्थान परिसर स्थित रवीन्द्रनाथ टैगोर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जहाँ संस्थान की आठ दशकों की यात्रा और राष्ट्रीय विकास में उसके योगदान को रेखांकित किया गया।



Share



D'load Image



रुड़की के सीबीआरआई में मंगलवार को स्थापना दिवस पर प्रदर्शनी का अवलोकन करते निदेशक और अन्य। • हिन्दुस्तान

The Himachal Times

Published from Dehradun & Shimla • 77th year of Publication • Founded by S.P Pandhi

VOLLXXIV, No. RNI No 15357/67 UTTARAKHAND EDITION DEHRADUN • WEDNESDAY • 11 FEBRUARY 2026

Follow us on X, twitter.com/HimachalTimes47 & Instagram Instagram Pages 8 2.00

CSIR-CBRI, Roorkee celebrates 80th Foundation Day

Dehradun, Feb 11 (HNS) CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, celebrated its 80th Foundation Day on February 10 with great enthusiasm at the Eshwara Nath Tagore Auditorium on the institute campus. The event highlighted the institute's eight-decade journey and its significant contributions to national development. Scientists, academic staff, officers, staff, and students participated in large numbers. Dr. N. Gopalakrishnan, former Director of CSIR-CBRI, presided over the program at the Chief Guest, while Dr. V. S. Raghavan, Chief Accounts Officer (CAO) of CSIR and one of the founders of the institute, was the Guest of Honour. In his address, Dr. Gopalakrishnan praised the commitment of CSIR and its scientists, noting the institute's remarkable work in building science, disaster mitigation, and research-based policy-making. He highlighted research on advanced modelling techniques for the high Himalayas as game-changing technologies, innovative building materials, and cost-effective equipment for CSIR housing projects. He also commended CBRI's expertise in ge-



otechnical and structural engineering, applied the strong research culture fostered under the Director's leadership, and encouraged young scientists to pursue innovation and socially relevant research. He lauded CBRI's multifaceted contributions, emphasizing its achievements in building construction, disaster management, and technology development. He underscored the institute's scientific and technological progress, projects of national importance, and social relevance. He also praised CBRI's administrative efficiency, financial transparency, and robust research culture, describing them as the foundation of the institute's strong and credible reputation. Institute Director Prof. K. Pradyumn Kumar addressed on CBRI's 80th anniversary, emphasizing major research accomplishments and continued role in national development. Highlighting the institute's contribution towards realizing the vision of a "Developed India," he outlined ongoing research and technology programs aligned with the Prime Minister's programs and schemes. Emphasizing CSIR housing projects, he also commended CBRI's expertise in ge-

otechnical and structural engineering, applied the strong research culture fostered under the Director's leadership, and encouraged young scientists to pursue innovation and socially relevant research. He lauded CBRI's multifaceted contributions, emphasizing its achievements in building construction, disaster management, and technology development. He underscored the institute's scientific and technological progress, projects of national importance, and social relevance. He also praised CBRI's administrative efficiency, financial transparency, and robust research culture, describing them as the foundation of the institute's strong and credible reputation. Institute Director Prof. K. Pradyumn Kumar addressed on CBRI's 80th anniversary, emphasizing major research accomplishments and continued role in national development. Highlighting the institute's contribution towards realizing the vision of a "Developed India," he outlined ongoing research and technology programs aligned with the Prime Minister's programs and schemes. Emphasizing CSIR housing projects, he also commended CBRI's expertise in ge-

otechnical and structural engineering, applied the strong research culture fostered under the Director's leadership, and encouraged young scientists to pursue innovation and socially relevant research. He lauded CBRI's multifaceted contributions, emphasizing its achievements in building construction, disaster management, and technology development. He underscored the institute's scientific and technological progress, projects of national importance, and social relevance. He also praised CBRI's administrative efficiency, financial transparency, and robust research culture, describing them as the foundation of the institute's strong and credible reputation. Institute Director Prof. K. Pradyumn Kumar addressed on CBRI's 80th anniversary, emphasizing major research accomplishments and continued role in national development. Highlighting the institute's contribution towards realizing the vision of a "Developed India," he outlined ongoing research and technology programs aligned with the Prime Minister's programs and schemes. Emphasizing CSIR housing projects, he also commended CBRI's expertise in ge-

otechnical and structural engineering, applied the strong research culture fostered under the Director's leadership, and encouraged young scientists to pursue innovation and socially relevant research. He lauded CBRI's multifaceted contributions, emphasizing its achievements in building construction, disaster management, and technology development. He underscored the institute's scientific and technological progress, projects of national importance, and social relevance. He also praised CBRI's administrative efficiency, financial transparency, and robust research culture, describing them as the foundation of the institute's strong and credible reputation. Institute Director Prof. K. Pradyumn Kumar addressed on CBRI's 80th anniversary, emphasizing major research accomplishments and continued role in national development. Highlighting the institute's contribution towards realizing the vision of a "Developed India," he outlined ongoing research and technology programs aligned with the Prime Minister's programs and schemes. Emphasizing CSIR housing projects, he also commended CBRI's expertise in ge-

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने मनया 80वाँ स्थापना दिवस

BY LOONRINAY@GMAIL.COM FEBRUARY 11, 2026 0 COMMENTS 51 VIEWS



रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने अपना 80 वां स्थापना दिवस मनया। रवींद्रनाथ टैगोर सम्मरण में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के छात्राधिकारी, शिक्षाविदों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। जहाँ संस्थान की आठ दशकों की यात्रा और राष्ट्रीय विकास में उसके योगदान को रेखांकित किया गया। मुख्य अतिथि बसीएसआईआर-सीबीआरआई के पूर्व निदेशक डॉ. एन. गोपालकृष्णन तथा विभिन्न अतिथि सीएसआईआर के पूर्व मुख्य लेखा अधिकारी एवं वर्तमान में केंद्रीय विश्वविद्यालय, ओडिशा के वित्त अधिकारी दुर्योधन सेठी उपस्थित थे। डॉ. एन. गोपालकृष्णन ने कहा कि संस्थान ने भवन विज्ञान, आपदा प्रतिकारण और अनुसंधान-आधारित नीति निर्माण के क्षेत्र में उत्कृष्टकारी कार्य किया है। उन्होंने उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित उन्नत मॉडलिंग तकनीकों, हीटिंग टेक्नोलॉजी, भवन सामग्री एवं सीएसआईआर-आवास से जुड़े अत्याधुनिक उपकरणों पर किए जा रहे अनुसंधान को विशेष रूप से रेखांकित किया। साथ ही, उन्होंने भू-तकनीकी (जियोटेक्निकल) एवं संरचनात्मक अभियंत्रण के क्षेत्र में सीबीआरआई की विशेषज्ञता को प्रशंसा करते हुए संस्थान के निदेशक के नेतृत्व में स्थापित सुदृढ़ बोध संस्कृति को सराहा और युवा वैज्ञानिकों को नवाचार एवं अनुसंधान की दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। दुर्योधन सेठी ने संस्थान की सतत प्रगति और निरंतर विकास यात्रा पर प्रकाश डालते संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने 30 केंद्रीय प्रिंटिंग, उन्नत निर्माण सामग्री, डिजिटल डिजाइन एवं स्वदेशी तकनीकों के क्षेत्र में सीबीआरआई की अग्रगण्य उपलब्धियों को विशेष रूप से रेखांकित किया। इस दौरान वर्ष 2024 एवं 2025 की सीबीआरआई प्रकाशनों पर आधारित पुरस्कों का विमोचन किया गया। इसके साथ ही सर्वश्रेष्ठ बोध पुरस्कार प्रदान किए गए तथा वार्षिक खेलकूद एवं अन्य गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों

Uttarakhand Usdma
12h · 0

उत्तराखण्ड में बिलिंग बायलॉज में होगा संशोधन

मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्दैन ने गठित की समिति

उत्तराखण्ड के जौन छह में आने के बाद उठाया अहम कदम

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप करेगे समिति की अध्यक्षता

देहरादून। उत्तराखण्ड राज्य की बढ़ती भूकंपीय संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने भवन निर्माण नियमों को अधिक सुरक्षित और वैज्ञानिक बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। भारतीय मानक ISO 1893-2025 के अनुसार पूरे राज्य के भूकंप जोन छह में शामिल होने के बाद अब बिलिंग बायलॉज में व्यापक संशोधन किया जाएगा। माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी पर मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्दैन द्वारा वर्तमान बिलिंग बायलॉज की समीक्षा एवं संशोधन हेतु सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार की अध्यक्षता में 14 सदस्यीय उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया है। यूएलएमएमसी के निदेशक डॉ. शान्तनु सरकार को समिति का संयोजक बनाया गया है। बता दें कि वर्तमान में उत्तराखण्ड राज्य में बिलिंग बायलॉज भारतीय मानक ब्यूरो के पुराने संस्करण ISO 1893-2002 पर आधारित हैं।

समिति में सीबीआरआई रुड़की, भारतीय मानक ब्यूरो, आईआईटी, ब्रिडकुल, लोक निर्माण विभाग, सिंचाई विभाग, नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग, विकास प्राधिकरणों तथा भू-वैज्ञानिक विशेषज्ञों सहित विभिन्न तकनीकी संस्थानों के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया है। समिति वास्तुविदों के साथ ही विभिन्न अभियंताओं से भी विचार-विमर्श करेगी। समिति का उद्देश्य राज्य के मौजूदा बायलॉज का गहन अध्ययन करते हुए उन्हें वर्तमान भूकंपीय मानकों, जलवायु परिस्थितियों और आधुनिक निर्माण तकनीकों के अनुरूप तैयार करना है।

मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्दैन ने कहा कि उत्तराखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियों और बढ़ती भूकंपीय संवेदनशीलता को देखते हुए भवन निर्माण के नियमों में परिवर्तन किया जा रहा है। राज्य सरकार भवन बायलॉज को अधिक प्रभावी, व्यावहारिक और आपदा-सुरक्षित बनाने की दिशा में ठोस कदम उठा रही है। इसी कड़ी में विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया है। समिति भवन बायलॉज को अधिक व्यवहारिक, सुरक्षित और आपदा-रोधी बनाने के लिए अपने सुझाव देगी। उन्होंने कहा कि संशोधित नियमों से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षित निर्माण को बढ़ावा मिलेगा और आपदा जोखिम में कमी आएगी।

सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास श्री विनोद कुमार सुमन ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य केवल नियमों में बदलाव करना नहीं बल्कि सुरक्षित निर्माण की संस्कृति विकसित करना है। उन्होंने बताया कि संशोधित बिलिंग बायलॉज में भूकंप-रोधी डिजाइन, भू-तकनीकी जांच, विड लोड और स्ट्रक्चरल सेफ्टी से जुड़े प्रावधानों को शामिल करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही स्थानीय पारंपरिक निर्माण तकनीकों और जलवायु अनुकूल विकास को भी बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे सतत एवं आपदा-सह्य विकास सुनिश्चित हो सके।

बता दें कि नए बिलिंग बायलॉज लागू होने से भवनों की संरचनात्मक मजबूती बढ़ेगी, आपदा के दौरान जन-जन की हानि कम होगी और सुरक्षित व टिकाऊ शहरी विकास व निर्माण को नई दिशा मिलेगी। समिति अपनी रिपोर्ट उत्तराखण्ड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण तथा आवास विभाग को सौंपेगी। समिति द्वारा तैयार की जाने वाली रिपोर्ट के आधार पर आवास विभाग द्वारा बायलॉज में आवश्यक संशोधन एवं कार्यान्वयन की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाएगी।

बढ़ते वायु प्रदूषण और तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर की चर्चा

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में 'विज्ञान में महिलाएं: विकसित भारत की उत्प्रेरित करना' विषय पर विज्ञान दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस मौके पर विज्ञानियों ने कहा कि जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा है, जो नई खोजों व नवाचारों का मार्ग प्रशस्त करती है। इस दौरान हिमालयी परिस्थितिकी तंत्र पर बढ़ते वायु प्रदूषण, ब्लैक कार्बन व तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर भी चर्चा की गई।

सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आर्यपट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एआरआरएस) नैनीताल के उपाध्यक्ष एवं विज्ञानी डा. नरेश सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने 'हिमालय में वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण

- सीबीआरआई रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का किया गया आयोजन
- विज्ञानी बोले, जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा, जो नई खोजों का मार्ग करती है प्रशस्त

ग्लेशियरों का पिघलना, जल स्रोतों में कमी व प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता में वृद्धि गंभीर चिंता का विषय है। सीबीआरआई रुड़की के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी की सराहना करते हुए विशेष रूप से संस्थान की महिला विज्ञानियों एवं कर्मियों के योगदान को उल्लेखनीय बताया। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. नीरज जैन ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के महत्व व इसके उद्देश्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस मौके पर सौमि. कर्मकर आदि उपस्थित रहे।



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह में उपस्थित अतिथि और विज्ञानी • समग्र संस्थान

राज्य स्तरीय मास्टर्स बैडमिंटन प्रतियोगिता 27 से हल्द्वानी। नैनीताल जिला बैडमिंटन एसोसिएशन 24वीं योनेक्स सनराइज स्टेट मास्टर्स (वेटरेंस) बैडमिंटन चैंपियनशिप आयोजित करेगा। मिनी स्टेडियम में 27 फरवरी से एक मार्च तक होने वाली प्रतियोगिता 35 से अधिक आयु वर्ग के खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। एसोसिएशन के सचिव नरेंद्र भुटियानी ने बताया कि प्रतियोगिता में 13 जिलों के 500 खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। संवाद

CSIR – CBRI, रुड़की ने मनाया 80वाँ स्थापना दिवस

भारत के वैज्ञानिक आन्दोलन में अग्रणी भूमिका और वैश्विक स्तर पर विश्व स्तर पर अग्रणी रुड़की वैज्ञानिक आन्दोलन में अग्रणी भूमिका और वैश्विक स्तर पर विश्व स्तर पर अग्रणी



रुड़की के वैज्ञानिक आन्दोलन में अग्रणी भूमिका और वैश्विक स्तर पर विश्व स्तर पर अग्रणी रुड़की वैज्ञानिक आन्दोलन में अग्रणी भूमिका और वैश्विक स्तर पर विश्व स्तर पर अग्रणी

भारत को अपनी उपलब्धियों को बचाए रखने हेतु एआई के उपयोग की जरूरत

भारत को अपनी उपलब्धियों को बचाए रखने हेतु एआई के उपयोग की जरूरत है। यह लेख एआई के उपयोग के महत्व और चुनौतियों पर चर्चा करता है।

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की ने मनया 80वाँ स्थापना दिवस

BY LOONINAV@GMAIL.COM FEBRUARY 11, 2026 0 COMMENTS 5 VIEWS



रुड़की। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने अपना 80वाँ स्थापना दिवस मनाया।

आधुनिक तकनीक से हल होगी पर्यावरण चुनौती



इंस्टीट्यूट में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद वक्ता। स्रोत : संस्थान

वैद्यारदु। इन्फ्लिक्स (पीजे) इंस्टीट्यूट ऑफ बायोमैडिकल एंड नेचुरल साइंसेज में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

राज्य स्तरीय मास्टर्स बैडमिंटन प्रतियोगिता 27 से हल्द्वानी। नैनीताल जिला बैडमिंटन एसोसिएशन 24वीं योनेक्स सनराइज स्टेट मास्टर्स (वेटरंस) बैडमिंटन चैंपियनशिप आयोजित करेगा।

वैद्यारदु। इन्फ्लिक्स (पीजे) इंस्टीट्यूट ऑफ बायोमैडिकल एंड नेचुरल साइंसेज में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सीबीआरआई रुड़की में कार्यशाला आज

रुड़की, 9 फरवरी (अनिल) : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की 80वें स्थापना दिवस समारोह को लेकर मंगलवार को क्रायोस्फेरिक आपदाओं में प्रगति तैयारी एवं अनुकूलन क्षमता के लिए सबक शीर्षक से तकनीकी कार्यशाला का आयोजन कर रहा है। कार्यक्रम रुड़की स्थित संस्थान परिसर के रवींद्रनाथ टैगोर सभागार में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. डीपी कानूंगो के स्वागत भाषण से करेंगे। प्रो. प्रदीप कुमार रामनचारला निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई और मुख्य अतिथि डॉ. ओपी मिश्रा निदेशक, एनसीएस, एमओईएस के संबोधन करेंगे। तकनीकी सत्र में चमोली (तपोवन-विष्णुगढ़) में हुई आपदा का विश्लेषण किया जाएगा।



Uttarakhand Usdma

12h · 🌐

उत्तराखण्ड में बिलिंग बायलॉज में होगा संशोधन

मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन ने गठित की समिति

उत्तराखण्ड के जोन छह में आने के बाद उठाया अहम कदम

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप करेगे समिति की अध्यक्षता

देहरादून। उत्तराखण्ड राज्य की बढ़ती भूकंपीय संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने भवन निर्माण नियमों को अधिक सुरक्षित और वैज्ञानिक बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। भारतीय मानक ISO 1893-2025 के अनुसार पूरे राज्य के भूकंप जोन छह में शामिल होने के बाद अब बिलिंग बायलॉज में व्यापक संशोधन किया जाएगा। माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन द्वारा वर्तमान बिलिंग बायलॉज की समीक्षा एवं संशोधन हेतु सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार की अध्यक्षता में 14 सदस्यीय उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया है। यूएलएमएमसी के निदेशक डॉ. शांतनु सरकार को समिति का संयोजक बनाया गया है। बता दें कि वर्तमान में उत्तराखण्ड राज्य में बिलिंग बायलॉज भारतीय मानक ब्यूरो के पुराने संस्करण ISO 1893-2002 पर आधारित है।

समिति में सीबीआरआई रुड़की, भारतीय मानक ब्यूरो, आईआईटी, ब्रिडकुल, लोक निर्माण विभाग, सिंचाई विभाग, नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग, विकास प्राधिकरणों तथा भू-वैज्ञानिक विशेषज्ञों सहित विभिन्न तकनीकी संस्थानों के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया है। समिति वास्तुविदों के साथ ही विभिन्न अभियंताओं से भी विचार-विमर्श करेगी। समिति का उद्देश्य राज्य के मौजूदा बायलॉज का गहन अध्ययन करते हुए उन्हें वर्तमान भूकंपीय मानकों, जलवायु परिस्थितियों और आधुनिक निर्माण तकनीकों के अनुरूप तैयार करना है।

मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन ने कहा कि उत्तराखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियों और बढ़ती भूकंपीय संवेदनशीलता को देखते हुए भवन निर्माण के नियमों में परिवर्तन किया जा रहा है। राज्य सरकार भवन बायलॉज को अधिक प्रभावी, व्यावहारिक और आपदा-सुरक्षित बनाने की दिशा में ठोस कदम उठा रही है। इसी कड़ी में विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया है। समिति भवन बायलॉज को अधिक व्यवहारिक, सुरक्षित और आपदा-रोधी बनाने के लिए अपने सुझाव देगी। उन्होंने कहा कि संशोधित नियमों से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षित निर्माण को बढ़ावा मिलेगा और आपदा जोखिम में कमी आएगी।

सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास श्री विनोद कुमार सुमन ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य केवल नियमों में बदलाव करना नहीं बल्कि सुरक्षित निर्माण की संस्कृति विकसित करना है। उन्होंने बताया कि संशोधित बिलिंग बायलॉज में भूकंप-रोधी डिजाइन, भू-तकनीकी जांच, विंड लोड और स्ट्रक्चरल सेफ्टी से जुड़े प्रावधानों को शामिल करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। साथ ही स्थानीय पारंपरिक निर्माण तकनीकों और जलवायु अनुकूल विकास को भी बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे सतत एवं आपदा-सक्षम विकास सुनिश्चित हो सके।

बता दें कि नए बिलिंग बायलॉज लागू होने से भवनों की संरचनात्मक मजबूती बढ़ेगी, आपदा के दौरान जन-धन की हानि कम होगी और सुरक्षित व टिकाऊ शहरी विकास व निर्माण को नई दिशा मिलेगी। समिति अपनी रिपोर्ट उत्तराखण्ड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण तथा आवास विभाग को सौंपेगी। समिति द्वारा तैयार की जाने वाली रिपोर्ट के आधार पर आवास विभाग द्वारा बायलॉज में आवश्यक संशोधन एवं कार्यान्वयन की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जाएगी।

बढ़ते वायु प्रदूषण और तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर की चर्चा

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में 'विज्ञान में महिलाएं: विकसित भारत को उत्प्रेरित करना' विषय पर विज्ञान दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस मौके पर विज्ञानियों ने कहा कि जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा है, जो नई खोजों व नवाचारों का मार्ग प्रशस्त करती है। इस दौरान हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र पर बढ़ते वायु प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग व तापमान वृद्धि के दुष्प्रभावों पर भी चर्चा की गई।

सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एआरआइएस) नैनीताल के उपाध्यक्ष एवं विज्ञानी डा. नरेंद्र सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने 'हिमालय में वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण

- सीबीआरआइ रुड़की में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का किया गया आयोजन
- विज्ञानी बोले, जिज्ञासा ही विज्ञान की मूल प्रेरणा, जो नई खोजों का मार्ग करती है प्रशस्त

ग्लेशियरों का पिघलना, जल स्रोतों में कमी व प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता में वृद्धि गंभीर चिंता का विषय है। सीबीआरआइ रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी की सराहना करते हुए विशेष रूप से संस्थान की महिला विज्ञानियों एवं कर्मियों के योगदान को उल्लेखनीय बताया। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. नीरज जैन ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के महत्व व इसके उद्देश्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस मौके पर दीप्ति कर्माकर आदि उपस्थित रहे।



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह में उपस्थित अतिथि और विज्ञानी - समार-संस्थान



भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया

● जनवाणी संवाददाता, रुड़की

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) ने हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एचपीएसडीएमए) के सहयोग से भूकंप रेट्रोफिटिंग तकनीकियाँ एवं विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की तैयारी पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। भूकंपरोधी संरचनाओं के लिए क्षमता विकास के उद्देश्य से यह कार्यक्रम सीएसआईआर कौशल विकास पहल के तहत 27 से 31 जनवरी 2026 तक आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य इंजीनियरों, विशेषज्ञों को भूकंपरोधी मरम्मत एवं आपदा जोखिम रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के क्षेत्र में उन्नत तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक दक्षताओं से सक्षम बनाना है। प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने सीएसआईआर कौशल विकास पहल के



तहत कार्यक्रम के उद्देश्यों और लक्ष्यों की संक्षिप्त में चर्चा की, जिसमें क्षमता निर्माण, सतत विकास और रसात्मनिर्भर भारत की राष्ट्रीय परिकल्पना के साथ तालमेल पर जोर दिया।

कार्यक्रम समन्वयक, इ. आशीष पिप्ल ने सीएसआईआर-सीबीआरआई का संक्षिप्त परिचय दिया, जिसमें उन्नत अनुसंधान क्षमताओं, तकनीकी नवाचारों और आपदा-प्रतिरोधी अवसंरचना के

विकास के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने भूकंपीय रूप से सवेदनशील क्षेत्रों में जानमाल की हानि और आर्थिक व्यवधान को कम करने में वैज्ञानिक रेट्रोफिटिंग तकनीकों और भूकंप सुरक्षा उपायों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। उन्होंने

पर्यावरणीय व सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया

साक्ष्य-आधारित इंजीनियरिंग हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित किया और प्रतिभागियों से आपदा-प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए तकनीकी ज्ञान को व्यावहारिक समाधानों में बदलने का आग्रह किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. अजय चौरसिया ने हिमाचल प्रदेश में भूकंप संबंधी जोखिमों के प्रति क्षमता को सुदृढ़ करने हेतु सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे निरंतर प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से आपदा तैयारी रिपोर्ट (डीपीआर) के निर्माण तथा प्रमाणित रेट्रोफिटिंग

रणनीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन की भूमिका को रेखांकित किया। डॉ. डी. पी. कानूनगो के व्याख्यान में भूकंप को क्रियाविधियों, भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत विशेषज्ञ व्याख्यान, व्यावहारिक तकनीकी सत्र तथा क्षेत्र भ्रमण आयोजित किए जाएंगे, जिनके माध्यम से प्रतिभागियों को भूकंपरोधी मरम्मत की आधुनिक तकनीकों तथा भूकंप जोखिम न्यूनीकरण से जुड़े वास्तविक अनुप्रयोगों की व्यापक जानकारी प्राप्त उद्घाटन सत्र के दौरान संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. पी. सी. थपलियाल, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. तविश आलम, डॉ. नवीन निशांत, रजनीश, अजय, राशि, संस्कृति, रजत, अनुज इत्यादि उपस्थित रहे।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा आयोजित की गई प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0 में सीबीआरआई की उन्नत निर्माण तकनीकों की प्रस्तुति

○ इस अवसर पर डीएसआईआर की सचिव एवं सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी भी उपस्थित रहीं ○ सीएसआईआर-सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ए.आई. प्रौद्योगिकियां, अवसर और चुनौतियां विषय पर व्याख्यान दिया

प्रधान सचिव सचिव
आई टिप्पणी। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अन्तर्गत संस्थान, कुरुकी ने 28-30 जनवरी 2026 को पृथ्वी भवन, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0, जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक आयोग पर्यटन एवं पर्यटन (यूएन-टूरिज्म) के एशियाई एवं प्रशांत प्रौद्योगिकी सहयोग केन्द्र (एपीसीसीटी) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है, इसमें भाग लिया। सम्मेलन के दौरान आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि, पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने किया।

इस अवसर पर डीएसआईआर की सचिव एवं सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी भी उपस्थित रहीं। उद्घाटन के पश्चात डॉ. जितेंद्र सिंह एवं डॉ. एन. कलैसेल्वी दोनों ने सीबीआरआई के प्रदर्शनी स्टॉल का दौरा किया, जहाँ सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा भवन विज्ञान एवं निर्माण के क्षेत्र में विकसित कच्चे, टिकाऊ और प्रौद्योगिकी-आधारित समाधानों की प्रस्तुति किया गया। उन्होंने स्टॉल पर प्रदर्शित पोस्टरपार्स-सी के अंतर्गत विकसित उन्नत-रिडिग्ड इमारती मकान और विंग-लैंग इंट बहुत तकनीक जैसे महानों का अवलोकन किया और संस्थान के वैज्ञानिकों से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने जलवायु-प्रतिरोधी और टिकाऊ अवसरचना से जुड़ी सीबीआरआई की तकनीकों और सोध



कार्यों में रुचि दिखाई। उद्घाटन सब के दौरान डॉ. एन. कलैसेल्वी ने उपस्थित सभी लोगों को संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन में जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं से निपटने और अवसरों के प्रति मजबूती बढ़ाने में उन्नत तकनीकों और क्षुभ्रिय बुद्धिमत्ता की भूमिका पर बात की। उन्होंने इस दिशा में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के योगदान को अग्रिम बताया। साथ ही, उन्होंने अनुसंधान कार्यों को उपयोगी और व्यावहारिक समाधानों में बदलने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि सतत विकास को बढ़ावा मिल सके।

तकनीकी कार्यक्रम के अंतर्गत सीएसआईआर-सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने -जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ए.आई. प्रौद्योगिकियां- अवसर और चुनौतियां-विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए भवनों और अवसरचना को योजना बनाने, उनकी जांच करने और उनके प्रबंधन में क्षुभ्रिय बुद्धिमत्ता का उपयोग कैसे किया जा सकता है। साथ ही, उन्होंने इस क्षेत्र में सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों और उनके वास्तविक उपयोग के उदाहरण भी प्रस्तुत किए।

संस्थान की भागीदारी ने विश्वस्तरी आकार, जलवायु-सुरक्षित बुनियादी ढांचे, सतत इमारती विकास और अत्याधुनिक निर्माण अनुसंधान को बढ़ावा देने के प्रति हमारी अटूट प्रतिबद्धता को उजागर किया, जिससे राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों और वैश्विक तकनीकी प्रगति के साथ इसका काल्पनिक और मजबूत हुआ।

Share Copy url Save Font Size D'load Image Image Text Listen



रुड़की के सीबीआरआई के नवाचार को नई दिल्ली में आयोजित प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन में सराहना मिली। • हिन्दुस्तान

भवनों की बेहतर योजना बना सकेंगे

रुड़की। नई दिल्ली के पृथ्वी भवन में आयोजित तीन दिवसीय प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन 2.0 में केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के नवाचार आकर्षण का केंद्र रहे। संस्थान ने भविष्य की निर्माण चुनौतियों, विशेषकर जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अपनी अत्याधुनिक और टिकाऊ तकनीकों का प्रदर्शन किया।

किया गया। एमि सोय दी जाए। सुसंगत रूप में उसके मुद्दों में शामिल भवक नए। सिंगु इन्फो की संरचना करने का विचार के कार्यकारी।

टेक्नोलॉजी सीबीआरआई के स्टॉल पर जलवायु प्रतिरोधी और टिकाऊ तकनीकों का प्रदर्शन

जलवायु संकट से मुकाबले में विज्ञान की ताकत

सीबीआरआई ने प्रदर्शित किया जलवायु अनुकूल निर्माण नवाचार

राजको, 28 जनवरी (प्रतिभा) : सीबीआरआई-नैरोय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने पृथ्वी भवन, पृथ्वी विकास संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन 2.0 के दौरान इटली में बना संरचनात्मक-प्रतिरोधी और टिकाऊ निर्माण तकनीकों का प्रदर्शन किया। यह सम्मेलन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (सीबीआरआई) तथा संयुक्त राष्ट्र की महिला एवं प्रगत प्रौद्योगिकी दस्तावेज केन्द्र द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विकास मंत्रालय (उत्तर प्रदेश) की, मिनिस्ट्रि ने किया। उन्होंने सीबीआरआई के स्टॉल का निरीक्षण कर वैज्ञानिकों से संवाद किया और जलवायु परिवर्तन से निपटने में संस्थान की तकनीकों और सेवा प्रदायकों की सराहना की। उपस्थित घर में टिकाऊ और कीमती एवं शीतल और गर्म की परामर्शदाता डॉ. एन. करीमखाने ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और अणुशक्ति से निपटने में उन्नत तकनीकों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने अनुसंधान को व्यवहारिक और उपयोगी तकनीकों में बदलने का महत्त्व बताया। सीबीआरआई ने भवन विकास एवं निर्माण क्षेत्र में नए नवाचार इस्तेमाल किए, जिसमें वैक्यूम-इंसुलेशन के तहत निर्मित 3डी-प्रिंटेड कॉम्पोजिट, विभाजक निर्माण तकनीक, स्मार्ट निर्माण प्रणाली, ऑनलाइन निर्माण नियंत्रण, ऑनलाइन स्टोर का संरचनात्मक मॉडल तथा डिजाइन-कॉन्ट्रोल तकनीक शामिल रही।

सम्मेलन के बाद से मुल्ल वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार मिश्र ने बताया कि रुड़की की संस्था, जल और प्रदूषण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कमी देना संभव किया जा सकता है।

स्टॉल का निरीक्षण करने उपस्थित।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा आयोजित की गई प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0 में सीबीआरआई की उन्नत निर्माण तकनीकों की प्रस्तुति

नागरिक व्यू

रुड़की। सीएसआईआर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की ने पृथ्वी भवन, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0, जो भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक अध्येता परिषद एचएचडी 4 वैज्ञानिक (यूएन-इएससीएपी) के एचआईए एवं प्रशांत प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप केंद्र (एपीसीटीई) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है, उसमें भाग लिया। सम्मेलन के दौरान आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि, पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने किया। इस अवसर पर डीएसआईआर की सचिव एवं



सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलेमेल्वी भी उपस्थित रहें। उद्घाटन के पश्चात डॉ. जितेंद्र सिंह एवं डॉ. एन. कलेमेल्वी दोनों ने सीबीआरआई के प्रदर्शनी स्टॉल का दौरा किया, जहाँ सीएसआईआर/एचआईआर/डीएसआईआर

भवन विज्ञान एवं निर्माण के क्षेत्र में विकसित नवीन, टिकाऊ और प्रौद्योगिकी-आधारित समाधानों को प्रस्तुत किया गया। उन्होंने स्टॉल पर प्रदर्शित पीएमएवाई-जी के अंतर्गत विकसित 3डी-प्रिंटेड ग्रामीण मकान और जिम-जेन ईट

भूटा तकनीक जैसे मॉडलों का अवलोकन किया और संस्थान के वैज्ञानिकों से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने जलवायु-प्रतिक्रम और टिकाऊ अवसरचना से जुड़ी सीबीआरआई की तकनीकों और शोध कार्यों में रुचि दिखाई।

उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. एन. कलेमेल्वी ने उपस्थित सभी लोगों को संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन में जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं से निपटने और आपदाओं के प्रति मजबूती बढ़ाने में उन्नत तकनीकों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका पर बात की। उन्होंने इस दिशा में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के योगदान को अहम बताया। साथ ही, उन्होंने अनुसंधान कार्यों को उपयोगी और व्यवहारिक समाधानों में बदलने की आवश्यकता पर जोर दिया, ताकि सतत विकास को बढ़ावा मिल सके। तकनीकी कार्यक्रम के अंतर्गत सीएसआईआर-सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने "जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ए.आई. प्रौद्योगिकियां: अवसर और

चुनौतियां" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए भवनों और अवसंरचना को योजना बनाने, उनकी जांच करने और उनके प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कैसे किया जा सकता है। साथ ही, उन्होंने इस क्षेत्र में सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों और उनके वास्तविक उपयोग के उदाहरण भी प्रस्तुत किए। संस्थान की भागीदारी ने किकावती आवास, जलवायु- लचीले बुनियादी ढांचे, सतत ग्रामीण विकास और अत्याधुनिक निर्माण अनुसंधान को बढ़ावा देने के प्रति इसकी अटूट प्रतिबद्धता को उजागर किया, जिससे राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों और वैश्विक तकनीकी प्रगति के साथ इसका तालमेल और मजबूत हुआ।

टेक्नोलॉजी

सीबीआरआई के स्टॉल पर जलवायु प्रतिरोधी और टिकाऊ तकनीकों का प्रदर्शन

जलवायु संकट से मुकाबले में विज्ञान की ताकत

सीबीआरआई ने प्रदर्शित किया जलवायु अनुकूल निर्माण नवाचार

रुड़की, 28 जनवरी (अनिल): सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने पृथ्वी भवन, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, नई दिल्ली में आयोजित प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2.0 के दौरान प्रदर्शनी में भाग लेकर जलवायु-प्रतिरोधी और टिकाऊ निर्माण तकनीकों का प्रभावी प्रदर्शन किया। यह सम्मेलन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा संयुक्त राष्ट्र की एचआईए एवं प्रशांत प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप केंद्र द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।



स्टॉल का निरीक्षण करते अतिथि।

प्रदर्शनी का उद्घाटन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (उपत्येक प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह ने किया। उन्होंने सीबीआरआई के स्टॉल का निरीक्षण कर वैज्ञानिकों से संवाद किया

और जलवायु परिवर्तन से निपटने में संस्थान की तकनीकों और शोध प्रयासों की सराहना की। उद्घाटन सत्र में सीएसआईआर की सचिव एवं सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन.

कलेमेल्वी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और आपदाओं से निपटने में उन्नत तकनीकों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने अनुसंधान को व्यवहारिक और उपयोगी समाधानों में बदलने पर बल दिया। सीबीआरआई ने भवन विज्ञान एवं निर्माण क्षेत्र में जुड़े कई नवाचार प्रदर्शित किए, जिनमें पीएमएवाई-जी के तहत विकसित 3डी-प्रिंटेड ग्रामीण आवास, किकावती निर्माण तकनीक, स्मार्ट विलेज समाधान, रेजिलिएंट विलिडिंग सिस्टम, श्वेरा मंदिर का संरचनात्मक मॉडल तथा जिम-जेन ईट बहुत तकनीक शर्भित रही।

तकनीकी सत्र में मुख्य वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार सिंह ने बताया कि भवनों की योजना, जांच और प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

Technology and Innovation Conference 2.0: CBRI Presents Advanced Construction Technologies

- Dr. N. Kalaiselvi, Secretary of DSIR and Director General of CSIR also present on this occasion
- Dr. Sanjeev Kumar Singh, Chief Scientist at CSIR-CBRI, delivered a lecture on the topic "AI Technologies for Addressing Climate Change: Opportunities and Challenges."
- CBRI presents advanced construction technologies at the Technology and Innovation Conference 2.0 organized by the Ministry of Earth Sciences

प्रविष्टि तिथि: 28 JAN 2026 10:51PM by PIB Dehradun

Presentation of CBRI's advanced manufacturing technologies at the Technology and Innovation Conclave 2.0 organised by the Ministry of Earth Sciences in New Delhi. CSIR–Central Building Research Institute, Roorkee, participated in the Technology and Innovation Conclave 2.0, held from January 28-30, 2026, at Prithvi Bhawan, Ministry of Earth Sciences, Government of India, New Delhi. The conference was jointly organized by the Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) of the Ministry of Science and Technology, Government of India, and the Asian and Pacific Centre for Transfer of Technology (APCTT) of the United Nations Economic and Social Commission for Asia and the Pacific (UN-ESCAP).



The conference was jointly organized by the Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) of the Ministry of Science and Technology, Government of India, and the Asian and Pacific Centre for Transfer of Technology (APCTT) of the United Nations Economic and Social Commission for Asia and the Pacific (UN-ESCAP). The exhibition was inaugurated by the Chief Guest, Dr. Jitendra Singh, Minister of State (Independent Charge) for Science and Technology and Earth Sciences, Government of India. Dr. N. Kalaiselvi, Secretary, DSIR and Director General, CSIR, was also present on the occasion.

Following the inauguration, both Dr. Jitendra Singh and Dr. N. Kalaiselvi visited the CSIR-CBRI exhibition stall, where innovative, sustainable, and technology-based solutions developed by CSIR-CBRI in the field of building science and construction were showcased. They viewed the models displayed at the stall, including the 3D-printed rural house developed under PMAY-G and the zig-zag brick kiln technology, and interacted with the scientists from the institute. During their visit, they expressed keen interest in CBRI's technologies and research work related to climate-resilient and sustainable infrastructure. During the inaugural session, Dr. N. Kalaiselvi addressed the attendees. In her address, she spoke about the role of advanced technologies and artificial intelligence in tackling climate change-related challenges and enhancing resilience to disasters.

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2219859®=3&lang=2>

निराक्षक राघवन्द्र बालायान तथा अन्य फुलसकमा शामिल रहे।

स्टाफ क्लब ने जीता फ्रेंडली क्रिकेट मैच

रुड़की, 27 जनवरी (अनिल): गणतंत्र दिवस के अवसर पर सीबीआरआई क्रिकेट ग्राउंड पर सीबीआरआई पेंशनर्स वेलफेयर टीम और सीबीआरआई स्टाफ क्लब टीम के बीच एक फ्रेंडली क्रिकेट मैच खेला गया। टॉस जीतकर स्टाफ क्लब के कप्तान डीपी कानूनगो ने पहले बल्लेबाजी का निर्णय लिया। 10 ओवर के मैच में स्टाफ क्लब की टीम ने 101 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करते हुए पेंशनर्स वेलफेयर टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन 53 रन पर पूरी टीम आउट हो गई। निदेशक ने अंपायर की भूमिका निभाई। मैच के बाद संयुक्त फोटो लिया गया। सीबीआरआई पेंशनर्स क्रिकेट टीम में डीके गौतम, एके राजदान, डॉ. अचल मित्तल, आरडी सिंह, एसके नेगी, सुरेश गिरी, जसविंदर, डॉ. पीके यादव, नरेश यादव, अरविंद शर्मा, सुशील कुमार, मेहर सिंह उपस्थित रहे।

यू
(
के
शी
के
प्र
प्र
शा
ग
बै



रूठकी-हरिद्वार समाचार

2d - 13

भूकंप की क्रियाविधियों, भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में "भूकंप रेट्रोफिटिंग तकनीकियाँ एवं विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की तैयारी" पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

रूठकी। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) ने हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एचपीएसडीएमए) के सहयोग से "भूकंप रेट्रोफिटिंग तकनीकियाँ एवं विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की तैयारी" पर पांच दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। भूकंपरोधी संरचनाओं के लिए क्षमता विकास के उद्देश्य से यह कार्यक्रम सीएसआईआर कौशल विकास पहल के तहत 27 से 31 जनवरी 2026 तक आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य इंजीनियरों, विशेषज्ञों को भूकंपरोधी मरम्मत एवं आपदा जोखिम रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के क्षेत्र में उन्नत तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक दक्षताओं से सक्षम बनाना है। प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने सीएसआईआर कौशल विकास पहल के तहत कार्यक्रम के उद्देश्यों और लक्ष्यों की संक्षिप्त में चर्चा की, जिसमें क्षमता निर्माण, सतत विकास और "आत्मनिर्भर भारत" की राष्ट्रीय परिकल्पना के साथ तालमेल पर जोर दिया। कार्यक्रम समन्वयक, इ. आशीष पिप्ल ने सीएसआईआर-सीबीआरआई का संक्षिप्त परिचय दिया, जिसमें उन्नत अनुसंधान क्षमताओं, तकनीकी नवाचारों और आपदा-प्रतिरोधी अवसंरचना के विकास के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने भूकंपीय रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में जानमाल की हानि और आर्थिक व्यवधान को कम करने में वैज्ञानिक रेट्रोफिटिंग तकनीकों और भूकंप सुरक्षा उपायों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। उन्होंने साक्ष्य-आधारित इंजीनियरिंग हस्तक्षेपों की आवश्यकता को रेखांकित किया और प्रतिभागियों से आपदा-प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए तकनीकी ज्ञान को व्यावहारिक समाधानों में बदलने का आग्रह किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. अजय चौरसिया ने हिमाचल प्रदेश में भूकंप संबंधी जोखिमों के प्रति क्षमता को सुदृढ़ करने हेतु सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे निरंतर प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से आपदा तैयारी रिपोर्ट (डीपीआर) के निर्माण तथा प्रमाणित रेट्रोफिटिंग रणनीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन की भूमिका को रेखांकित किया। डॉ. डी. पी. कानूनगो के व्याख्यान में भूकंप की क्रियाविधियों, भूकंपीय खतरों और आपदा न्यूनीकरण रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों को कम करते हुए जोखिम को कम करने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित दृष्टिकोणों पर बल दिया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत विशेषज्ञ व्याख्यान, व्यावहारिक तकनीकी सत्र तथा क्षेत्र भ्रमण आयोजित किए जाएंगे, जिनके माध्यम से प्रतिभागियों को भूकंपरोधी मरम्मत की आधुनिक तकनीकों तथा भूकंप जोखिम न्यूनीकरण से जुड़े वास्तविक अनुप्रयोगों की व्यापक जानकारी प्राप्त उद्घाटन सत्र के दौरान संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. पी. सी. धपलियाल, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. तबिश आलम, डॉ. नवीन निशांत, रजनीश, अजय, राशि, संस्कृति, रजत, अनुज इत्यादि उपस्थित थे।



उपास्थित रहे।

पड्या के साथ बढक का पूरा रूप से सुरक्षित

सीबीआरआई का भ्रमण कर जानी भवन निर्माण की तकनीक

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल धनौरी के कक्षा 6 से 9 तक के छात्र-छात्राओं ने सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान से जोड़ना और उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाना रहा। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने बिल्डिंग मैटेरियल्स, एनर्जी एफिशिएंट बिल्डिंग्स, फायर सेफ्टी एवं रूरल हाउसिंग से संबंधित विभिन्न प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया। सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने छात्रों को भवन निर्माण में प्रयोग होने वाली

आधुनिक एवं पर्यावरण अनुकूल तकनीकों, ऊर्जा संरक्षण के उपायों और सुरक्षित निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी।

विद्यालय प्रबंधक डॉ. आदित्य सैनी ने कहा कि भ्रमण से छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकसित होती है और वे भविष्य में नवाचार को ओर प्रेरित होते हैं। प्रधानाचार्या रीमा जैन ने बताया कि विद्यार्थियों को आधुनिक भवन तकनीक, ऊर्जा दक्षता और सुरक्षा मानकों की प्रत्यक्ष जानकारी मिली है।

छात्रों ने पूरे भ्रमण के दौरान उत्साहपूर्वक भाग लिया और वैज्ञानिकों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत किया। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।



भ्रमण के दौरान छात्र, शिक्षक एवं संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिक। स्रोत : स्वयं

सीबीआरआई का भ्रमण कर जानी भवन निर्माण की तकनीक

संवाद न्यूज एजेंसी

रुड़की। हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल धनौरी के कक्षा 6 से 9 तक के छात्र-छात्राओं ने सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान से जोड़ना और उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाना रहा। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने बिल्डिंग मैटेरियल्स, एनर्जी एफिशिएंट बिल्डिंग्स, फायर सेफ्टी एवं रूरल हाउसिंग से संबंधित विभिन्न प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया। सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने छात्रों को भवन निर्माण में प्रयोग होने वाली

आधुनिक एवं पर्यावरण अनुकूल तकनीकों, ऊर्जा संरक्षण के उपायों और सुरक्षित निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी।

विद्यालय प्रबंधक डॉ. आदित्य सैनी ने कहा कि भ्रमण से छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकसित होती है और वे भविष्य में नवाचार को ओर प्रेरित होते हैं। प्रधानाचार्या रीमा जैन ने बताया कि विद्यार्थियों को आधुनिक भवन तकनीक, ऊर्जा दक्षता और सुरक्षा मानकों की प्रत्यक्ष जानकारी मिली है।

छात्रों ने पूरे भ्रमण के दौरान उत्साहपूर्वक भाग लिया और वैज्ञानिकों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत किया। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।



भ्रमण के दौरान छात्र, शिक्षक एवं संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिक। स्रोत : स्वयं



सीबीआरआई रुड़की में हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल धनौरी के छात्रों ने किया शैक्षणिक भ्रमण

हरिद्वार। हरिओम सरस्वती पब्लिक स्कूल, धनौरी के कक्षा 6 से 9 तक के छात्र-छात्राओं ने सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान से जोड़ना और उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण को व्यापक बनाना रहा।

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने बिल्डिंग मैटेरियल्स, एनर्जी एफिशिएंट बिल्डिंग्स, फायर सेफ्टी तथा रूरल हाउसिंग से संबंधित विभिन्न प्रयोगशालाओं का अवलोकन किया। सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने छात्रों को भवन निर्माण में प्रयोग होने वाली आधुनिक एवं पर्यावरण अनुकूल तकनीकों, ऊर्जा संरक्षण के उपायों तथा सुरक्षित निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी दी।

विद्यालय के प्रबंधक डॉ. आदित्य सैनी ने कहा कि सीबीआरआई जैसे प्रतिष्ठित संस्थान का भ्रमण विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है। इससे छात्रों में वैज्ञानिक सोच विकसित होती है और वे भविष्य में नवाचार की ओर प्रेरित होते हैं। विद्यालय का उद्देश्य छात्रों को केवल किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि व्यवहारिक अनुभव भी प्रदान करना है।

विद्यालय की प्रधानाचार्या रीमा जैन ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि इस शैक्षणिक भ्रमण से विद्यार्थियों को आधुनिक भवन तकनीक, ऊर्जा दक्षता और सुरक्षा मानकों की प्रत्यक्ष जानकारी मिली है। ऐसे अनुभव छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं और उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं।

छात्रों ने पूरे भ्रमण के दौरान उत्साहपूर्वक भाग लिया और वैज्ञानिकों से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत किया। यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

सवाई माधोपुर में प्रदर्शनी में सीएसआईआर-सीबीआरआई ने नवाचारों और विशेषज्ञता का किया प्रदर्शन

गोल्डन टाइम्स सड़की (आरिफ निवाजी) सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) सड़की ने 15-16 जनवरी 2026 को सवाई माधोपुर में प्रदर्शनी का आयोजन किया। कार्यशाला एवं प्रदर्शनी के माध्यम से ग्रामीण विकास विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रीमती श्रेया गुप्ता, आईएस और सवाई माधोपुर के जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट काना राम सिरवी, आईएस ने किया। गणमान्य व्यक्तियों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई के स्टॉल का दौरा किया और ग्रामीण आवास विकास एवं अवसरचना नवाचार में संस्थान के प्रभावशाली योगदान की सराहना की। प्रदर्शनी के दौरान, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने अपने उन्नत ग्रामीण आवास और निर्माण प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने के लिए एक सूचनात्मक और संवादात्मक स्टॉल लगाया। प्रमुख प्रदर्शनों में

पीएमवाई-जी मॉडल घर, 3डी भवन निर्माण प्रणालियाँ, मिट्टी की ईंट बनाने



की मशीनें, ईंट भट्टे की तकनीकें, राम मंदिर मॉडल और अन्य नवोन्मेषी, कम लागत वाले और पर्यावरण के अनुकूल भवन निर्माण समाधान शामिल थे। स्टॉल ने वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों को आकर्षित किया, जिन्होंने ग्रामीण आवास और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रौद्योगिकियों की व्यावहारिक उपयोगिता और विस्तार क्षमता की सराहना की। प्रदर्शनी के साथ-साथ, कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन समारोह से हुआ, जिसके बाद राजस्थान सरकार के ग्रामीण

विकास सचिव ने स्वागत भाषण दिया। इसके बाद राजस्थान के पीएमवाई-जी

पर एक ऑडियो-विजुअल प्रस्तुति दी

गई, जिसमें राज्य में चल रही ग्रामीण आवास घटलों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला की चर्चाओं में सीएसआईआर-सीबीआरआई ने स्तरीय भूमिका निभाई। संस्थान के एक प्रतिनिधि ने बताया कि सीबीआरआई के विशेषज्ञों ने ग्रामीण विकास और ग्रामीण आवास विकास के लिए नवाचारों और विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया।

गान-आधारित समाधानों, जलवायु-अनुकूल आवास डिजाइनों, आपदा-प्रतिरोधी निर्माण पद्धतियों और विभिन्न ग्रामीण और जलवायु परिस्थितियों के लिए उपयुक्त टिकाऊ तकनीकों का प्रदर्शन किया। ग्रामीण विकास और ग्रामीण आवास के समर्थन करने वाले नवीन, किफायती और जलवायु-लचीले आवास समाधान प्रदान करने की अपनी निरंतर प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

भारतीय अर्थव्यवस्था की रफ्तार: चालू वित्त वर्ष में 7.8% तक रह सकती है GDP ग्रोथ

एजेंसी वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था अपनी मजबूती का प्रदर्शन कर रही है। प्रमुख सलाहकार कंपनी डेलॉयट इंडिया (Deloitte India) की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, भारत की आर्थिक विकास दर चालू वित्त वर्ष (2025-26) में शानदार प्रदर्शन करने वाली है। भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर चालू वित्त वर्ष में 7.5 से 7.8 प्रतिशत रहने जबकि 2026-27 में 6.6 से 6.9 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान है। सलाहकार कंपनी डेलॉयट इंडिया ने यह जानकारी दी। डेलॉयट ने कहा कि भारत के लिए 2025 को घरेलू मांग में "जुझारूपन", राजकोषीय, नीटिक एवं श्रम नीतियों में निर्णायक सुधारों और व्यापार नीतियों में पुनर्संवायोजन के वर्ष के रूप में याद किया जाएगा। चालू वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में आठवें वर्ष 2011-12 पर आधारित वार्षिक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में आठ प्रतिशत की वृद्धि हुई इसके बावजूद कि व्यापार में व्यवधान, विकसित अर्थव्यवस्थाओं में नीतिगत बदलाव एवं अस्थिर पूंजी प्रवाह जैसी वैश्विक चुनौतियाँ मौजूद थीं। डेलॉयट इंडिया को उम्मीद है कि त्योहारों मांग और सेवाओं की मजबूत गतिविधियों से वित्त वर्ष 2025-26 में जीडीपी की वृद्धि दर 7.5 से 7.8 प्रतिशत रहेगी। इसके अलावा, कंपनी ने बयान में कहा कि उच्च आधार एवं वैश्विक अनिश्चितताओं के बने रहने से वित्त वर्ष 2026-27 में वृद्धि दर घटकर 6.6 से 6.9 प्रतिशत हो सकती है। डेलॉयट इंडिया की अर्थशास्त्री गमकी मजुमदार ने कहा, "भारत की मजबूती कोई संयोग नहीं है। यह तब तक समय से अग्रगण्य वृद्धि-समर्थक नीतियों का परिणाम है।"

सीबीआरआई ने ग्रामीण आवास नवाचारों से छोड़ी मजबूत छाप



गात
शीघ्र
ससे
साथ
शत
ससे
धाएं

रुड़की, 15 जनवरी (अनिल): सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने राजस्थान के सवाई माधोपुर में आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला एवं प्रदर्शनी में सक्रिय भागीदारी करते हुए किफायती, टिकाऊ और जलवायु-अनुकूल ग्रामीण आवास से जुड़ी अपनी उन्नत तकनीकों का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान सरकार की ग्रामीण विकास विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रेया गुहा एवं जिला कलेक्टर काना राम सिरवी ने किया। उन्होंने सीबीआरआई के स्टॉल का अवलोकन कर ग्रामीण आवास और अवसंरचना क्षेत्र में संस्थान के योगदान की सराहना की।

सीबीआरआई द्वारा लगाए गए संवादात्मक स्टॉल में पीएमएवाई-जी

■ राजस्थान में क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला की गई आयोजित

मॉडल हाउस, 3डी भवन निर्माण प्रणाली, मिट्टी की ईंट बनाने की मशीनें, उन्नत ईंट भट्टा तकनीक, राम मंदिर मॉडल और अन्य कम लागत व पर्यावरण-अनुकूल निर्माण समाधान प्रदर्शित किए गए, जिन्हें अधिकारियों ने व्यावहारिक और विस्तार योग्य बताया। कार्यशाला में सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने तकनीकी सत्रों में भाग लिया। मुख्य वैज्ञानिक डॉ. अजय चौरसिया ने 'किफायती और जलवायु-प्रतिरोधी ग्रामीण आवास' विषय पर प्रस्तुति देते हुए प्रकाश डाला।

सीबीआरआई के दो वैज्ञानिकों की खोज, पर्यावरण के लिए भी होगा फायदेमंद

मार्बल की धूल और कचरे से बन सकेंगे ब्लॉक्स, टाइलें और ईंटें

अनुसंधान

■ महेश्वर सिंह

रुड़की। मार्बल उद्योग में दशकों से कचरे (वेस्ट) के निपटान की समस्या बनी हुई थी, लेकिन अब विज्ञान और आधुनिक तकनीक ने इसका एक टिकाऊ समाधान खोज निकाला है। मार्बल खनन और कटाई के दौरान निकलने वाली मार्बल स्लरी (धूल और पानी का मिश्रण) और पत्थरों के टुकड़ों का उपयोग अब उच्च गुणवत्ता वाली ईंटों, ब्लॉक्स और फ्लोरिंग टाइल्स बनाने में किया जा सकेगा।

सीबीआरआई रुड़की के प्रधान वैज्ञानिक राजेश कुमार और डॉ. रजनी लखानी द्वारा इस तकनीक को अपनी टीम के साथ विकसित किया गया है। इसे सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। राजेश कुमार ने बताया कि मार्बल पाउडर को सीमेंट और मिट्टी जैसे अन्य पदार्थों के साथ मिलाकर मजबूत,



रुड़की में सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने मार्बल की धूल और कचरे से ब्लॉक्स, टाइलें और ईंटें बनाईं। • हिन्दुस्तान

टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल निर्माण सामग्री (जैसे ईंटें, पेंचर ब्लॉक, फर्श और दीवार की टाइलें) तैयार की जाती हैं। इससे कचरा कम होता है और प्राकृतिक संसाधनों की बचत होती है।

उन्होंने बताया कि मार्बल स्लरी पर्यावरण के लिए एक बड़ा खतरा रही है। सुखने के बाद यह धूल बनकर हवा में उड़ती है, जिससे श्वसन संबंधी बीमारियां होती हैं और बारिश में यह जमीन की उपजाऊ परत को ढंक कर उसे बंजर बना देती है। इस कचरे को

निर्माण सामग्री में बदलकर न केवल प्रदूषण कम होगा, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों जैसे कि मिट्टी और रेत पर निर्भरता भी घटेगी।

उन्होंने बताया कि मार्बल डस्ट में कैल्शियम कार्बोनेट की मात्रा अधिक होती है। जब इसे सीमेंट, फ्ल्टाई ऐश और विशेष बाइंडर्स के साथ एक निश्चित अनुपात में मिलाया जाता है, तो प्राप्त होने वाले ब्लॉक्स पारंपरिक लाल ईंटों की तुलना में अधिक मजबूत और टिकाऊ होते हैं। बताया कि इन

रोजगार के नए अवसर

इस तकनीक के विस्तार से मार्बल बेल्ट वाले क्षेत्रों में लघु उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। सरकार भी वेस्ट टू वेल्थ अभियान के तहत ऐसे स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित कर रही है। इससे न केवल डॉपिंग याइर्स की समस्या खत्म होगी, बल्कि स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए द्वार भी खुलेंगे।

ब्लॉक्स की दबाव सहने की क्षमता सामान्य ईंटों से बेहतर पाई गई है। स्थानीय स्तर पर कचरा उपलब्ध होने के कारण इनके उत्पादन की लागत काफी कम आती है।

हाल ही में सीबीआरआई ने इस तकनीक को मेसर्स मार्बल प्लाजा नई दिल्ली को सफलतापूर्वक स्थानांतरित किया है। इस तकनीक के विकास में राजेश कुमार और डॉ. रजनी लखानी के साथ-साथ टीम सदस्य शाहनवाज खान, रोहित कुमार, मोहित कुमार का भी योगदान रहा।



CSIR-CBRI in the Limelight | 15.01.2026

<https://www.janmudde.com/archives/36675>

सवाई माधोपुर में आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला एवं प्रदर्शनी में सीएसआईआर-सीबीआरआई ने नवाचारों और विशेषज्ञता का किया प्रदर्शन।

17 Jan Mudde · 2 weeks ago · 1 min read



Spread the love



आरंभ नियोजी।

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की ने 15-16 जनवरी 2026 को राजस्थान के सवाई माधोपुर में आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला एवं प्रदर्शनी में सक्रिय रूप से भाग लिया और राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों के अंतर्गत कृषकता, टिकाऊ और जलवायु परिवर्तन के अनुकूल ग्रामीण आवास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान सरकार के ग्रामीण विकास विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रीमती श्रेया गुहा, आईएसआर और सवाई माधोपुर के जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट कला राम शिरडी, आईएसआर ने किया। गणमान्य व्यक्तियों ने सीएसआईआर-सीबीआरआई के स्टॉल का दौरा किया और ग्रामीण आवास विकास एवं अवसरवाचक नवाचार में संस्थान के प्रभावशाली योगदान की सराहना की।

प्रदर्शनी के दौरान, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने अपने उच्चतम ग्रामीण अर्थव्यवस्था और निर्माण प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने के लिए एक सूचनात्मक और सांख्यिकीय स्टॉल लगाया। प्रमुख प्रदर्शनों में पीएमएवाई-जी मॉडल घर, 3डी भवन निर्माण प्रणालियाँ, मिट्टी की ईंट बनाने की मशीनें, ईट भूँडे की तकनीकें, राम मंदिर मॉडल और अन्य नवोन्मेषी, कम लागत वाले और पर्यावरण के अनुकूल भवन निर्माण समाधान शामिल थे। स्टॉल ने जिला इकाइयों और अधिकारियों को आकर्षित किया, जिससे ग्रामीण

JAN MUDDÉ LIVE



1 of 57



विद्युती के अभाव... खेती विकासपुर... रुड़की सर्किट में प्र...
विद्युती के अभाव... खेती विकासपुर... रुड़की सर्किट में प्र...
विद्युती के अभाव... खेती विकासपुर... रुड़की सर्किट में प्र...



रुड़की में डार... रुड़की नगर... भारतीय किसान...
रुड़की में डार... रुड़की नगर... भारतीय किसान...
रुड़की में डार... रुड़की नगर... भारतीय किसान...



अपमान बढ़ा... अनामसुर... रुड़की नगर...
अपमान बढ़ा... अनामसुर... रुड़की नगर...
अपमान बढ़ा... अनामसुर... रुड़की नगर...

1 of 57

LIVE CRICKET SCORE

RECENT	LIVE	UPCOMING
NZ vs IND 215/7(20.0) vs 165/10(18.4) New Zealand win by 50 runs		
New Zealand tour of India, 2026, 4th T20I		
NZ vs IND 153/9(20.0) vs 155/2(10.0) India win by 8 wickets		
New Zealand tour of India, 2026, 3rd T20I		
NZ vs IND 208/6(20.0) vs 209/3(15.2) India win by 7 wickets		
New Zealand tour of India, 2026, 2nd T20I		

WEATHER

HARIDWAR WEATHER 21°C
broken clouds

Fri	Sat	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu
☁	☁	☁	☁	☁	☁	☁

Roorkee: सीएसआईआर-सीबीआरआई में भवन निर्माण सामग्री और निर्माण प्रौद्योगिकियों में प्रगति पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन



Manoj kumar 2 weeks ago

245 2 minutes read



Spread the love



रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में 14 से 16 जनवरी, 2026 तक तीन दिवसीय एकीकृत कौशल पहल कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में गलगोटिया विश्वविद्यालय के कुल 30 छात्रों और 3 संकाय सदस्यों ने भाग लिया, जहां उन्हें अत्याधुनिक अनुसंधान, प्रयोगशाला सुविधाओं और आधुनिक निर्माण पद्धतियों की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त हुई।

<https://www.nazariyanews.com/38860/>

र
या
दय
लय
द्वारा
के
थीन
एवं
छता
फ-
व
रुक
डॉ.
मरी
संघ,
गोपी
।।

नई भवन सामग्री, उन्नत निर्माण तकनीकों पर की गई चर्चा

■ तीन दिवसीय कार्यक्रम में दी जाएगी व्यावहारिक जानकारी

रुड़की, 14 जनवरी (अनिल): सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की में भवन निर्माण सामग्री और आधुनिक निर्माण प्रौद्योगिकियों में प्रगति पर आधारित तीन दिवसीय एकीकृत कौशल पहल कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में गलगोटिया विश्वविद्यालय के 30 छात्र और तीन संकाय सदस्य भाग ले रहे हैं।

वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं आउटरीच प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने



प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करते प्रतिभागी।

प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सीबीआरआई की भूमिका और प्रमुख अनुसंधान क्षेत्रों की जानकारी दी। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. तबिश आलम

ने नई भवन सामग्री और उन्नत निर्माण तकनीकों पर केंद्रित सत्रों की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा टिकाऊ अवसंरचना के लिए उनके महत्व पर प्रकाश डाला।

बिजली संयंत्रों के कचरे से बनेगा मजबूत और सस्ता प्लास्टर

■ महेश्वर सिंह

रुड़की। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के वैज्ञानिकों ने औद्योगिक कचरे के निपटान की दिशा में बड़ी सफलता हासिल की है। वैज्ञानिकों ने थर्मल पावर प्लांट से निकलने वाले कचरे (एफजीडी-जिप्सम) का इस्तेमाल कर एक खास किस्म का प्लास्टर तैयार किया है।

यह तकनीक न केवल प्रदूषण कम करेगी, बल्कि घरों के निर्माण को सस्ता और सुरक्षित भी बनाएगी। सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार के मार्गदर्शन में डॉ.

■ एफजीडी जिप्सम को 150 डिग्री तापमान तक किया जाता है गर्म

नीरज जैन और डॉ. सौमित्रा मैती की टीम ने इस तकनीक को विकसित किया है।

इस बारे में डॉ. नीरज जैन ने बताया कि देश में थर्मल पावर प्लांट से निकलने वाले एफजीडी जिप्सम कचरे का समाधान करना चुनौतीपूर्ण बना हुआ था। उन्होंने बताया कि थर्मल पावर प्लांट से बिजली बनाने के लिए फोयले का इस्तेमाल

किया जाता है। जब कोयला जलता है तो धुएँ के साथ सल्फर ऑक्साइड गैस भी निकलती है, जो कि पर्यावरण और सेहत दोनों के लिए बेहद हानिकारक है।

ऐसे में प्लांट में विमानियों से निकलने वाले धुएँ को साफ करने के लिए बड़े बड़े एयर प्यूरीफायर का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें पानी और चूना पत्थर का गाढ़ा घोल होता है। जब धुँआँ इस घोल से गुजरता है तो सारा सल्फर यह तकनीक एब्जॉर्ब कर लेता है। इसके चलते हवा तो साफ हो जाती है लेकिन इस प्रक्रिया से एक नई समस्या

पैदा हो जाती है। जब चूना सल्फर को पकड़ता है तो एक नया पदार्थ बनाता है। जिसे जिप्सम या औद्योगिक कचरा कहा जा सकता है।

उन्होंने बताया कि यह पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने के साथ साथ घरों पर बोझ होता है। इस समस्या के समाधान के लिए फैक्ट्रियों और बिजली संयंत्रों से निकलने वाले जिप्सम को 150 डिग्री सेल्सियस तापमान पर गर्म किया जाता है। इस प्रक्रिया में अन्य सामग्री और केमिकल का इस्तेमाल भी किया जाता है। इसके बाद यह बेहतरीन प्लास्टर में बदल जाता है।



रुड़की के सीबीआरआई के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किया गया प्लास्टर।

■ पारंपरिक सीमेंट-रेत प्लास्टर से है बेहतर

सीबीआरआई के वैज्ञानिकों की ओर से तैयार यह नया प्लास्टर कई मायनों में वर्तमान में उपयोग होने वाले सीमेंट-रेत के प्लास्टर से बेहतर पाया गया है। इसका फजन पारंपरिक प्लास्टर की तुलना में आधा है। इससे इमारतों पर बोझ कम पड़ता है। यह प्लास्टर आग से सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे घर सुरक्षित रहते हैं। औद्योगिक कचरे से बनने के कारण इसकी कीमत काफी कम है, जिससे घर बनाना किफायती होगा। यह पारंपरिक प्लास्टर से कई गुना अधिक टिकाऊ साबित हुआ है।

CSIR-CBRI in the Limelight | 08.01.2026

“भारतीय वास्तुकला शिल्प कौशल”



Sahara Live News
07 JAN 7, 2026



सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा “भारतीय वास्तुकला शिल्प कौशल” पर तीन दिवसीय कार्यशाला-सह-मन का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की ने सीएसआईआर इंटिग्रेटेड रिक्रूट इनिशिएटिव के अंतर्गत 7 से 9 जनवरी 2026 तक “भारतीय वास्तुकला शिल्प कौशल” विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला-सह-मन का उद्घाटन किया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों विशेष रूप से युवा वास्तुकारों को भारत की पारंपरिक वास्तुकला एवम शिल्प परंपराओं से परिचित कराना तथा उन्हें सात और कार्बन रहित आधुनिक निर्माण पद्धतियों से जोड़ना है।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत अतिथियों के स्वागत एवम दीप प्रज्वलन से हुई। संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं आउटरीच एंड डिसेमिनेशन सर्विसेज प्रमुख, डॉ. नीरज जैन ने सभी का स्वागत करते हुए सीएसआईआर के कौशल विकास कार्यक्रमों के उद्देश्यों तथा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में इस कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में वास्तुकार एस. के. नेगी, पूर्व मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई एवं पारंपरिक वास्तुकला विशेषज्ञ एवम प्रो. राम सतीश पसुपुटेटी, वास्तुकला एवं नियोजन विभाग, आईआईटी रुड़की, उपस्थित रहे। उन्होंने भारतीय पारंपरिक आवास उखान पुरस्कार 2.0 के विजेताओं के लिए जूरी की भूमिका निभाई थी। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक, प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने पारंपरिक वास्तुकला शिल्प को संरक्षित करने और आधुनिक निर्माण प्रणालियों के साथ इसके समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्यशाला भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए सात एवं लचीले निर्माण को प्रोत्साहित करती है।

उद्घाटन सत्र के दौरान वास्तुकार अनूप कुमार प्रसाद द्वारा लिखित पुस्तक “द लिविंग क्राफ्ट ऑफ इंडियन आर्किटेक्चर” का विमोचन किया गया। इसके साथ ही भारतीय पारंपरिक आवास उखान पुरस्कार 2.0 के अंतर्गत पारंपरिक आवास एवं वास्तुकला शिल्प के क्षेत्र में उत्कृष्टतम योगदान देने वाले वास्तुकारों, वास्तुकला के विभिन्न संस्थानों के छात्रों को सम्मानित किया गया।

कार्यशाला में देशभर के विभिन्न संस्थानों से बड़ी संख्या में युवा वास्तुकारों एवं वास्तुकला के छात्रों ने भाग लिया। कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रमुख संस्थानों में पेरियार मणिअम्मी विश्वान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, वल्लम, तमिलनाडु, मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (MANIT), भोपाल, मध्य प्रदेश, स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (SPA), विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश, आईईएस कोरिज ऑफ आर्किटेक्चर, मुंबई, महाराष्ट्र, तथा नेताजी सुभाष प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (NSUT), द्वाराक, दिल्ली इत्यादि शामिल रहे। बिस्से उन्हें भारत की पारंपरिक निर्माण तकनीकों और शिल्प परंपराओं को सम्मिलित का अवसर प्राप्त हुआ।

<https://www.saharalivenews.com/archives/10357>

बहुमंजिला इमारतों में लगे शीशों की सफाई करेगा रोबोट

एक्सक्लूसिव

महेश्वर सिंह

रुड़की। देश में ऊंची, कांच से ढकी इमारतों की तेजी से बढ़ती संख्या के कारण, फेकेड (बाहरी मुखौटा) और कैनोपी (छतरी) का रखरखाव आवश्यक और अत्यंत खतरनाक हो गया है। मैन्यूअल (हाथों से) सफाई में कर्मचारियों को असुरक्षित ऊंचाइयों, अप्रत्याशित मौसम, उपकरणों की खराबी और लंबे समय तक थकान का सामना करना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप देश में अबसर गंभीर चोट और मौतें होती हैं। सीबीआरआई रुड़की के वैज्ञानिकों ने इसका समाधान निकाला है। उन्होंने



रुड़की ऑटो-नॉर्मस कैनोपी क्लीनिंग रोबोट सीबीआरआई द्वारा तैयार किया गया है।

ऑटो-नॉर्मस कैनोपी क्लीनिंग रोबोट तैयार किया है। जो कि कांच से ढकी बड़ी-बड़ी ऊंची इमारतों की सफाई आसानी से कर सकेगा।

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार के अनुसार इस तकनीक को

मेसर्स पाल एन पॉल इनकॉर्पोरेशन अंबाला सिटी, हरियाणा को हस्तांतरित कर दिया गया है। जो उद्योग-अनुसंधान सहयोग में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जैसे-जैसे शहर लंबवत (ऊंचाई में) बढ़ते जा रहे हैं, इस तरह

- खतरनाक ऊंचाइयों पर मानव की उपस्थिति को समाप्त करता है
- रोबोट एक समान, उच्च-गुणवत्ता वाली सफाई सुनिश्चित करता है
- हल्का, पोर्टेबल (ले जाने में आसान) और संचालित में सरल है
- साफाई दक्षता 500 वर्ग मीटर/घंटा तक (1 मीटर लंबी रोलर ब्रश के लिए)
- बाधा और टक्कर से करता है बचाव

रोबोट में ये हैं विशेषताएं

- किनारे की पहचान, मैन्यूअल/पीआईडी-आधारित पथ सुधार
- 10 किलोग्राम तक पेलोड ले जा सकता है
- ऑटो-नॉर्मस कैनोपी क्लीनिंग रोबोट का वजन 20 किलोग्राम है, जिससे इसे साइटों पर ले जाना, इंस्टॉल करना और डिप्लॉय करना बहुत आसान है

के नवाचार सुरक्षित, अधिक स्मार्ट और अधिक टिकाऊ भवन रखरखाव को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इस तकनीक को विकसित करने के लिए डॉ. रवींद्र बिष्ट, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ.

सोजू अलेक्जेंडर, डॉ. सिद्धार्थ सिंह, चंद्रभानु पटेल, कांती लाल सोलंकी, वी चक्रधर, दिनेश कुमार, समीर और सीएआर समूह में समय-समय पर योगदान देने वाले परियोजना स्टाफ को निदेशक ने बधाई दी।

CSIR-CBRI in the Limelight | 20.12.2025

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय



राजस्थान से सीएसआईआर 'स्मार्ट गाँव' मिशन का शुभारंभ: पाली जिले का सवाईपुरा बना प्रथम गाँव

प्रविष्टि तिथि: 20 DEC 2025 8:01PM by PIB Jaipur

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित "स्मार्ट गाँव" मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के "विकसित भारत-2047" के विज़न के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ संसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कल्लेस्वरी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र; प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान; डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ग्राम प्रतिनिधि, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर "स्मार्ट गाँव" मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधीसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फीकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुगंधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपघट्य उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोस्टिंग, डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव-मानव संघर्ष न्यूनीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुग्ध गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रहीं। इन सभी समन्वित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा।

कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, श्री राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया। सीएसआईआर-सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताबिश आलम, डॉ. नवीन, श्री चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।







(रिलीज़ आईडी: 2207118) आगतक पटल : 65
इस विज्ञापि को इन भाषाओ मे पढ़े: English

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2207118®=39&lang=33>

राजस्थान से सीएसआईआर 'स्मार्ट गाँव' मिशन का शुभारंभ: पाली जिले का सवाईपुरा बना प्रथम गाँव

उजाला भारत न्यूज
रुड़की/पाली।

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित 'स्मार्ट गाँव' मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत- 2047' के विज्ञान के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र; प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान; डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ

अधिकारी, ग्राम प्रतिनिधि, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर 'स्मार्ट गाँव' मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कूल रूप तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फीकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुर्गांधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपघट्य उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोस्टिंग,



डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव-मानव संघर्ष न्यूनीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुग्ध गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रहें। इन सभी समन्वित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन को गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई

दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा।

कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया।

सीएसआईआर - सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताबिश आलम, डॉ. नवीन, चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

पा
ह
त
श
अ
क
मे
प
के
अ
ह
इ
मि
उ
च
मु
अ
क
मे
स
क
स
वि
ब
ज
ए

CSIR SMART Village Initiative Launched from Sawaipura

प्रविष्टि तिथि: 20 DEC 2025 8:01PM by PIB Jaipur

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE", aligned with the Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047."

This mission mode project inaugurated by Member of Parliament, Pali, Shri. P. P. Chaudhary, and Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, DG-CSIR, New Delhi, Shri Bhim Raj Bhati, MLA, Pali constituency along with Professor, Pradeep Kumar Ramancharia, Director, CSIR-CBRI, Roorkee, Dr. P. C. Panchariya, Director CSIR-CEERI, Pillani, Sh. Vishal Sipa, ACEO, Pali, Shri Manmohan Meena, BDO, Rohat, Sh. Sunil Bhandari, District President, sh. Prakesh Patel, Tahasildhar, Rohat, Shri Dilip Singh VDO, and Sh. Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, along with scientists from different CSIR laboratories, who were present at the event.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories were present and conducted a detailed need assessment survey, leading to the identification of suitable technologies for deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan. During the launch event, the exhibition gallery showcased a range of climate-responsive and livelihood-oriented invention, including solutions for housing and infrastructure (cool roof technologies, low-cost housing, and rural roads), renewable energy and water management (solar assisted systems, wastewater and fecal sludge treatment, and safe drinking water solutions), agriculture and allied sectors (aromatic and medicinal crops, beekeeping, millet value addition, and smart farm machinery), waste management (solid waste management, biodegradable products, biogas, and composting), digital and AI-enabled systems (smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, and milk quality analysis), as well as groundwater assessment.

Together, these integrated inventions aim to improve quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and schemes. Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR-CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On this occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will serve as the implementation partner for the project. The villagers of Sawaipura interacted with scientists from different CSIR laboratories. The event was coordinated by, Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma and their team. From CSIR-CBRI, Dr. Ajay Chourasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Naveen, Shri Chakradhar, and other officials were present at the event.





<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2207118®=39&lang=33>

राजस्थान से सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन का शुभारंभ

पाली जिले का सवाईपुरा बना प्रथम गाँव

महलहर न्यूज

रुड़की / पाली। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा संचालित स्मार्ट गाँव मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। वह पाल प्रधानमंत्री के विकसित भारत-2047 के विजन के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास का दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कलसेल्वी, महादेशिक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र, प्रो. प्रदीप कुमार रामचरता, निदेशक, सीएसआईआरइंडस्ट्रियल भवन अनुसंधान संस्थान, डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआरइंडस्ट्रियल सहित जिला

प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ग्राम प्रतिनिधि, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर स्मार्ट गाँव मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों को पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संबंधी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिन्हें अक्सर एवं अभिसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फॉकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुगंधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट भूतल स्वर्धन, स्मार्ट कृषि चक्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपव्यय उत्पाद, बायोमैस एवं कम्पोस्टिंग, डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीवप्रभानव संरक्षण न्यूनीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुग्ध गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकों शामिल रहा। इन सभी

सम्बन्धित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशन एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआरइंडस्ट्रियलआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञान (टएच) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा। कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन नवरा मीना, श्री राजेश कुमार शर्मा तथा उनके टीम द्वारा किया गया। सीएसआईआरइंडस्ट्रियलआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताकिश अहमद, डॉ. नवीन, श्री चक्रधर साहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारियों एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।



राजस्थान से सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन का शुभारंभ

शिक्षा मंत्रालय



सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने राजस्थान के स्वाइपुरा से 'स्मार्ट विलेज' पहल का शुभारंभ किया

- प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत @2047' के विज़न के अनुरूप मिशन-मोड परियोजना
- जलवायु-सहनशील, आजीविका-केंद्रित एवं डिजिटल प्रौद्योगिकियों का एकीकृत कार्यान्वयन
- 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा आवश्यकता-आधारित प्रौद्योगिकी आंकलन

प्रतिष्ठि तिथि: 20 DEC 2025 10:16PM by PIB Dehradun

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित "स्मार्ट गाँव" मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के स्वाइपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के "विकसित भारत- 2047" के विज़न के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र; प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान; डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ठाकुर श्री महान पराक्रम सिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत - चौटिला, ग्राम प्रतिनिधि-गण, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।



कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर "स्मार्ट गाँव" मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फीकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुगंधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), टोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपघट्य उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोस्टिंग, डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव-मानव संघर्ष न्यूनीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुग्ध गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रही। इन सभी समन्वित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुरदीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनो एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा।



कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, श्री राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया। सीएसआईआर-सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताविश आलम, डॉ. नवीन, श्री चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

12/23/25, 12:01 PM

Press Release: Press Information Bureau



(रिलीज़ आईडी: 2207121) आगंतुक पटल : 36
इस विज्ञापित को इन भाषाओं में पढ़ें: English

<https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2207121®=46&lang=45>

CBRI Roorkee Launches SMART Village Initiative from Sawaipura, Pali District, Rajasthan

- Mission Mode Project aligned with Prime Minister's vision of Viksit Bharat @ 2047
- Integrated deployment of climate-resilient, livelihood-oriented and digital technologies
- Scientists from 14 CSIR laboratories conduct need-based technology assessment

Posted On: 20 DEC 2025 10:13PM by PIB Dehradun

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on 'SMART VILLAGE' from Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan, aligned with the Hon'ble Prime Minister's vision of 'Viksit Bharat @ 2047.'



The initiative was inaugurated by Shri P. P. Chaudhary, Hon'ble Member of Parliament, Pali, along with Dr. (Ms.) N. Kalisevi, Director General, CSIR & Secretary, DSIR, Government of India. The launch ceremony was attended by Shri Bhim Raj Bhatti, Hon'ble MLA, Pali Constituency; Prof. Pradeep Kumar Ramacharia, Director, CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CEERI), Pilani; Shri Vishal Sipa, ACEO, Pali; Shri Manmohan Meena, BDO, Rohat; Shri Sunil Bhandari, District President; Shri Prakesh Patel, Tehsildar, Rohat; Shri Itakur Shri Mahan Parakram Singh, Shri Dilip Singh, VDO, and Shri Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, New Delhi, along with scientists from multiple CSIR laboratories.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories carried out a comprehensive need assessment survey, leading to the identification of location-specific technologies for deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura. An exhibition gallery showcased a wide range of climate-responsive and livelihood-oriented innovations, including solutions for housing and infrastructure such as cool roof technologies, low-cost housing systems and rural roads; renewable energy and water management solutions including solar-assisted systems, wastewater and faecal sludge treatment, and safe drinking water technologies; agriculture and allied sectors covering aromatic and medicinal crops, beekeeping, millet value addition and smart farm machinery, waste management solutions such as solid waste management, biodegradable products, biogas and composting, and digital and AI-enabled systems for smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, milk quality analysis, along with groundwater assessment tools.



These integrated interventions aim to enhance quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and government schemes.

Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR-CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On the occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will act as the implementation partner for the project. Villagers of Sawaipura actively interacted with scientists from various CSIR laboratories, sharing local challenges and aspirations. The event was coordinated by Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma, and their team. From CSIR-CBRI, Dr. Ajay Chourasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Navneen, Shri Chakradhar, and other officials were also present.



The CSIR SMART Village Initiative reflects CSIR's commitment to science-led rural transformation, leveraging indigenous technologies to create self-reliant, sustainable and resilient villages across India.

<https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetailm.aspx?PRID=2207120®=46&lang=1>

सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल के तहत राजस्थान पाली के सवाईपुरा में हुआ शुभारंभ



धरू चौध न्यूज
पाली। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने प्रधानमंत्री के विकसित भारत / 2047 के विजन के अनुरूप सीएसआईआर स्मार्ट विलेज नामक मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ 20 दिसम्बर को किया गया। इस पहल के अंतर्गत भारत के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में स्थित छह ग्रामों का चयन किया गया है।

इसमें राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गांव को गर्न व शुष्क जोन में शामिल किया गया है। यह परियोजना स्वदेशी सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के माध्यम से प्रमुख ग्राम विकास संकेतकों में सुधार करते हुए समग्र ग्राम विकास पर केंद्रित है, जो लंब दूरी के मार्गदर्शक सिद्धांत का अनुसरण करती है। इस मिशन का नेतृत्व गौडल प्रयोगशाला, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा

किया जा रहा है, जिसमें सीएसआईआर की तरह सहभागी प्रयोगशालाएं सम्मिलित हैं। इनमें सीएसआईआर-आईएचबीटी, सीएसआईआर-सीएमपी, सीएसआईआर-सीआरआरआई, सीएसआईआर-एएलपीआरआई, सीएसआईआर-एसईआरसी, सीएसआईआर-सीएसआईओ, सीएसआईआर-आईआईसीटी, सीएसआईआर-एनबीआरआई, सीएसआईआर-सीएसआईआरआई तथा सीएसआईआर-सीएसआईआर-सीएसआईआर शामिल हैं। परियोजना के प्रारंभिक चरण में राजस्थान सरकार तथा भारत (सेच द विलेज) द्वारा

सहयोग प्रदान किया जा रहा है। सहभागी प्रयोगशालाएं आवास नियोजन एवं विकास, आधारभूत संरचना, ग्राम सड़कों, कृषि एवं सहायक प्रौद्योगिकियों, कृषि-आधारित आजीविका, नवीकरणीय ऊर्जा, इको-किचन, भूजल एवं अपशिष्ट जल प्रबंधन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल कनेक्टिविटी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में विभिन्न तकनीकों का परिनिष्ठाकरण कर रही हैं। इस राष्ट्रीय मिशन का औपचारिक शुभारंभ 20 दिसम्बर को पाली सांसद पी.पी. चौधरी, तथा वन विभाग, वन इलेक्शन पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के अध्यक्ष एवं डॉ. (जीमती) एन. कलेश्वरी, सचिव, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (सीएसआईआर) तथा

महानिदेशक, सीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा वर्षाजल माध्यम से किया गया। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार रामगणवार, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की सहित विज्ञान प्रणालय के वरिष्ठ अधिकारी, जयश्रतिविधि सुनित भएथे। पाली विधायक भीमराज भाटी, विद्यालय शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय कार्यकारी अधिकारी, पंचायती राज, सी. पी. वर्मा कार्यकारी अधिकारी, ग्रामीण विकास, हरि सिंह रायपुरीयल कार्यकारी अधिकारी पंचायती राज, पूरण कुमार शर्मा उपसह्य अधिकारी, मन्मोहन मोहा खंड विकास अधिकारी रोड तथा दिल्ली सिंह ग्राम विकास अधिकारी, कोटिला ग्राम सहित अनेक वैज्ञानिक एवं गणपतन व्यक्ति उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का समन्वय (सीएसआईआर) के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. किशोर ने

सेब डोर-डू-डोर होगा सर्वे 25 तक नाम नहीं हटाने पर होगी कार्यवाही एपी दसूली

योजना के अंतर्गत के अन्वय परी निम्नके परिणाम स्वरूप जिले में

Home , राजस्थान , पाली , 'विकसित भारत' की प्रयोगशाला बनेगा पाली का सवाईपुरा: देश के पहले 'CSIR...

‘विकसित भारत’ की प्रयोगशाला बनेगा पाली का सवाईपुरा: देश के पहले ‘CSIR स्मार्ट गाँव’ मिशन का ऐतिहासिक आगाज

देश राजस्थान पाली

PUBLISHED ON DECEMBER 20, 2025

BY राव गुमान सिंह

f X WhatsApp Telegram Print



सर्कल न्यूज़

आपका साथ, हमारा विश्वास 8094-161616





14 वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं की तकनीक से बदलेगी गांव की तस्वीर; खेती, पानी और मकान सब होगा हाईटेक

सर्कल न्यूज नेटवर्क पाली/सवाईपुरा। राजस्थान के पाली जिले का एक छोटा सा गाँव 'सवाईपुरा' अब देश के नक्शे पर विज्ञान और तकनीक के मॉडल के रूप में उभरेगा। प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत-2047' के सपने को साकार करने की दिशा में शनिवार को यहाँ एक नया इतिहास लिखा गया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत सीएसआईआर (CSIR) ने अपने महत्वाकांक्षी "स्मार्ट गाँव" (Smart Village) मिशन मोड प्रोजेक्ट का शुभारंभ इसी गाँव से किया है।

इस मिशन का औपचारिक उद्घाटन पाली सांसद पी.पी. चौधरी और सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने किया। इस दौरान पाली विधायक भीमराज भाटी, सीएसआईआर-सीबीआरआई निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला और सीएसआईआर-सीरी निदेशक डॉ. पी.सी. पंचारिया भी मौजूद रहे।



सर्कल न्यूज

आपका साथ, हमारा विश्वास 8094-161616

क्या है 'स्मार्ट गाँव' मिशन? यह केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत को विज्ञान से जोड़ने की एक क्रांति है। इस मिशन के तहत सीएसआईआर की 14 प्रमुख प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों ने सवाईपुरा गाँव का गहन सर्वेक्षण किया और यहाँ की जरूरतों के हिसाब से 'कस्टमाइज्ड' तकनीकी समाधान तैयार किए हैं। इस प्रोजेक्ट के तहत गाँव में निम्नलिखित हाईटेक बदलाव किए जाएंगे:

- **आवास और बुनियादी ढाँचा:** कूल रूफ तकनीक (गर्मी से बचाने वाली छतें), कम तागत वाले मजबूत मकान और आधुनिक ग्रामीण सड़कें।
- **खेती-किसानी:** औषधीय और सुगंधित फसलों की खेती, मधुमक्खी पालन, स्मार्ट कृषि यंत्र और मिलेट (मोटा अनाज) की प्रोसेसिंग।
- **पानी और ऊर्जा:** सौर ऊर्जा प्रणाली, गंदे पानी का ट्रीटमेंट (Recycling), पीने का साफ पानी और भूजल का



क्या है 'स्मार्ट गाँव' मिशन? यह केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत को विज्ञान से जोड़ने की एक क्रांति है। इस मिशन के तहत सीएसआईआर की 14 प्रमुख प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों ने सवाईपुरा गाँव का गहन सर्वेक्षण किया और यहाँ की जरूरतों के हिसाब से 'कस्टमाइज्ड' तकनीकी समाधान तैयार किए हैं। इस प्रोजेक्ट के तहत गाँव में निम्नलिखित हाईटेक बदलाव किए जाएंगे:

- **आवास और बुनियादी ढाँचा:** कूल रूफ तकनीक (गर्मी से बचाने वाली छतें), कम लागत वाले मजबूत मकान और आधुनिक ग्रामीण सड़कें।
- **खेती-किसानी:** औषधीय और सुगंधित फसलों की खेती, मधुमक्खी पालन, स्मार्ट कृषि यंत्र और मिलेट (मोटा अनाज) की प्रोसेसिंग।
- **पानी और ऊर्जा:** सौर ऊर्जा प्रणाली, गंदे पानी का ट्रीटमेंट (Recycling), पीने का साफ पानी और भूजल का वैज्ञानिक आकलन।
- **डिजिटल और एआई:** वन्यजीव-मानव संघर्ष रोकने के लिए एआई सिस्टम, स्मार्ट बिजली प्रबंधन, डिजिटल हेल्थ मॉनिटरिंग और दूध की गुणवत्ता जांचने वाली मशीनें।



तकनीक की प्रदर्शनी ने मोहा मन कार्यक्रम स्थल पर एक विशेष तकनीकी प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें वैज्ञानिकों ने दिखाया कि कैसे बायो-गैस, कम्पोस्टिंग और ठोस कचरा प्रबंधन से गाँव को 'जीरो वेस्ट' बनाया जा सकता है। मिशन के नोडल समन्वयक डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी ने बताया कि इन तकनीकों का मकसद ग्रामीणों की आय बढ़ाना और जीवन स्तर सुधारना है।

<https://circlenews.in/the-countrys-first-csir-smart-village-mission/>

स्मार्ट विलेज : विकसित भारत 2047 के विजन के तहत होगा विकास, सूची में राजस्थान से इकलौता गांव रोहट के सवाईपुरा को देश के 6 मॉडल स्मार्ट गांवों में चुना

भास्करसहायदाता/पाली

भारत सरकार ने स्मार्ट विलेज मिशन मोड प्रोजेक्ट के तहत जिले में रोहट के सवाईपुरा गांव को स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित करने के लिए चुना है। राजस्थान से यह इकलौता गांव है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के विजन को साकार करने की दिशा में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने प्रोजेक्ट की शुरुआत की है। इसमें मध्य प्रदेश से जानपुरा (रायसेन), लद्दाख का चुमयांग (लेह), असम का चुनाकिमाओडल (जोहराट), ओडिशा का कुसुमपुर (केजरीनाबा) और गुजरात का भाड़ा (कच्छ) शामिल हैं। इसका उद्देश्य आधुनिक तकनीक, पर्यावरण-अनुकूल उपयोग

और डिजिटल सामानों के उपयोग से ग्रामीण भारत का समग्र विकास करना है। बता दें कि सवाईपुरा में वेस्ट मैनेजमेंट, कृषि राजस्व सुधार (एफो रेवेन्यू इम्प्रूवमेंट), डिजिटल कनेक्टिविटी, सड़क कनेक्टिविटी, बेहतर बिजली व्यवस्था, टेली मेडिसिन, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, विलेज प्लानिंग, और स्वच्छता प्रबंधन (हहनीन एंड सैनिटेशन) पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सवाईपुरा की जनसंख्या 1100 है। कुल वाटर 650 है। नर नाम 50 चुड़े हैं और 18 से कम के 400 लोग शामिल हैं। स्मार्ट विलेज के कामों की मॉनिटरिंग क्लेक्टर करेगी। अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी विशाल सिपा ने बताया कि सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं की विशेषज्ञता का उपयोग गांव के विकास में किया जाएगा।

स्मार्ट विलेज में प्रमुख रूप से ये मुख्य काम होंगे



- **आवास और निर्माण (CSRI-CBRI):** भवन डिजाइन, कम लागत वाले आवास, कूल रूप तकनीक, मिट्टी के ब्लॉक आदि।
- **सड़कें (सीएसआईआर-सीबीआरआई):** चार्ज मिक्स, कोल्ड मिक्स और वेस्ट प्लास्टिक से।
- **घाँटोटेक (सीएसआईआरआई, सीईआईआरआई):** ई-ट्रेक्टर, स्वचालित खेती उपकरण, स्मार्ट खेती मशीनें, और सोलर ग्रीन हाउस।

- **ऊर्जा और पर्यावरण (सीएसआईआरआई, सीईआईआरआई):** सोलर-बयोमास हाइब्रिड माइक्रोग्रिड, डीसी माइक्रोग्रिड और एपीनेलिटिक्स।
- **जल प्रबंधन (आईआईसीटी, इमजीआरआई):** भूजल अकलन और उन्नत वाटर पट्टीरूम।
- **स्वास्थ्य सेवा (सीईआईआरआई, एमपीआईआरआई):** टेली-हेल्थ कनेक्ट और जल रोधन प्रणाली (डी-टैक्स नैर)।

सांसद आदर्श ग्राम योजना से मॉडल गांव में क्या अलग है ?

सांसद अपने संसदीय क्षेत्र में गांव गोद लेकर आदर्श (मॉडल गांव) के रूप में विकसित करना था। इसमें सामाजिक, आर्थिक, बुनियादी ढांचा, शासन, मानव विकास आदि। ये सामुदायिक भागीदारी और जनप्रतिनिधि नेतृत्व पर आधारित है। जबकि स्मार्ट विलेज परियोजना में गांवों को स्मार्ट तकनीक, डिजिटल सुविधाएं, नवाचार, आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर से जोड़ना है। मुख्य तौर पर जल प्रबंधन, स्मार्ट सड़कें, सोलर लाइटिंग, डिजिटल सेवाएं, स्मार्ट स्वास्थ्य/कृषि के अलावा ये टेक्नोलॉजी आधारित विकास मॉडल है। सांसद आदर्श ग्राम योजना को केंद्र सरकार की योजना है। जिसे ग्रामीण विकास मंत्रालय चलाता है। लेकिन स्मार्ट विलेज परियोजना में अलग-अलग प्रदेशों द्वारा तकनीकी संस्थानों, विरवविद्यालयों, सीएसआर कंपनियों या वैज्ञानिक संस्थानों के सहयोग से चलाई जाती है।

CBRI रुड़की ने राजस्थान के स्वाइपुरा से 'स्मार्ट विलेज' पहल का शुभारंभ किया

पीआईबी

देहरादून 20 दिसंबर |भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित "स्मार्ट गाँव" मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के "विकसित भारत- 2047" के विज़न के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन कलैरेन्ती मन्त्रानिदेशक सीएसआईआर



पर "स्मार्ट गाँव" मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कूल रूप तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण

सवाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम

CSIR-CBRI Roorkee Launches SMART Village Initiative From Sawaipura, Pali District, Rajasthan

- Mission Mode Project aligned with Prime Minister's vision of Viksit Bharat @ 2047
- Integrated deployment of climate-resilient, livelihood-oriented and digital technologies
- Scientists from 14 CSIR laboratories conduct need-based technology assessment

Dehradun (The Hawk): The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE" from Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan, aligned with the Hon'ble Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047."

The initiative was inaugurated by Shri P. P. Chaudhary, Hon'ble Member of Parliament, Pali, along with Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Director General, CSIR & Secretary, DSIR, Government of India. The launch ceremony was attended by Shri Bhim Raj Bhati, Hon'ble MLA, Pali Constituency; Prof. Pradeep Kumar Ramancharla, Director, CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CEERI), Pilani; Shri Vishal Sipa, ACEO, Pali; Shri Manmohan Meena, BDO, Rohat; Shri Sunil Bhandari, District President; Shri Prakesh Patel, Tehsildar, Rohat; Shri Dilip Singh, VDO; and Shri Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, New Delhi, along with scientists from multiple CSIR laboratories.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories carried out a comprehensive need assessment survey, leading to the identification of location-specific technologies for



deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura. An exhibition gallery showcased a wide range of climate-responsive and livelihood-oriented innovations, including solutions for housing and infrastructure such as cool roof technologies, low-cost housing systems and rural roads; renewable energy and water management solutions including solar-assisted systems, wastewater and faecal sludge treatment, and safe drinking water technologies; agriculture and allied sectors covering aromatic and medicinal crops, beekeeping, millet value addition and smart farm machinery; waste management solutions such as solid waste management, biodegradable products, biogas and composting; and digital and AI-enabled systems for smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, milk quality analysis, along with groundwater assessment tools.

These integrated interventions aim to enhance quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and government schemes.

Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR-CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On the occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will act as the implementation partner for the project. Villagers of

Sawaipura actively interacted with scientists from various CSIR laboratories, sharing local challenges and aspirations. The event was coordinated by Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma, and their team. From CSIR-CBRI, Dr. Ajay Chourasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Naveen, Shri Chakradhar, and other officials were also present. The CSIR SMART Village Initiative reflects CSIR's commitment to science-led rural transformation, leveraging indigenous technologies to create self-reliant, sustainable and resilient villages across India.

Rs 6 Crore Loan Scam At Nainital Bank Almora, Fir Against Ex-Manager

Swati

Almora (The Hawk): Rs 6 Crore Loan Scam at Nainital Bank, FIR Registered A major loan fraud has been uncovered at the Nainital Bank branch in Almora, where the then branch manager allegedly manipulated 37 loan accounts, causing a loss of

t IIT Roorkee

CSIR-CBRI in the Limelight | 19.12.2025

Ministry of Science & Technology



CSIR-CBRI Unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani, Advancing India's Low-Carbon Construction Mission

- Prototype demonstrates low-carbon, climate-responsive construction for hot-dry regions
- Building achieves significant water, energy and cost savings using indigenous technologies

Posted On: 19 DEC 2025 3:28PM by PIB Dehradun

In a decisive stride towards low-carbon and climate-responsive infrastructure, the CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, has successfully developed a Climate Resilient Building (CRB) at the CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CSIR-CEERI) campus, Pilani. Executed under the Fast Track Mission Mode Project of CSIR, New Delhi, the initiative addresses the urgent need to reduce carbon emissions and dependence on energy-intensive mechanical cooling, particularly in India's hot-dry climatic regions.



The innovative facility was inaugurated virtually by Dr. N. Kalaiselvi, Director General, CSIR and Secretary, DSIR, in the august presence of Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR-CEERI; and Dr. Ajay Chourasia, Chief Scientist, CSIR-CBRI and Nodal Scientist of the project. Congratulating the teams, Dr. Kalaiselvi highlighted the critical role of sustainable and climate-responsive construction technologies in reducing electricity demand and fossil-fuel dependence. She emphasized that such innovations are vital for meeting India's climate-change mitigation commitments and called for their accelerated dissemination and large-scale adoption.

Highlighting the national relevance of the initiative, Prof. R. Pradeep Kumar stated that the construction sector must urgently transition towards environmentally responsible solutions. He noted that CSIR-CBRI has been consistently advancing safe, affordable and sustainable building technologies, and emphasized that integrating climate-resilient designs into the Government's rural housing programmes—envisaging over two crore houses—could substantially reduce carbon footprints while improving occupant comfort and resilience.



Expressing appreciation for the collaboration, Dr. P. C. Panchariya thanked CSIR-CBRI for selecting Pilani as the demonstration site, observing that the project would act as a catalyst for promoting cost-effective and climate-adaptive construction practices in the region and beyond.

Sharing the technical outcomes, Dr. Ajay Chourasia highlighted that the building achieves nearly 30% reduction in construction water consumption, maintains indoor temperatures 8-10°C lower than ambient conditions, and conforms to stringent safety and quality benchmarks, while ensuring a low embodied and operational carbon footprint. The two-storey structure, with a built-up area of 225 sq. m., was completed within 90 days, including finishing works, and realized close to 50% cost savings through prefabrication and optimized design.

The building integrates advanced CSIR-CBRI technologies such as concrete-filled cold-formed steel sections and lightweight cellular concrete blocks, combined with climate-appropriate orientation and factory-manufactured components to ensure durability, precision and sustainability. The inauguration was attended by Er. Ashish Pippal, Er. Ashok Singh, Er. Hardev Singh, along with teams from CSIR-CBRI and CSIR-CEERI.



With the commissioning of the Pilani CRB, CSIR-CBRI has now dedicated a series of Climate Resilient Building prototypes across diverse climatic zones—Composite (Roorkee), Warm-Humid (Chennai and Jorhat), Hot-Dry (Pilani), and Cold (Leh). Each prototype is scientifically tailored to regional conditions, incorporating climate-specific strategies such as solar control and thermal mass, enhanced ventilation and moisture management, heat-gain minimization, and high insulation with passive solar heating.

This landmark initiative demonstrates how cutting-edge science, indigenous innovation, and eco-sensitive design can converge to deliver affordable, scalable, and climate-resilient building solutions, reinforcing India's pathway toward a sustainable and low-carbon built environment.



PIB in Uttarakhand

@PIBDehradun - Follow



👉 CSIR-CBRI Unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani, Advancing India's Low-Carbon Construction Mission

👉 Prototype demonstrates low-carbon, climate-responsive construction for hot-dry regions



3:33 PM - Dec 19, 2025



1



Reply



Copy link

Read 1 reply

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206658®=39&lang=33>



सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल का शुभारंभ सवाईपुरा में कल 20 दिसम्बर को

प्रविष्टि तिथि: 19 DEC 2025 5:50PM by PIB Jaipur

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने प्रधानमंत्री के "विकसित भारत @ 2047" के विज्ञान के अनुरूप "सीएसआईआर स्मार्ट विलेज" नामक मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ कल 20 दिसम्बर को किया जा रहा है। इस पहल के अंतर्गत भारत के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में स्थित छह ग्रामों का चयन किया गया है। इनमें सवाईपुरा (पाली जिला, राजस्थान), जनकपुर (रायसेन जिला, मध्य प्रदेश), जुनाकीमंडल (जोरहाट जिला, असम), कुसुनपुर (केंद्रपाड़ा जिला, ओडिशा), चुमथांग (लेह जिला, लद्दाख) तथा भाड़ा (कच्छ जिला, गुजरात) शामिल हैं। यह परियोजना स्वदेशी सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों के माध्यम से प्रमुख ग्राम विकास संकेतकों में सुधार करते हुए समग्र ग्राम विकास पर केंद्रित है, जो "लैब टू लैंड" के मार्गदर्शक सिद्धांत का अनुसरण करती है। इस मिशन का नेतृत्व नोडल प्रयोगशाला, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा किया जा रहा है, जिसमें सीएसआईआर की तेरह सहभागी प्रयोगशालाएँ सम्मिलित हैं। इनमें सीएसआईआर-आईएचबीटी, सीएसआईआर-सीमैप, सीएसआईआर-नीरी, सीएसआईआर-सीआरआरआई, सीएसआईआर-एमपीआरआई, सीएसआईआर-एसईआरसी, सीएसआईआर-सीएसआईओ, सीएसआईआर-आईआईसीटी, सीएसआईआर-सीएलआरआई, सीएसआईआर-एनआईआईएसटी, सीएसआईआर-एनजीआरआई, सीएसआईआर-सीएमईआरआई तथा सीएसआईआर-सीईआईआरआई शामिल हैं। परियोजना के प्रारंभिक चरण में राजस्थान सरकार तथा बाल रक्षा भारत (सेव द चिल्ड्रन) द्वारा कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में सहयोग प्रदान किया जाएगा। सहभागी प्रयोगशालाएँ आवास नियोजन एवं विकास, आधारभूत संरचना, ग्राम सड़कों, कृषि एवं सहायक प्रौद्योगिकियों, कृषि-आधारित आजीविका, नवीकरणीय ऊर्जा, इको-किचन, भूजल एवं अपशिष्ट जल प्रबंधन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल कनेक्टिविटी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्रों में विभिन्न तकनीकों का परिचालन कर रही हैं। मिशन में ग्राम विकास सूचकांक (Village Development Index - VDI) के माध्यम से मूल्यांकन एवं प्रभाव आकलन का भी प्रावधान है। इस राष्ट्रीय मिशन का औपचारिक शुभारंभ कल 20 दिसम्बर को पाली सांसद श्री पी. पी. चौधरी, तथा "वन नेशन, वन इलेक्शन" पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के अध्यक्ष, एवं डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेत्वी, सचिव, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा महानिदेशक, सीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया जाएगा। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार रामणचारला, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी — जिला कलक्टर पाली श्री लक्ष्मी नारायण मंत्री, श्री मुकेश चौधरी (मुख्य कार्यकारी अधिकारी), डॉ. महेंद्र सिंह मेहता (अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी, ग्रामीण विकास), श्री विशाल सिपा (अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पंचायती राज), श्री सी. पी. वर्मा (कार्यकारी अभियंता, ग्रामीण विकास), श्री हरि सिंह राजपुरोहित (कार्यकारी अभियंता, पंचायती राज), श्री पुरण कुमार शानी (उपखंड अधिकारी), श्री मनमोहन मीणा (खंड विकास अधिकारी, रोहट) तथा श्री दिलीप सिंह (ग्राम विकास अधिकारी, चोटिला ग्राम) सहित अनेक वैज्ञानिक एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहेंगे। इस कार्यक्रम का समन्वय (सीएसआईआर) के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. किशोर कुलकर्णी करेंगे।

000000

(रिलीज़ आईडी: 2206658) आगंतुक पटल : 67

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206540®=46&lang=1>

CSIR Smart Village Initiative to be launched in Sawaipura tomorrow on 20th December

Posted On: 19 DEC 2025 5:31PM by PIB Jaipur

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE", aligned with the Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047."

Under this initiative, six villages located in different climatic regions of India have been identified, namely Sawaipura (Pali District, Rajasthan), Janakpur (Raisen District, Madhya Pradesh), Junakimandal (Jorhat District, Assam), Kusunpur (Kendrapara District, Odisha), Chumathang (Leh District, Ladakh), and Bhada (Kachchh District, Gujarat). This pilot project focuses on integrated village development by improving key development indicators through indigenous CSIR technologies, following the guiding principle of "Lab to Land". This mission has been initiated by the Nodal Laboratory, CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, in collaboration with thirteen participating CSIR laboratories. The participating laboratories include CSIR-IHBT, CSIR-CIMAP, CSIR-NEERI, CSIR-CRRI, CSIR-AMPRI, CSIR-SERC, CSIR-CSIO, CSIR-IICT, CSIR-CLRI, CSIR-NIIST, CSIR-NGRI, CSIR-CMERI and CSIR-CEERI. Initial support was given by Rajasthan Government and Bal Raksha Bharat (Save the children) as an implementing agency. These laboratories are deploying a range of technologies in the areas of habitat planning and development, infrastructure, village roads, agriculture and allied technologies, farm based livelihood, renewable energy, eco-kitchens, groundwater management, wastewater management, disaster risk reduction, environmental protection, digital connectivity, education, and healthcare. The mission also includes evaluation and impact assessment through the Village Development Index.

The national launch of the mission was inaugurated by Member of Parliament, Pali Shri. P. P. Chaudhary, and Chairperson of the Joint Parliamentary Committee (JPC) on One Nation, One Election and Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Secretary, Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) and Director General, Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), New Delhi, along with Professor, Pradeep Kumar Ramancharla, Director, CSIR-CBRI, Roorkee, Shri Lakshmi Narain Mantri, District Magistrate (DM), Shri Mukesh Choudhary (Chief Executive Officer), Dr. Mahendra Singh Mehata (Additional Chief Executive Officer, Rural Development, Pali), Shri Vishal Sipa (Additional Chief Executive Officer, Panchayat Raj, Pali), Shri C.P. Verma (Executive Engineer, Rural Development), Shri Hari Singh Rajpurohit (Executive Engineer, Panchayat Raj), Shri Puran Kumar Shani (Sub-Divisional Magistrate), Shri Manmohan Meena (Block Development Officer, Rohat), and Shri Dllip Singh (Village Development Officer, Chotila Gram), along with scientists, who were present at the event. This program will be coordinated by Dr. Kishor Kulkarni, Principal Scientist (CSIR).

000000

(Release ID: 2206656) Visitor Counter : 51

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206656&req=39&lang=1>

CSIR-CBRI Roorkee unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani



Garhwal Post Bureau

ROORKEE, 19 Dec: In a decisive stride towards low-carbon and climate-responsive infrastructure, the CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, has successfully developed a Climate Resilient Building (CRB) at the CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CSIR-CEERI) campus, Pilani. Executed under the Fast Track Mission Mode Project of CSIR, New Delhi, the initiative addresses the urgent need to reduce carbon emissions and dependence on energy-intensive mechanical cooling, particularly in India's hot-dry climatic regions.

The innovative facility was inaugurated virtually by Dr N Kalaiselvi, Director General, CSIR and Secretary, DSIR, in the presence of Prof R. Pradeep

Kumar, Director, CSIR-CBRI; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR-CEERI; and Dr. Ajay Chourasia, Chief Scientist, CSIR-CBRI and Nodal Scientist of the project. Congratulating the teams, Dr. Kalaiselvi highlighted the critical role of sustainable and climate-responsive construction technologies in reducing electricity demand and fossil-fuel dependence. She emphasised that such innovations are vital for meeting India's climate-change mitigation commitments and called for their accelerated dissemination and large-scale adoption.

Highlighting the national relevance of the initiative, Prof R Pradeep Kumar stated that the construction sector must urgently transition towards environmentally responsible solutions. He noted that CSIR-CBRI has been consistently



advancing safe, affordable and sustainable building technologies, and emphasized that integrating climate-resilient designs into the Government's rural housing programmes—envisaging over two crore houses—could substantially reduce carbon footprints while improving occupant comfort and resilience.

Expressing appreciation for the collaboration, Dr. P. C. Panchariya thanked CSIR-CBRI for selecting Pilani as the demonstration site, observing that the project would act as a catalyst for promoting cost-effective and climate-adaptive construction practices in the region and beyond.

Sharing the technical outcomes, Dr. Ajay Chourasia highlighted that the building achieves nearly 30% reduction in construction water consumption, maintains indoor temperatures 8–10°C lower than ambient

conditions, and conforms to stringent safety and quality benchmarks, while ensuring a low embodied and operational carbon footprint. The two-storey structure, with a built-up area of 225 sq. m., was completed within 90 days, including finishing works, and realized close to 50% cost savings through prefabrication and optimized design.

The building integrates advanced CSIR-CBRI technologies such as concrete-filled cold-formed steel sections and lightweight cellular concrete blocks, combined with climate-appropriate orientation and factory-manufactured components to ensure durability, precision and sustainability. The inauguration was attended by Er. Ashish Pippal, Er. Ashok Singh, Er. Hardev Singh, along with teams from CSIR-CBRI and CSIR-CEERI.



With the commissioning of the Pilani CRB, CSIR-CBRI has now dedicated a series of Climate Resilient Building prototypes across diverse climatic zones—Composite (Roorkee), Warm-Humid (Chennai and Jorhat), Hot-Dry (Pilani), and Cold (Leh). Each prototype is scientifically tailored to regional conditions, incorporating climate-specific strategies such as solar control and thermal mass, enhanced ventilation and moisture management, heat-gain minimization, and high insulation with passive solar heating.

This landmark initiative demonstrates how cutting-edge science, indigenous innovation, and eco-sensitive design can converge to deliver affordable, scalable, and climate-resilient building solutions, reinforcing India's pathway toward a sustainable and low-carbon built environment.

CSIR-CBRI in the Limelight | 09.12.2025

स्मार्ट विलेज : विकसित भारत 2047 के विजन के तहत होगा विकास, सूची में राजस्थान से इकलौता गांव रोहट के सवाईपुरा को देश के 6 मॉडल स्मार्ट गांवों में चुना

भास्कर संवाददाता/पाली

भारत सरकार ने स्मार्ट विलेज मिशन मोड प्रोजेक्ट के तहत जिले में रोहट के सवाईपुरा गांव को स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित करने के लिए चुना है। राजस्थान से यह इकलौता गांव है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के विजन को समर्थन देने की दिशा में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने प्रोजेक्ट की शुरुआत की है। इसमें मध्य प्रदेश से जानपुरा (एस्पेन), लखनऊ का चुगायांग (लेह), असम का चुनाकिमाओडल (जेरहट), ओडिशा का कुसुनपुर (केदारनाथ) और गुजरात का भाड़ा (कच्छ) शामिल हैं। इसका उद्देश्य आधुनिक तकनीक, पर्यावरण-अनुकूल उपकरणों

और डिजिटल साधनों के उपयोग से ग्रामीण भारत का समग्र विकास करना है। बता दें कि सवाईपुरा में वेस्ट मैनेजमेंट, कृषि राजस्व सुधार (फ़ो रेवेन्यू इंफ़ोसमेंट), डिजिटल कनेक्टिविटी, सड़क कनेक्टिविटी, बेहतर बिजली व्यवस्था, टेली मेंडिसिन, इंफ़ोस्ट्रक्चर डेवलपमेंट, विलेज प्लानिंग, और स्वच्छता प्रबंधन (इक्युवीन एंड सैनिटेशन) पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सवाईपुरा की जनसंख्या 1100 है। कुल वॉटर 650 है। नए नाम 50 जुड़े हैं और 18 से कम के 400 लोग शामिल हैं। स्मार्ट विलेज के कामों की मॉनिटरिंग कलेक्टर करेंगे। अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी विद्याल सिपा ने बताया कि सीएसआईआर को विभिन्न प्रयोगशालाओं की विशेषज्ञता का उपयोग गांव के विकास में किया जाएगा।

स्मार्ट विलेज में प्रमुख रूप से ये मुख्य काम होंगे



- **आवास और निर्माण (CSRI-CBRI):** भवन डिजाइन, कम लागत वाले आवास, कूल रूफ तकनीक, मिट्टी के ब्लॉक आदि।
- **सड़कें (सीएसआईआर-सीआरआरआई):** वार्म मिक्स, कोल्ड मिक्स और वेस्ट प्लास्टिक से।
- **ड्राइटेक (सीएसआईआरआई, सीआईआरआई):** ई-ट्रेक्टर, स्वचालित खेती उपकरण, स्मार्ट खेती मशीनें, और सोलर ग्रीन हाउस।

- **ऊर्जा और पर्यावरण (सीएसआईआरआई, सीआईआरआई):** सोलर-बायोमास हब्सिड माइक्रोग्रिड, डीसी माइक्रोग्रिड और एप्रोवेलिटक्स।
- **जल प्रबंधन (आईआईसीटी, इनजीआरआई):** भूजल आकलन और उन्नत वाटर एट्रीएम।
- **स्वास्थ्य सेवा (सीआईआरआई, एमपीआरआई):** टेली- हेल्थ कनेक्ट और जल रोधन प्रणाली (डी-टोक्स नेट)।

सांसद आदर्श ग्राम योजना से मॉडल गांव में क्या अलग है ?

सांसद अपने संसदीय क्षेत्र में गांव गोद लेकर आदर्श (मॉडल गांव) के रूप में विकसित करना था। इसमें सामाजिक, आर्थिक, बुनियादी ढांचा, शासन, मानव विकास आदि। ये सामुदायिक भागीदारी और जनप्रतिनिधि नेतृत्व पर आधारित है। जबकि स्मार्ट विलेज परियोजना में गांवों को स्मार्ट तकनीक, डिजिटल सुविधाएं, नवाचार, आधुनिक इन्फ़ोस्ट्रक्चर से जोड़ना है। मुख्य तौर पर जल प्रबंधन, स्मार्ट सड़कें, सोलर लाइटिंग, डिजिटल सेवाएं, स्मार्ट स्वास्थ्य/कृषि के अलावा ये टेक्नोलॉजी आधारित विकास मॉडल है। सांसद आदर्श ग्राम योजना को केंद्र सरकार की योजना है। जिसे ग्रामीण विकास मंत्रालय चलाता है। लेकिन स्मार्ट विलेज परियोजना में अलग-अलग प्रदेशों द्वारा तकनीकी संस्थानों, विश्वविद्यालयों, सीएसआर कंपनियों या वैज्ञानिक संस्थानों के सहयोग से चलाई जाती है।

Presented in Dainik Bhaskar Newspaper

‘समस्याओं के समाधान को विज्ञान की खोज जारी रखें स्टूडेंट्स’

■ वैज्ञानिक जिज्ञासा और जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया आयोजन

रुड़की, 28 नवम्बर (अभिज्ञ): विज्ञान को बेहतर विचारणा, आणविक, टैक्स्टुल के छात्रों ने सुझाव को लेकर आईआरआईआरआई रुड़की का शैक्षिक भ्रमण किया। 148 छात्रों और 3 शिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। यह प्रथम बार आईआरआईआरआई 2.0 का 10-वर्षीय जयन्ती समारोह के अवसर पर आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य युवा शिक्षार्थियों में वैज्ञानिक विज्ञान और जागरूकता को बढ़ावा देना था। डॉ. जॉना जॉन ने छात्रों को विज्ञान को खोज जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम से हुए आरटी वीडियो प्रदर्शन के बाद डॉ. जॉना जॉन ने छात्रों को आईआरआईआरआई के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न बायो, मोड (प्रशिक्षण) और नवाचारों का अवलोकन किया। छात्रों ने अपने मिशन, सामग्री, परिपक्वता, सुरक्षा, जायस और विभिन्न और पर्यावरण इंजीनियरिंग में संशोधन प्रदर्शन देखा। यह सत्र छात्रों को यह समझने में मदद करता है कि विज्ञान और अनुसंधान कैसे वास्तविक जीवन को समाधानों के समाधान में योगदान करते हैं।



भ्रमण कार्यक्रम में उपस्थित छात्रों का दृश्य।

द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के दौरान डॉ. जॉना जॉन और डॉ. जॉना जॉन ने छात्रों को विज्ञान 2.0 का 10-वर्षीय जयन्ती के अवसर पर आईआरआईआरआई रुड़की के वैज्ञानिकों के बीच संशोधन सुझावों के माध्यम से अग्रणी बनने का अवसर प्रदान किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. जॉना जॉन ने छात्रों को विज्ञान 2.0 का 10-वर्षीय जयन्ती के अवसर पर आईआरआईआरआई रुड़की के वैज्ञानिकों के बीच संशोधन सुझावों के माध्यम से अग्रणी बनने का अवसर प्रदान किया।

सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. जॉना जॉन ने छात्रों को विज्ञान 2.0 का 10-वर्षीय जयन्ती के अवसर पर आईआरआईआरआई रुड़की के वैज्ञानिकों के बीच संशोधन सुझावों के माध्यम से अग्रणी बनने का अवसर प्रदान किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. जॉना जॉन ने छात्रों को विज्ञान 2.0 का 10-वर्षीय जयन्ती के अवसर पर आईआरआईआरआई रुड़की के वैज्ञानिकों के बीच संशोधन सुझावों के माध्यम से अग्रणी बनने का अवसर प्रदान किया।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 27.11.2025 & 28.11.2025

केवी देहरादून के छात्रों ने किया सीएसआईआर-सीबीआरआई का दौरा

■ जिज्ञासा-2.0 छात्र वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम के तहत ली तकनीकी जानकारी

रुड़की, 27 नवम्बर (अनिल): पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय, आईएमए देहरादून के 101 छात्रों और 6 शिक्षकों ने मंगलवार को सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक दौरा किया। यह भ्रमण सीएसआईआर जिज्ञासा 2.0 छात्र-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. बिलिंग की प्रदर्शनी गैलरी के भ्रमण से हुई, जहां छात्रों ने सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न वैज्ञानिक मॉडलों, नवीन तकनीकों और शोध कार्यों को नजदीक से देखा। इस दौरान बरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. तन्विषा आलम



सीबीआरआई का दौरा करने वाले छात्र व अधिकारी।

ने राम मंदिर मॉडल समेत कई प्रदर्शनियों की जानकारी दी। बरिष्ठ प्रबन्ध वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने छात्रों को जिगजैग ईट भट्टा मॉडल और अन्य नवाचारों के बारे में विस्तार से बताया। तकनीकी भ्रमण का दूसरा चरण आरएनटी सभागार में आयोजित हुआ, जहां डॉ. तन्विषा आलम ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. नीरज जैन ने जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के उद्देश्यों और इसकी संरचना के बारे में

अवगत कराया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम युवाओं को वास्तविक वैज्ञानिक अवधारणाओं से जोड़ने और कक्षा से बाहर सीखने का अनुठा अवसर प्रदान करता है। छात्रों ने प्रायोग प्रौद्योगिकी फर्क, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी प्रयोगशाला सहित शोध प्रक्रियाओं और वैज्ञानिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की।

दो अंतर का उ रख अपिकुल दिताम्ब अंतरर तैगारिये सहकारि की बैठ बैठ व्यरस्थ तैगारिये निर्णयि दो दिस्त पुक्करि मेले के सारकुयि जाएणे। जानका ह्यर श जिससे वसेबे बैठक कार्यक्रम

Presented in Garhwal Post Newspaper

दैनिक जागरण

पीएम श्री केवि आइएमए के छात्रों ने सीबीआरआई का किया भ्रमण

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय पब्लिक अन्वेषण संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की का पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय आईएमए देहरादून के छात्रों ने 'जिज्ञासा 2.0' कार्यक्रम के तहत भ्रमण किया। छात्र-छात्राओं ने विज्ञानियों से संवाद करने के साथ ही प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। भ्रमण करने वालों में विद्यालय के 101 छात्र और छह शिक्षक शामिल रहे।

सीबीआरआई में गुरुवार को छात्रों के भ्रमण कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. बिलिंग प्रदर्शनी गैलरी से हुई। जहां छात्रों ने संस्थान के विज्ञानियों द्वारा निर्मित विविध वैज्ञानिक प्रदर्शनीयों, नवीन तकनीकों और चल रहे शोध विकास का अवलोकन किया। बरिष्ठ विज्ञानी डॉ. तन्विषा आलम ने राम मंदिर मॉडल और कई अन्य अनुसंधान के बारे में जानकारी दी। बरिष्ठ प्रबन्ध विज्ञानी डॉ. नीरज जैन ने जिगजैग ईट भट्टा मॉडल और अन्य नवाचारों के बारे में अवगत कराया। अगला सत्र आरएनटी सभागार में आयोजित हुआ। इस मौके पर सीबीआरआई के निदेशक

प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम युवा शिक्षार्थियों को वास्तविक समय की वैज्ञानिक अवधारणाओं से जोड़ने और कक्षा-आधारित शिक्षा से परे अपनी संमग्न को व्यपक बनने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करता है। डॉ. नीरज जैन ने जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के उद्देश्यों, संरचना और इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले अनुभवत्मक शिक्षण अवसरों की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रबन्ध विज्ञानी डॉ. तन्विषा आलम ने अगलियत से धन किवच पर व्याख्यान दिया। जिसमें उन्होंने अपरिचित को उपयोगी संसाधनों में बदलने की आधुनिक तकनीकों और

स्थापित्व के लिए उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। इसके बाद छात्रों ने प्रायोग प्रौद्योगिकी फर्क, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी प्रयोगशाला आदि का भ्रमण किया। इस दौरान जहां चल रहे शोध गतिविधियों और वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी एकत्रित की।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

दैनिक जागरण

शहरी सुरक्षा, बुनियादी ढांचा प्रबंधन और आपदा न्यूनीकरण पर विचार किए साझा

सीबीआरआइ की ओर से "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" विषय पर वैश्विक सम्मेलन

जलवायु संवर्धन, रक्षा: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रक्षा की ओर से "एक स्वास्थ्य, एक विश्व-2025" विषय पर आयोजित वैश्विक सम्मेलन के द्वितीय दिवस महालयपूर्ण वैज्ञानिक सत्रों और सांसाध्यक पर्याय, हुई। व्याख्यान सत्रों के अलावा प्रदर्शनी भी सत्रों में। प्रदर्शनी में अनुसंधान, प्रौद्योगिकियाँ और नवचार प्रदर्शित किए गए। जिसके माध्यम से सम्मेलन में आए राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों ने जानकारी एकत्रित की।

"एक स्वास्थ्य, एक विश्व-2025" वैश्विक सम्मेलन शुक्रवार को बहादुरगढ़ स्थित एक होटल में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में शहरी सुरक्षा व आपदा न्यूनीकरण, बुनियादी ढांचा प्रबंधन, सार्वजनिक स्वास्थ्य और विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी वैश्विक विशेषज्ञों ने अपनी ज्ञान-वैश्विक अंतर्दृष्टि और विशेषज्ञता प्रस्तुत की।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास के प्रोफेसर सीबीआरआइ में शहरी सुरक्षा पर व्याख्यान दिया। उन्होंने भूकंपरोधी भवन डिजाइन और लकड़ी संरचनाओं के महत्व को समझाया। बीजी श्रीक

केंद्रस्थान टेक ग्राहवेट लिमिटेड, गुड़ी के खोरी पी. कजले ने बुनियादी ढांचा प्रबंधन पर विचार रखे। उन्होंने आधुनिक निर्माण तकनीकों और कुशल परिवहन निष्पादन विधियों पर प्रकाश डाला। उदारगढ़ मुख्यालय न्यूनीकरण और

प्रक्रिया केंद्र डेवरागढ़ के निदेशक डा. शंतनु सरकार ने आपदा न्यूनीकरण पर व्याख्यान देते हुए मुख्यालय-प्रधान क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कराया। उन्होंने निगरानी प्रणालियों और निवारक एप्लीकेशनों पर चर्चा की।

सीबीआइआइ रक्षा के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार, वैश्विक सम्मेलन के अखेड़ा संचय डा. अजय चौरीवाल और अन्य विशेषज्ञों ने भी सीबीआइआइ में चला रहे सम्मेलन में अपने विचार रखे।

प्रदर्शनी गैलरी, राष्ट्रीय भूयुग्म इन्जीनियरिंग परीक्षा सुविधा, यू-एन-वीपी परीक्षा सुविधा, 3डी कर्टेज डिजिटल रैप, ऑन-अनुसंधान प्रयोगशाला, प्राचीन प्रौद्योगिकी पर्यटन, उन्नत कर्पेट और स्टील डेकॉरेशन

रैप और निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क का अवलोकन किया। इसके माध्यम से उन्होंने सीबीआइआइ के निरंतर वैज्ञानिक योगदान के बारे में जानकारी हासिल की।

सीबीआइआइ रक्षा की ओर से एक स्वास्थ्य, एक विश्व पर आयोजित वैश्विक सम्मेलन में शामिल राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागी • लक्ष्य संख्या

प्रतिभागियों ने किया सीबीआइआइ परिसर का दौरा

रक्षा: विभिन्न सत्रों के बाद राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों ने सीबीआइआइ परिसर का दौरा किया। यह प्रमुख अनुसंधान और परीक्षा सुविधाओं का सारा अवलोकन किया गया। प्रतिभागियों ने सीबीआइआइ

Presented in Dainik jagran Newspaper

CBRI Roorkee hosts Global OHOW 2025 Meet

Garhwal Post Bureau

ROORKEE, 20 Nov: The One Health One World (OHOW) 2025 programme, organised by CSIR-Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, began its main event today at Hotel Claris Safari, Roorkee-Haridwar. The international gathering saw participation from 13 countries, with 350+ participants and 50+ delegates from different nations.

The programme opened with ceremonial lamp lighting performed by the distinguished guests.

Dr Ajay Chourasia, (Organising Secretary) welcomed all guests and participants and delivered an overview of the event. He highlighted key themes including infrastructure, infrastructure management, public health research in Asia, climate change, sustainable development, and disaster mitigation.

The Director of CSIR-CBRI then addressed the gathering, welcoming all international and national delegates. He spoke about India's growing economy, the importance of disaster resilience, ongoing retrofitting activities, and the nation's commitment toward building a safer and sustainable future.

A professor from the University of Tokyo, (Conference, Co-Chair) Dr Wataru Takeuchi, Institute of Industrial Science, extended warm greetings to everyone present. He spoke on the OHOW vision, touching on One Health One World, infrastructure development, disaster mitigation, and disaster resilience, while also appreciating CSIR-CBRI for successfully hosting the global programme.

Professor CVR Murty welcomed all guests and shared his insights on disaster-related issues and research developments.

Dr Krishna S Vatsa, Member of the National Disaster Management Authority (NDMA), addressed the audience next. He spoke about modern engineering and infrastructure in Roorkee, the historic water canal system, and India-Japan collaboration in disaster management. He also acknowledged Japan's leadership and commitment to global disaster resilience.

The Chief Guest, Professor Kimiro Meguro, Co-Founder of the World Seismic Safety Institute, expressed gratitude for the invitation. He delivered an impactful address on climate change, industrial disasters, and the importance of scientific and sustainable approaches. He also appreciated Professor Pradeep for his vision and dedication and wished CSIR-CBRI great success for the programme.

The programme concluded with a formal Vote of Thanks delivered by Dr Ajay Chourasia.

After this, different lectures were delivered by various Professors.

A lecture was given by Professor Kimiro Meguro on the topic, "Comprehensive Disaster Management System for Minimising Negative Impact".

After this lecture was given by Dr Krishna S Vatsa and Dr Jun Fu Chai.

After this, lectures were given on Urban Safety and Disaster Mitigation. Infrastructure Management and Sustainable Built Environment, International Public Health Research in Asia, Climate Change and Green Recovery by Professors and Scientists.

Presented in Garhwal Post Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 19.11.2025

CBRI Hosts Pre-Conference Event for the 4th International Symposium on “One Health, One World”

- Pre-conference workshop titled “One World, Many Hazards” organised at CSIR–CBRI
- Participants from University of Tokyo (Japan), COER University and AcSIR India presented posters and oral talks

प्रतिष्ठित तिथि: 18 NOV 2025 6:38PM by PIB Dehradun

CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, organised a pre-conference event titled “One World, Many Hazards” today as part of the upcoming 4th International Symposium on One Health, One World (OHOW-2025).



Participants from the University of Tokyo, Japan, COER University and AcSIR India actively took part in the programme, showcasing their ideas and research through hand-drawn chart-based art forms. Their posters highlighted various global hazards including earthquakes, landslides, pollution, heart-health concerns and pandemic situations. They also presented combined issues along with possible solutions, which were discussed in detail during the session. The poster display was followed by oral presentations, reflecting the participants' creativity, scientific temperament and interdisciplinary approach.



The pre-conference workshop sessions were chaired and the presentations evaluated by Dr. D. P. Kanungo and Organizing Secretary Dr. Ajay Chourasia. The programme was coordinated by Dr. Debdutta Ghosh and Dr. R. Siva Chidambaram.

The event served as a dynamic platform for knowledge exchange and strengthened international collaboration toward addressing global hazards under the overarching theme of “One Health, One World.”

(मिस्त्रिण, आर्ददी २१०१३३०) आर्गनक एडल - १६३

Presented on : <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191330>

‘एक स्वास्थ्य-एक विश्व’ पर सम्मेलन पर चर्चा

रुड़की, 18 नवम्बर (अनिल):
केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान
(सीबीआरआई) में ‘एक स्वास्थ्य,
एक विश्व’ विषय पर आगामी चौथी
अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के तहत सम्मेलन-
पूर्व कार्यशाला का आयोजन किया
गया। ‘एक विश्व-अनेक संकट’ शीर्षक
से हुए इस कार्यक्रम में टोक्यो
विश्वविद्यालय (जापान), सीओईआर
विश्वविद्यालय तथा एसीएसआईआर
इंडिया के प्रतिभागियों ने सक्रिय
भागदारी दर्ज की।

प्रतिभागियों ने चर्चा पर हस्तनिर्मित
कलाकृतियों के माध्यम से भूकंप,
भूस्खलन, प्रदूषण, हृदय-स्वास्थ्य
समस्याओं और महामारी जैसे विविध
आपदाओं से जुड़े मुद्दों को प्रस्तुत किया।
उन्होंने इन चुनौतियों से निपटने के
संभावित समाधान भी साझा किए, जिन
पर सत्र के दौरान विस्तार से चर्चा की



सम्मेलन में प्रतिभाग करते प्रतिनिधिगण।

गई। पोस्टर प्रदर्शन के बाद हुई मौखिक
प्रस्तुतियों ने प्रतिभागियों की
रचनात्मकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण
को उजागर किया। कार्यशाला के सत्रों
की अध्यक्षता तथा मूल्यांकन
डॉ. डीपी कानूनगो और डॉ. अजय
चौरसिया ने किया।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. देबदत्त

घोष और डॉ. आर. शिवचिदंबरम द्वारा
किया गया।

यह सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला ज्ञान-
विनिमय का प्रभावी मंच सिद्ध हुई और
‘एक स्वास्थ्य, एक विश्व’ के
आपकविषयके अंतर्गत वैश्विक स्तरों
से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय
सहयोग को सुदृढ़ किया।

Presented in Garhwal Post Newspaper

सीएसआईआर-सीबीआरआई में “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी से पहले सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला हुई आयोजित।



सीएसआईआर-सीबीआरआई में “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी से पहले सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला हुई आयोजित।

जापान व भारत के शोधार्थियों ने आपदाओं और स्वास्थ्य चुनौतियों पर रखे विचार



रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई में आगामी चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” की तैयारियों के तहत आज सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। “एक विश्व, अनेक संकट” विषय पर आधारित इस विशेष सत्र में भारत, जापान और अन्य देशों के शोधार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए वैश्विक खतरों और समाधान पर गहन विचार-विमर्श किया।

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई में आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” की तैयारियों के तहत आज सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। “एक विश्व, अनेक संकट” विषय पर आधारित इस विशेष सत्र में भारत, जापान और अन्य देशों के शोधार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए वैश्विक खतरों और समाधान पर गहन विचार-विमर्श किया।



पोस्टर प्रदर्शन के बाद हुए मौखिक प्रस्तुतिकरण प्रतिभागियों की वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता और शोध दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण रहे।



कार्यशाला के सत्रों की अध्यक्षता और मूल्यांकन डॉ. जी. पी. कानूनगो और डॉ. अजय चौरसिया द्वारा किया गया, जबकि कार्यक्रम का सफल समन्वयन डॉ. देबदत्त घोष और डॉ. आर. शिव चिदेबरम ने किया।

Presented on: <https://www.shrisangamnews.in/Home/NewsDetails/513>



"एक स्वास्थ्य, एक विश्व" पर आयोजित होने वाली चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए सीबीआरआइ रुड़की की ओर से आयोजित सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम में उपस्थित विज्ञानी और प्रतिभागी • साभार-संस्थान

आपदाओं से जुड़ी समस्याओं और संभावित समाधानों को किया प्रस्तुत

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की ने "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" पर चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए मंगलवार को सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसका शीर्षक "एक विश्व, अनेक संकट" रहा। 20 नवंबर को तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ होगा।

सीबीआरआइ रुड़की परिसर में सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम में टीक्यो विश्वविद्यालय, जापान, सीओईआर विश्वविद्यालय तथा एसीएसआइआर इंडिया के प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस दौरान चार्ट पर बनाई गई

कलाकृतियों के माध्यम से विचारों और शोध को प्रदर्शित किया गया। जिसमें भूकंप, भूस्खलन, प्रदूषण, हृदय-स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और विभिन्न आपदाओं से जुड़ी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया। सम्मेलन पूर्व कार्यशाला सत्रों की अध्यक्षता एवं प्रस्तुतियों का मूल्यांकन डा. डीपी कानूनगो और डा. अजय चौरसिया व समन्वयन डा. देबदत्त घोष और डा. आर शिव चिदंबरम ने किया। अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजन सचिव एवं संस्थान के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया ने बताया कि कार्यक्रम ने ज्ञान के आदान-प्रदान को एक मंच के रूप में कार्य किया।

Presented in Sabhar Sansthan Newspaper

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" 2025 के दूसरे दिन प्री-कॉन्फ्रेंस छात्र कार्यशाला का आयोजन

- भारत और जापान के छात्रों और प्रोफेसरों ने एक व्यावहारिक संरचनात्मक इंजीनियरिंग कार्यशाला में भाग लिया।
- सात टीमों ने "भवन और पुल" विषय पर काम किया, जिसका मार्गदर्शन सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ विशेषज्ञों ने किया।

प्रतिष्ठित तिथि: 19 NOV 2025 7:32PM by PIB Dehradun

"एक स्वास्थ्य, एक विश्व" 2025 कार्यक्रम के दूसरे दिन सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में एक उल्लाहपूर्ण प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें भारत और जापान के युवा प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस कार्यक्रम में कुल 23 छात्रों और टीकों विश्वविद्यालय, टीको टेकी (जापान), टीआईईटी पंजाब, एनआईटी उज्जैन, सीआईआर विश्वविद्यालय तथा अकादमी ऑफ साइंटिफिक एंड इन्वेंटिव रिसर्च (एसीआईआर), सहित विभिन्न संस्थानों के चार प्रोफेसरों ने हिस्सा लिया।



कार्यशाला के लिए छात्रों को सात टीमों में विभाजित किया गया, जिन्हें "बिल्डिंग्स एंड ब्रिज्स" की थीम पर कार्य करना था। प्रतिभागियों का उत्साह और ऊर्जा पूरे सत्र को बेहद रोचक और सहयोगात्मक बनाते रहे। "सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ विशेषज्ञों—डॉ. जी. पी. कामरूंगे, डॉ. अजय चौरासिया (आयोजन सचिव), डॉ. देवदत्ता घोष और डॉ. आर. शिवा चिदंबरम (प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला समन्वयक)—ने छात्रों से सलाह किया और भवन डिजाइन, पुल संरचनाओं तथा आधुनिक अवसरों से जुड़े महत्वपूर्ण विचार साझा किए।

डॉ. अजय चौरासिया ने सभी छात्रों और प्रोफेसरों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा और स्क्वयर कॉन्सेप्ट समझने के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।



डॉ. जी. पी. कामरूंगे ने भी छात्रों को संबोधित किया और आज के समय में अवसरों विकास के महत्व पर जोर दिया। चौड़ाईपूर्ण माहौल बनाने के लिए डॉ. अजय चौरासिया ने सभी प्रतिभागियों को गुलाब भेंट किए। इसके बाद डॉ. आर. शिवा चिदंबरम और डॉ. देवदत्ता घोष ने इमारतों और पुलों के विषय पर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसमें उन्होंने संरचनात्मक डिजाइन से संबंधित व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा की।

डॉ. जी. पी. कामरूंगे ने भी छात्रों को संबोधित किया और आज के समय में अवसरों विकास के महत्व पर जोर दिया। चौड़ाईपूर्ण माहौल बनाने के लिए डॉ. अजय चौरासिया ने सभी प्रतिभागियों को गुलाब भेंट किए। इसके बाद डॉ. आर. शिवा चिदंबरम और डॉ. देवदत्ता घोष ने इमारतों और पुलों के विषय पर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसमें उन्होंने संरचनात्मक डिजाइन से संबंधित व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा की।



इन विचार-विमर्शों के बाद छात्रों की टीमों ने अपने-अपने स्क्वयरल मॉडल तैयार किए, जिन्हें बाद में महत्वपूर्ण लोडिंग परिस्थितियों के तहत परीक्षण किया गया। यह कार्यशाला अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच साबित हुई और छात्रों को स्क्वयरल इंजीनियरिंग में नवाचारपूर्ण विचारों को खोजने के लिए प्रेरित किया।

(रिलीज़ आईडी: 2191825) आगूक पटल : 17
इस विज्ञापित को इन भाषाओं में पढ़ें: English

Presented on: <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191825>

CSIR-CBRI Roorkee Hosts Second Day of “One Health, One World 2025”

- Students and professors from India and Japan participated in a hands-on structural engineering workshop.
- Seven student teams worked on the theme “Buildings and Bridges,” guided by senior CSIR-CBRI experts.

प्रसिद्धि तिथि: 19 NOV 2025 7:19PM by PIB Dehradun

The second day of the OHOW 2025 program at CSIR-CBRI Roorkee was marked by an engaging pre-conference workshop that brought together young minds from India and Japan. A total of 23 students and four professors from University of Tokyo, Tokyo Denki from Japan, TIET Punjab, NIT Uttarakhand, COER University, AcSIR from India participated in the event.



For the workshop, the students were divided into seven teams, working on the theme “Buildings and Bridges.” The energy and excitement among the participants made the session lively and collaborative.

Senior experts from CSIR-CBRI interacted with the students, including Dr. D.P. Kanungo, and Dr. Ajay Chourasia (Organising Secretary), Dr. Debdutta Ghosh and Dr. R. Siva Chidambaram (Co-ordinators of Pre-Conference Workshop). They discussed various ideas related to building design, bridge structures, and modern infrastructure.



Dr. Ajay Chourasia welcomed all the students and professors, sharing insights about the program and the importance of understanding structural concepts. Dr. D.P. Kanungo also addressed the students. He highlighted the significance of infrastructure development in today's world.

As a warm gesture, Dr. Ajay Chourasia presented roses to all the participants. Later, Dr. R. Siva Chidambaram and Dr. Debdutta Ghosh provided technical guidance on buildings and bridges, explaining practical aspects such as design approach used in building and bridge structures.

Presented on: <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191817>

CSIR-CBRI in the Limelight | 18.11.2025

दैनिक जागरण

सीबीआरआइ में जुटेंगे विश्वभर के विज्ञानी

संवाद सहयोगी, जागरण • रुड़की : सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआइ), रुड़की 20 से 22 नवंबर तक 'वन हेल्थ, वन वर्ल्ड' 2025 अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी करेगा। इसमें विश्वभर के विज्ञानी, शोधकर्ता और नीति-निर्माता जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन पर विचार साझा करेंगे। इस आयोजन की अध्यक्षता सीएसआइआर-सीबीआरआइ में निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार और टोक्यो विश्वविद्यालय के प्रो. वातरु ताकेउची करेंगे। टोक्यो विवि जापान के सहयोग से आयोजित इस संगोष्ठी का संयोजन सेक्रेटरी डा. अजय चौरसिया, मुख्य वैज्ञानिक सीएसआइआर सीबीआरआइ करेंगे। यह वैश्विक स्तर का सम्मेलन जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, सतत अवसंरचना और सामुदायिक सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर केंद्रित होगा। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में टोक्यो विवि के प्रो. किमीरो मेगुरो मुख्य अतिथि होंगे, जो 'जापान में आदर्श आपदा प्रबंधन उपायों' पर विशेष व्याख्यान देंगे। वहीं, एनडीएमए के सदस्य डा. कृष्णा एस वत्स 'पोस्ट-डिजास्टर रीइस असेसमेंट और भारत की आपदा तैयारी' पर विचार प्रस्तुत करेंगे। तीन दिवसीय सम्मेलन में 70 से अधिक अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों सहित 350 से अधिक प्रतिभागियों के जुटने की उम्मीद है।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

10 Garhwal Post www.garhwalpost.in Dehradun, 18 Nov, 2025 Dehradun

CSIR-CBRI, Roorkee hosts curtain raiser for India International Science Festival 2025

Garhwal Post Bureau

ROORKEE, 17 Nov: CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organised the Curtain Raiser Programme of the 11th India International Science Festival (ISF) 2025 on 17 November at the ISF Auditorium, here. This year the festival is being coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India, and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune, in the Noida Institute. ISF 2025 will be held from 6 to 9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with lighting of the lamp followed by the National Song. The programme was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of ISF along with today's curtain raiser programme and informed them that this year, the ISF theme is "Vigyan Se Samruddhi" - for Atmanirbhar Bharat - for Atmanirbhar Bharat. He said that ISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, education, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Atmanirbhar Bharat.

Present were Dr. DP Kanungo, Senior-most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Anubhush Ratni (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Diphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun, & Member, Vigyan Bhawan. Students from Mount Carmel School, PMS RB Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members. Dr. DP Kanungo explained the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development. He emphasised nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that the festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. ISF encourages us to view where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr. Ratni conveyed his best wishes for the ISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration. Chief Guest Dr. Anubhush Ratni delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science and space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also spoke about the mission of Vigyan Bhawan and ISF. He said, "We stand at the crossroads of rapid technological changes. India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. ISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully." Following his lecture, Dr. Ratni was felicitated with a memento by Dr. DP Kanungo. Another scientific lecture was delivered by Dr. Soumitra Mallik, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilization for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr. Hemlata, Senior Scientist, followed by the national anthem. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr. PC Thakral, Viswajit Saha, Dr. Tabish Akhtar, Dr. Chanchal, Dr. Parvika Poo, Ramesh Singh, Anu, Rajan Singh, Rishi Sankar, etc.

Presented in Garhwal Post Newspaper

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टेन रेजर कार्यक्रम आयोजित

○ इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत है ○ आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विभागों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है ○ 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल का कर्टेन रेजर कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ

प्रधान मंत्री मोदी का संबोधन (सीएसआईआर-सीबीआरआई)। कर्तव्य का पालन करना (17 नवंबर 2025) का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विभागों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है ○ 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल का कर्टेन रेजर कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ



11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल का कर्टेन रेजर कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ। इस अवसर पर आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रमों में शामिल होकर देश के विज्ञान प्रेमियों को एक मंच पर लाना है।

इस अवसर पर आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रमों में शामिल होकर देश के विज्ञान प्रेमियों को एक मंच पर लाना है।

Presented in local Newspaper

देहरादून, मंगलवार 18 नवंबर 2025 दैनिक कलम का दायित्व पृष्ठ 7

CBRI , रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टेन रेजर कार्यक्रम आयोजित

प्रीति श्री
17 नवंबर 2025

भारत के उदय विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवोन्मेषकों को एक मंच पर लाना है।

11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल का कर्टेन रेजर कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ।

इस अवसर पर आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रमों में शामिल होकर देश के विज्ञान प्रेमियों को एक मंच पर लाना है।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

Science is not only for laboratories but also the foundation of national development, self-reliance and sustainable development: CBR Roorkee hosted the curtain raiser program for India International Science Festival 2025

Vo.No.22 Issue No. 48 Date: 18-11-2025 RNI No. UTTUR/2004/14529

ماہنامہ صحافت

SAHAFAT URDU DAILY, DEHRADUN

Published From DEHRADUN, Lucknow, Delhi & Mumbai

سائنس صرف تجربہ گاہوں کیلئے نہیں بلکہ قومی ترقی اور باہر ترقی کی بنیاد ہے

سائنس آری رقی: رقی علم اشدنا انشرا منسلسل سائنس فیسٹیول 2025: منسلسل برودہ انشاسی و اوسر پروگرام کی منسلسل میں

11th India International Science Festival 2025: The curtain-raising program was held at Roorkee on November 17, 2025. The event was organized to provide a platform for scientists, innovators, teachers, students, industry, science communication, and policy-makers.

Presented in Sahafat urdu daily Newspaper

नवाचार सोच को बढ़ावा देने पर जोर

सीबीआरआई में साइंस फेस्टिवल का कर्टेन रेज़र

रुड़की, लोकसत्य।

सीबीआरआई, रुड़की में सोमवार को इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें नवाचारों और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने पर विशेष फोकस रहा। इस वर्ष महोत्सव की थीम "विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत" तय की गई है। कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों और उद्योग विशेषज्ञों को एक मंच पर लाना है। आईआईएसएफ का मुख्य आयोजन 6 से 9 दिसंबर तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में होगा।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप



इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम शुभारंभ करते अतिथि।

प्रज्वलन और बंदे मातरम से हुई। ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने स्वागत भाषण में कहा कि विज्ञान राष्ट्र की प्रगति और आत्मनिर्भरता का मजबूत आधार है। उन्होंने बताया कि आईआईएसएफ आपसी सहयोग और ज्ञान-साझाकरण को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

सीबीआरआई के वरिष्ठ

वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानूनगो और मुख्य अतिथि डॉ. आशिष रतुड़ी की उपस्थिति कार्यक्रम को मुख्य आकर्षण रही। डॉ. कानूनगो ने छात्रों को विज्ञान और तकनीक अपनाने तथा देश के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित किया। मुख्य अतिथि डॉ. रतुड़ी ने खगोल विज्ञान पर सरल और रोचक व्याख्यान दिया।

Presented in local Newspaper

कार्यक्रम

इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम "विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत" है।

सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव आयोजित

आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य
वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संकायों और निजी-मिनिमिअलिटी को एक मंच पर लाना है।

भौतिक विषय, डॉकिंग इंटरैक्टिव और क्विज़ों के माध्यम से प्रदर्शन, देशभर से आए विद्वानों के साथ, विशेषज्ञों के आभार, देश एवं दुनिया के विकास, स्वतंत्र, अंतर्राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी तथा अकाश को सम्पन्न में खगोल विज्ञान को उन्मेषित पर प्रकाश डाला। उन्होंने विज्ञान भारती और IISF के निरत के बारे में भी जानकारी दी। व्याख्यान के उपरान्त डॉ. रतुड़ी का सम्मान डॉ. डी. पी. कानूनगो द्वारा सम्प्रेषित भेट कर किया गया। इसके अतिरिक्त सीबीआरआई-सर्वोत्कृष्टता के प्रथम वैज्ञानिक डॉ. सीमा मीनो द्वारा 'बिजनेस में विज्ञान' के विकास दिग्दर्शक प्रदर्शन एवं कर्नाट कुटीर में कमी के माध्यम से चर्चा की गई। कार्यक्रम में डॉ. पीके वर्दीवाल, विज्ञान अतिथि डॉ. जितेंद्र आर्या, डॉ. चंचल, डॉ. अश्विनी शर्मा, डॉ. रवीश, राज, अरुण, जे. इन्द्र, जे. पार्वी, जे. संस्कृति अदि उपस्थित थे।

अभार विद्वान
 प्रमुख। सीबीआरआई-केन्द्रित धन अनुभव संयम सीबीआरआई-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल आयोजन 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आरंभ। अतिथि डॉ. नीरज जैन ने स्वागत भाषण में कहा कि विज्ञान राष्ट्र की प्रगति और आत्मनिर्भरता का मजबूत आधार है। उन्होंने बताया कि आईआईएसएफ आपसी सहयोग और ज्ञान-साझाकरण को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

Presented in Hindustan Newspaper

CSIR-CBRI, Roorkee host curtain raiser event for the India International Science Festival (IISF) 2025

- This year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat."

- IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry experts, science communicators, and policymakers.
- The curtain raiser event of the 11th India International Science Festival was held on November 17, 2025, at the RNT Auditorium.

प्रविष्टि तिथि: 17 NOV 2025 5:41PM by PIB Dehradun

Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 held at CSIR-CBRI Roorkee. CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organized the Curtain Raiser Program of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6-9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.



The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members. Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr. R. Pradeep Kumar, The Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser,



Chief Guest of the function, Dr. Aasheesh Raturi, delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also informed about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully.

Today's curtain raiser is not just the launch of an event. It marks the beginning of a collective journey that reflects India's growing role as a global leader in science and technology, and our commitment to building a future that is inclusive, sustainable and driven by knowledge. Following his lecture, Dr. Raturi was felicitated with a memento by Dr. D. P. Kanungo.



Another scientific lecture was delivered by Dr. Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilization for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr. Hemlata, Senior Scientist, followed by Rashtryagaan. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr. P. C. Thapliyal, Shri Vineet Saini, Dr. Tabish Aalam, Dr. Chanchal, Dr. Anindiya Pine, Shri Rajender, Shri Rajnish, Shri Ajuj, Shri Rajat, Kumari Iqra, Kumari Rashi, Kumari Sanskriti etc.

Published: <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2190888®=46&lang=45>

Home / राज्य / उत्तराखंड

Uttarakhand : CBRI Roorkee Hosts Curtain Raiser of India International Science Festival 2025



YUGVARTA NEWS
Lucknow, 17 Nov, 2025 08:00 PM



Roorkee : Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 was held at CSIR-CBRI, Roorkee on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year, the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India, and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year's theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.

The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior-most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated along with faculty members.

Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories but is the foundation of national prosperity, innovation, and sustainable development. He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology, and the limitless spirit of innovation that defines our nation.

Dr. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.

Chief Guest Dr. Aasheesh Raturi delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy to encourage scientific interest among students. He discussed the primary importance of physics, the relevance of astronomy, evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology, and the use of astronomy to navigate the night sky. He also informed attendees about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as India stands at the crossroads of rapid technological transformations, the nation needs innovators who can solve real-world challenges—from climate issues to healthcare, agriculture, and digital transformation.

Published in : <https://yugvartanews.com/state/uttrakhand/post/uttarakhand-CBRI-Roorkee-Hosts-Curtain-Raiser-of-India-International-Science-Festival-2025-3754>

Ministry of Science & Technology



CSIR-CBRI, Roorkee host curtain raiser event for the India International Science Festival (IISF) 2025

- This year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat."
- IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry experts, science communicators, and policymakers.
- The curtain raiser event of the 11th India International Science Festival was held on November 17, 2025, at the RNT Auditorium.

प्रविष्टि तिथि: 17 NOV 2025 5:41PM by PIB Dehradun

Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 held at CSIR-CBRI Roorkee. CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organized the Curtain Raiser Program of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6-9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.



The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members. Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr. R. Pradeep Kumar, The Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.



Chief Guest of the function, Dr. Aasheesh Raturi, delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also informed about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully.

Today's curtain raiser is not just the launch of an event. It marks the beginning of a collective journey that reflects India's growing role as a global leader in science and technology, and our commitment to building a future that is inclusive, sustainable and driven by knowledge. Following his lecture, Dr. Raturi was felicitated with a memento by Dr. D. P. Kanungo.



Another scientific lecture was delivered by Dr. Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilization for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr. Hemlata, Senior Scientist, followed by Rashtriyagaan. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr. P. C. Thapliyal, Shri Vineet Saini, Dr. Tabish Aalam, Dr. Chanchal, Dr. Anindiya Pine, Shri Rajender, Shri Rajnish, Shri Ajuj, Shri Rajat, Kumari Iqra, Kumari Rashi, Kumari Sanskriti etc.

(रिलीज़ आईडी: 2190888) आगतुक पटल : 18
इस विज्ञापि को इन भाषाओं में पढ़े: Hindi_Ddn

विज्ञान से समृद्धि' थीम के साथ आईआईएसएफ 2025 का आगाज़

by cradmin | November 17, 2025 | 0 | 43


[Home](#)
[राष्ट्रीय](#)
[अन्तर्राष्ट्रीय](#)
[उत्तराखंड](#)
[राजनीति](#)
[अपराध](#)
[जीवन शैली](#)
[More](#)

NOVEMBER 18, 2025



देहरादून/रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम आरएनटी ऑडिटोरियम में संपन्न हुआ। इस वर्ष महोत्सव की थीम “विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत” निर्धारित की गई है। आईआईएसएफ 2025 का मुख्य आयोजन 6 से 9 दिसंबर 2025 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में होगा।

इस वर्ष विज्ञान महोत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रोपिकल मीटिरियोलॉजी (आईआईटीएम), पुणे नोडल संस्थान है। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन एवं वंदे मातरम के साथ हुई। ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने सभी अतिथियों, वैज्ञानिकों, संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए आईआईएसएफ की थीम और कार्यक्रम के उद्देश्यों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि महोत्सव का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों और नीति-निर्माताओं को एक साझा मंच प्रदान कर भारत की वैज्ञानिक प्रगति और आत्मनिर्भरता को नई दिशा देना है।

कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो और मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतुड़ी (प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टीट्यूट, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती) की गरिमामयी उपस्थिति रही। माउंट लिटेरा ज़ी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 एवं बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थी भी बड़ी संख्या में कार्यक्रम में शामिल हुए।

डॉ. कानूनगो ने विद्यार्थियों को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के महत्व पर प्रेरक संदेश देते हुए कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्र की समृद्धि और सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आयोजन के लिए शुभकामनाएं दीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण कदम बताया।

मुख्य अतिथि डॉ. रतुड़ी ने विद्यार्थियों के लिए खगोल विज्ञान पर रोचक व्याख्यान दिया। उन्होंने भौतिकी की भूमिका, दूरबीनों के विकास, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, साइंस सफारी तथा आकाश को समझने में खगोल विज्ञान की भूमिका पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बदलते तकनीकी युग में भारत को ऐसे नवोन्मेषकों की आवश्यकता है, जो जलवायु, स्वास्थ्य, कृषि एवं डिजिटल परिवर्तन जैसे क्षेत्रों में समाधान प्रस्तुत कर सकें।

कार्यक्रम में सीबीआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सौमित्रा मैती ने “बिल्डिंग मटेरियल्स के विकास हेतु अपशिष्ट उपयोगिता” विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण कम करने तथा कार्बन फुटप्रिंट घटाने पर महत्वपूर्ण विचार साझा किए।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. हेमलता ने आभार व्यक्त किया और राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ। कार्यक्रम उपरांत विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया। साथ ही हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के 50 विद्यार्थियों ने सीबीआरआई की प्रयोगशालाओं एवं प्रदर्शनी गैलरी का अवलोकन किया।

कार्यक्रम में डॉ. पी. सी. थपलियाल, विनीत सेनी, डॉ. तबिश आलम, डॉ. चंचल, डॉ. अनिद्य पाइन, राजेंद्र, रजनीश, रजत, अनुज, कु. इकरा, कु. राशी एवं कु. संस्कृति सहित कई अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

Home /

सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आयोजित

Uttarakhand News

सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आयोजित

👤 Admin - Er. Kapil Garg (B.E. Electronics)

🕒 November 17, 2025



कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो तथा मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतुड़ी, प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टिट्यूट ऑफ बायोमेडिकल एंड नेचुरल साइंसेज़, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती की गरिमामयी उपस्थिति रही। माउंट लिटेरा ज़ी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 तथा बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने संकाय सदस्यों के साथ उत्साहपूर्वक भाग लिया। डॉ. डी. पी. कानूनगो ने विद्यार्थियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय समृद्धि, नवाचार और सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने युवा मस्तिष्कों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और उन्हें भारत की आत्मनिर्भरता में योगदानकर्ता बनने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि यह उत्सव विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार की असीम भावना का उत्सव है। आईआईएसएफ उस दृष्टिकोण को दर्शाता है जिसमें विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति, आत्मनिर्भरता और सतत विकास की नींव है। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आईआईएसएफ 2025 कर्टेन रेज़र के लिए अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त कीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण आयोजन बताया।

PIB DDN-सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की द्वारा 11 वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इस वर्ष इस उत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी (आईआईटीएम), पुणे नोडल संस्थान है। आईआईएसएफ 2025 दिनांक 6-9 दिसंबर 2025 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में आयोजित किया जाएगा।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई तथा उसके उपरांत राष्ट्रीय गीत (वंदे मातरम) प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने किया, जिन्होंने सभी अतिथियों, निदेशक, संकाय सदस्यों, वैज्ञानिकों तथा छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने आईआईएसएफ तथा आज के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष का थीम “विज्ञान से समृद्धि : आत्मनिर्भर भारत है”। उन्होंने कहा कि आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है ताकि सहयोग, सृजनशीलता, ज्ञान के आदान-प्रदान के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दिया जा सके।

Published in : <https://galaxyinformer.com/archives/34373>

CSIR-CBRI in the Limelight | 08.11.2025



विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

जिज्ञासा 2.0 के अंतर्गत सीएसआईआर-सीबीआरआई में बाल दिवस पर उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

- कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में उद्यमिता और नवाचार को बढ़ावा देना, भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम से परिचित कराना तथा उपलब्ध संसाधनों, सहायता प्रणालियों और फंडिंग अवसरों की जानकारी देना था।
- विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया जहाँ उन्होंने सीबीआरआई की सतत, कम-लागत तथा सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित तकनीकों को देखा।

Posted On: 14 NOV 2025 10:25PM by PIB Dehradun

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन आवासन संरक्षण (सीबीआरआई), ऋतुवाही ने एएफएलआई द्वारा संचालित जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के अंतर्गत उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम (दूरदर्शी) आयोजित कर बाल दिवस मनाया। यह कार्यक्रम उद्यमिता इंटर कॉलेज, पूरकबी, मुद्रास्वच्छता-एनए की विद्यार्थियों के गैरुज में 125 विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में उद्यमिता और नवाचार की आवश्यकता को बढ़ावा देना, भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम से परिचित कराना, तथा उपलब्ध संसाधनों, सहायता प्रणालियों और फंडिंग अवसरों की जानकारी देना था, जिसका उद्देश्य युवा नवाचारकर्ता अपने विचारों को आगे बढ़ाने के लिए तैयार करके देना है।



कार्यक्रम की शुरुआत वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं जिज्ञासा 2.0 के नोडल अधिकारी डॉ. गौरव वैज के स्वागत कक्ष से हुई, जिसके बाद प्रधान वैज्ञानिक एवं सह नोडल अधिकारी डॉ. संदय सरस्वती जी ने छात्रों को सीएसआईआर-सीबीआरआई की सीमा एडि और समाजोपयोगी योगदानों से अवगत कराया। इस अवसर पर निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने बढ़ती वैश्वीकरण और सीमित सैलंगन अवसरों के संदर्भ में उद्यमिता जागरूकता के महत्व पर प्रभाव डालते हुए छात्रों को वास्तविक जीवन की समस्याओं की पहचान करने, नवाचारपूर्ण विचार विकसित करने तथा 'मैंक इन टॉटिंग' जैसी राष्ट्रीय पहलों के अनुरूप उन्हें व्यवहारिक उद्यमों में बदलने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने बताया कि उद्यमिता रचनात्मक सोच, लोखिम उत्पत्ती की क्षमता, नेतृत्व गुण, समझ समझाना कौशल और समय व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देती है, जिससे युवा आत्मनिर्भर और भीष्मत्वपूर्ण बनते हैं। व्यवस्थान सबसे से पहले विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया, जहाँ उन्होंने सीबीआरआई की सतत, कम-लागत तथा सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित तकनीकों को देखा और यह समझ कि वैज्ञानिक अनुसंधान समाज के विकास में कैसे योगदान देता है। तकनीकी छात्रों में 'भारत के उद्यमिता एवं स्टार्टअप इकोसिस्टम का परिचय'-इन्फोवेन, उद्यमिता एवं स्टार्टअप की समझ तथा 'समस्या पहचान, समाधान निर्माण, स्टार्टअप कैसे शुरू करें और सफलता की कहानी' शामिल थी।



समझाने की सिद्धांत कुमार नायक (प्रौद्योगिकी मैनेजर, टीआईसीईएस, आईआईटीएच), श्री गौरव वैज (सीईओ एवं संस्थापक, गोपेय) और डॉ. शिवानी शर्मा (मैनेजर, टीआईसीईएस, आईआईटीएच) द्वारा प्रदान किए गए, जिसने नवाचार समर्थन प्रणालियों, इन्फोवेन अवसरों और स्टार्टअप पाठ के व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तृत जानकारी साझा की। कार्यक्रम का समापन प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अरविण विगत और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. लक्ष्मी अलम के धन्यवाद शब्दों के साथ हुआ। संपूर्ण आयोजन ने वैज्ञानिक सीसा, नवाचार जागरूकता और व्यवहारिक अनुभव का उत्कृष्ट समन्वय प्रस्तुत किया, जिसने विद्यार्थियों को रचनात्मक सोच और समाजोपयोगी समाधान विकसित करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर रजनीश कुमार, मोहित नयात, संस्कृति शर्मा, इकत, अनुज कुमार, मंवीता कुमार, अमिता, अरवि कुमार, रजिता कुमार, विकास कुमार और राधिका कुमार भी उपस्थित रहे।

Published in : <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2190247>

CSIR-CBRI in the Limelight | 07.11.2025

क्विक रीड

छात्रों को दिया एडवांस सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण



प्रशिक्षण लेने वाले छात्र-छात्राएं।

रुड़की, 6 नवम्बर (अनिल): सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) रुड़की में सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के तहत कॉम्पोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्देश्य मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग और सिमुलेशन तकनीकों की गहन जानकारी देना था। प्रशिक्षण में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और सॉफ्टवेयर के माध्यम से व्यावहारिक सिमुलेशन सीखा। तकनीकी सत्रों का संचालन कॉम्पोल मल्टीफिजिक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की विशेषज्ञ टीम कृतिका राजे, शारजेद और हिमांशु अग्रवाल ने किया।

Presented in Dainik Jagran Newspaper



Share
Copy url
Save
Font Size
D'load Image
Image
Text
Listen

छात्रों को सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण दिया

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीबीआरआई) ने गुरुवार को सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के तहत कॉम्प्लेक्स मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की।

इसमें लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और सॉफ्टवेयर के माध्यम से व्यावहारिक सिमुलेशन प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों में मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग और सिमुलेशन तकनीकों की समझ को

■ सीबीआरआई के प्रशिक्षण में 40 छात्रों ने किया प्रतिभाग

सुदृढ़ करना और वैज्ञानिक सिद्धांतों व व्यावहारिक प्रयोगों के बीच संबंध स्थापित करना था। उद्घाटन सत्र में सीबीआरआई के हेड डॉ. नीरज जैन ने कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को निखारने का उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं। कॉम्प्लेक्स इंडिया की विशेषज्ञ टीम ने तकनीकी सत्रों का संचालन किया और प्रतिभागियों को

प्रायोगिक अभ्यासों के जरिए मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ताविश आलम ने किया।

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि आधुनिक सिमुलेशन टूल्स अपनाकर युवा शोधकर्ता नवाचार, डिजाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अधिगम को बढ़ावा दे सकते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता में सीबीआरआई और कॉम्प्लेक्स टीम के कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

Presented in Hindustan Newspaper

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के अंतर्गत कॉम्प्लेक्स मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

रुड़की (आफताब खान वरिष्ठ विशेष संवाददाता)। सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के अंतर्गत कॉम्प्लेक्स मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 6 अक्टूबर 2025 को किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों को मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग एवं सिमुलेशन तकनीक की समझ को सुदृढ़ करना तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों और व्यावहारिक प्रयोगों के बीच सेतु बनाना था।

कॉम्प्लेक्स मल्टीफिजिक्स एक जरूरत-परंपरा सिमुलेशन सॉफ्टवेयर है, जिसका उपयोग इंजीनियरिंग, वैज्ञानिक अनुसंधान, शिक्षा एवं औद्योगिक क्षेत्रों में डिजाइन, मॉडलिंग और विश्लेषण के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। इस कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और कॉम्प्लेक्स सॉफ्टवेयर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।



तकनीकी सत्रों का संचालन कॉम्प्लेक्स मल्टीफिजिक्स इंडिया प्रा. लि. की टीम — सुश्री कृत्तिका राजे (एक्जिक्यूटिव इंजीनियर), श्री शारजद (सॉल्यूशन इंजीनियर) एवं श्री हिमांशु अग्रवाल (टेक्निकल सेल्स इंजीनियर) द्वारा किया गया। उन्होंने सॉफ्टवेयर की प्रमुख विशेषताओं का प्रदर्शन किया और प्रतिभागियों को प्रायोगिक सिमुलेशन अभ्यासों के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान किया।

इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ताविश आलम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर/सीबीआरआई द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान

डॉ. नीरज जैन, हेड, ओडीएस, ने सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को व्यावहारिक रूप में निखारने का एक उत्कृष्ट माध्यम हैं।

सीएसआईआर/सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने प्रतिभागियों को कॉम्प्लेक्स जैसे आधुनिक सिमुलेशन टूल्स को अपनाने हेतु प्रेरित किया, जिससे वे नवाचार, डिजाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अधिगम को प्रोत्साहित कर सकें। कार्यक्रम का समापन एक

संवाददात्मक सत्र एवं प्रतिभागियों को सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ हुआ, जिसने सीएसआईआर/सीबीआरआई की तकनीकी उत्कृष्टता, क्षमता निर्माण और उन्नत कौशल विकास के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन कॉम्प्लेक्स टीम के सहयोग एवं सीबीआरआई के कर्मचारियों — राशी, इकरा, रजत, अमजुद, संस्कृति, महेश, अनुज, विकास एवं अजय — के समर्पित योगदान से संभव हो पाया, जिनके प्रयासों से कार्यक्रम का प्रभावी एवं सुचारु आयोजन सुनिश्चित हुआ।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

सहारा लाइव NEWS

हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उत्तराखंड

रुड़की द्वारा "सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव"



By Sahara Live News

NOV 6, 2025



CSIR-CBRI, Roorkee Organizes Training Program on COMSOL Multiphysics Software under CSIR Integrated Skill Initiative Roorkee, November 6, 2025.

The CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, organized a one-day training program on COMSOL Multiphysics software on 6th October 2025 under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. The workshop aimed to strengthen the participants' understanding of multiphysics modeling and computational simulation, bridging scientific theory with practical applications. COMSOL Multiphysics is a general-purpose simulation software widely used for modelling, design, and analysis in engineering, scientific research, education, and industry. Around 40 students from various universities participated in the program and received hands-on training in computational modelling using the COMSOL environment.

The technical sessions were conducted by the COMSOL Multiphysics India Pvt Ltd team — Ms. Kritika Raje (Applications Engineer), Mr. Sharjad (Senior Applications Engineer), and Mr. Himanshu Agrawal (Technical Sales Engineer) — who demonstrated the software's key features and guided the participants through interactive simulation exercises.

The program was coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, CSIR-CBRI. During the inaugural session, Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, outlined the objectives of the CSIR Integrated Skill Initiative, emphasizing the importance of enhancing technical capabilities through hands-on learning. Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, encouraged participants to adopt modern simulation tools like COMSOL to support innovation, design optimization, and research-oriented learning.

The program concluded with an interactive discussion and highly positive feedback from the participants, reflecting CSIR-CBRI's ongoing commitment to promoting technical excellence, capacity building, and advanced skill development through the CSIR Integrated Skill Initiative Program.

The training was effectively coordinated with the cooperation of the COMSOL Team, and dedicated support from CBRI staff members — Rashmi, Iqra, Rajat, Amjad, Sanakriti, Mahesh, Anuj, Vikas, and Ajay, whose efforts ensured the successful execution of the event.

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा "सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव" के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन रुड़की, 6 नवंबर 2025.

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 6 नवंबर 2025 को किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों की मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग एवं सिमुलेशन तकनीक की समझ को सुदृढ़ करना तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों और व्यावहारिक प्रयोगों के बीच सेतु बनाना था।

कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स एक सामान्य-उद्देश्य सिमुलेशन सॉफ्टवेयर है, जिसका उपयोग इंजीनियरिंग, वैज्ञानिक अनुसंधान, शिक्षा एवं औद्योगिक क्षेत्रों में डिजाइन, मॉडलिंग और विश्लेषण के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। इस कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और कॉम्सोल सॉफ्टवेयर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तकनीकी सत्रों का संयोजन कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स इंडिया प्रा. लि. की टीम — सुशी कृषिका (एप्लिकेशन इंजीनियर), श्री शारजाद (सीनियर एप्लिकेशन इंजीनियर), श्री हिमंशु अग्रवाल (टेक्निकल सेल्स इंजीनियर) द्वारा किया गया। उन्होंने सॉफ्टवेयर की प्रमुख विशेषताओं का प्रदर्शन किया और प्रतिभागियों को प्रारंभिक सिमुलेशन अभ्यासों के माध्यम से समर्थन प्रदान किया।

इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. तबिश अलम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. नीरज जैन, हेड, ओडीएस, ने सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को व्यावहारिक रूप में निखारने का एक उत्कृष्ट माध्यम है। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार ने प्रतिभागियों को कॉम्सोल जैसे आधुनिक सिमुलेशन टूल को अपनाने हेतु प्रेरित किया, जिससे वे नवाचार, डिजाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अभियान को प्रोत्साहित कर सकें।

कार्यक्रम का संचालन एक संयोजक सत्र एवं प्रतिभागियों की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ हुआ, जिसने सीएसआईआर-सीबीआरआई की तकनीकी उत्कृष्टता, क्षमता निर्माण और उन्नत कौशल विकास के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को एक स्थापित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन कॉम्सोल टीम के सहयोग एवं सीबीआरआई के कर्मचारियों — राशी, इकरा, राजत, अमजद, संकृति, महेश, अनुज, विकास एवं अजय — के समर्थित योगदान से संभव हो पाया, जिनके प्रयासों से कार्यक्रम का प्रभावी एवं सुचारु आयोजन सुनिश्चित हुआ।

सहारा लाइव
NEWS
हर खबर पर पैनी नजर

🏠 अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उत्तराखंड

School students of PM Shri Kendriya Vidyalaya Visited CBRI Roorkee

By Sahara Live News
© OCT 27, 2025



Roorkee, October 2025:

CSIR–Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee successfully organized a Jigyasa 2.0 Program for 120 students and 6 faculty members from PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, aimed at nurturing scientific curiosity and promoting experiential learning among young minds.

The program began with a visit to Dr. Billing's Exhibition Gallery, where students witnessed several live demonstrations of CBRI's cutting-edge technologies — including the Shri Ram Mandir model with the Surya Tilak mechanism, High Draught Zig-Zag Brick Kiln Technology for energy-efficient brick production, and disaster-resilient building systems promoting safe and sustainable construction.

An interactive session held at the RNT Auditorium commenced with a welcome address by Dr. Neeraj Jain, Senior Principal Scientist & Nodal Officer (Jigyasa 2.0), followed by Dr. S.K. Panigrahi, Chief Scientist, who highlighted the importance of developing scientific temperament among students through practical exposure and learning.

Insightful lectures were delivered by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, on "Utilisation of Solar Energy in Houses", emphasizing the role of solar architecture and renewable technologies in sustainable living, and Dr. Hemlata, Senior Scientist, on "Waste Plastic Composites as Building Components", introducing innovative ways of recycling plastic waste into eco-friendly construction materials.

Students also visited the Rural Technology Park, Fire Safety Engineering Laboratory, and Structural Engineering Division (3D Printing Facility), where they experienced firsthand the applications of scientific research in real-life construction and safety scenarios.

The program concluded with an engaging interaction between students and scientists, encouraging them to pursue science and innovation for a sustainable future. The initiative reflected CSIR–CBRI's continuous efforts under the Jigyasa 2.0 initiative to connect laboratory research with classroom learning and inspire the next generation of innovators.

The visit was coordinated with active participation and support from Shri V.K. Nautiyal, Principal and teachers, PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, along with CBRI staff members Rashi, Rajat, Amzad, Sanskriti, Mahesh, Anuj, Vikas, and Ajay, who ensured the smooth execution and coordination of the program activities.

"Director CBRI emphasises that JIGYASA is one of the most significant initiatives that the CSIR undertook at the national level during its Platinum Jubilee Celebration Year, as an inspired vision of a new India and Scientific Social Responsibility (SSR) of the Institution. He also wishes bright future for all the student participants.

उन्नत आवासीय समाधानों के लिए शोध नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता

जागरण संवाददाता, रुड़की : विश्व आवास दिवस पर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती एवं सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों एवं नवाचारों को बढ़ावा देना था।

संस्थान में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि सीबीआरआई सतत, किफायती और तकनीकी दृष्टि से उन्नत आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस दिशा में शोध, नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी जा रही है। मुख्य वैज्ञानिक डा. नीरज जैन ने टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। वहीं अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित एईओएन इंटीग्रेटेड बिल्डिंग डिजाइन कंसल्टेंट्स एलएलपी के मैनेजिंग पार्टनर आशीष राखेजा, डा. पीके दास, प्रो. भूपिंदर सिंह, प्रो.



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में विश्व आवास दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागी • सागढ़-संस्थान

राजशेखर, डा. केएस कुलकर्णी और इंजीनियर अस्वथी ने व्याख्यान के माध्यम से आवासीय विकास में अनुसंधान, नई एवं टिकाऊ तकनीकों, स्मार्ट सिटी अवधारणाओं, पर्यावरण अनुकूल निर्माण और समाज में आवास की गुणवत्ता बढ़ाने के उपायों पर जानकारी दी। साथ ही आधुनिक आवासीय निर्माण के नवीनतम रुझानों, चुनौतियों और संभावित समाधानों के बारे में जागरूक किया। इस दौरान आवास पर केंद्रित एक वीडियो प्रदर्शित किया गया। जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण की चुनौतियों, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय

अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। वहीं पैनल चर्चा में विशेषज्ञों ने शहरी और ग्रामीण आवास, टिकाऊ निर्माण, ऊर्जा कुशल तकनीक, स्मार्ट सिटी और समाज में आवास की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अपनाए जाने वाले उपायों पर विचार साझा किए। पैनल चर्चा में उपस्थित सभी वक्ताओं ने तकनीकी दृष्टिकोण, प्रशासनिक पहल और नीति निर्माण में सहयोग के महत्व पर जोर दिया कार्यक्रम में प्रमुख विज्ञानी डा. मिवकी दलबेहरा, डा. ताबिश आलम, डा. नवीन निशांत आर्किटेक्ट अनूप, डा. चंदन स्वरूप मीणा, डा. हेमलता आदि उपस्थित रहे।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

टिकाऊ आवास से जीवन की गुणवत्ता सुधारने पर जोर

■ विश्व आवास दिवस पर सीबीआरआई में विशेष कार्यक्रम का आयोजन

रुड़की, 6 अक्टूबर (अनिल): विश्व आवास दिवस के अवसर पर सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने इस अवसर की प्रासंगिकता बताते हुए टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उद्घाटन भाषण



कार्यक्रम में प्रतिभाग करते अतिथि।

दिया और संस्थान की आवास निर्माण तथा शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की।

डॉ. केएस कुलकर्णी, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. नवीन निशांत द्वारा आवास पर केंद्रित एक विशेष वीडियो प्रदर्शित किया गया, जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण की

चुनौतियों, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। डॉ. नीरज जैन, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, डॉ. हेमलता, डॉ. ताबिश आलम, इंजीनियर अस्वथी और अन्य शामिल थे। कार्यक्रम का समापन डॉ. नीरज जैन द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

सुरक्षित आवास निर्माण की जानकारी दी

रुड़की, संवाददाता। विश्व आवास दिवस के अवसर पर सोमवार को सीबीआरआई में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने किया। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने संस्थान की आवास निर्माण, शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि सीबीआरआई सतत, किफायती दृष्टि से आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है।

Presented in Swatantra Chetna Newspaper

CCM N/A

सीबीआरआई ने दिखाई ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह: डॉ. पेम्मासानी

सीबीआरआई ने दिखाई ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह: डॉ. पेम्मासानी

- देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन
- पीएमवाई- (ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत



आयकर समाचार सेवा

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकता तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते डॉ. पेम्मासानी।

डॉ. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने कहा कि कच्चे दौरा से 3डी प्रिंटिंग तक भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उभारने का अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे परिधान का प्रतीक हैं, जहां आवास सरल, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी स्पष्ट है कि ग्रामीण परिवारों को आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है। 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला

सामाजिककरण और पारिवारिक कल्याण को बढ़ावा मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्टर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गुना शीतलय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से

अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत परिष्कृत जीवन शैली में सक्षम बनाया है। इस अवसर पर उन्होंने 'ग्राम - उत्तराखंड में ग्रामीण आवास' नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की संस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। उन्होंने सीबीआरआई से आभार

Express

Published in Dainik Bhaskar

देश के प्रथम श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

देश के प्रथम श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

केंद्रीय राज्य मंत्री **डा. पेम्मासानी** ने सीबीआरआई का किया दौरा



आवास संवर्धन, रुड़की: केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं संरक्षण राज्य मंत्री डा. पेम्मासानी ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमवाई-जी) के तहत देश के प्रथम श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि पीएमवाई-जी के तहत श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण घर सरकार के "विकसित भारत @ 2047" के लक्ष्य को पूरा करने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

उद्घाटन को केेंद्रीय ग्रामीण विकास एवं संरक्षण राज्य मंत्री डा. पेम्मासानी ने सीबीआरआई रुड़की का दौरा किया। उन्होंने श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते हुए कहा कि उद्यम और प्रतिबद्धता के साथ हम ग्रामीण आवास को बनाने से हकीकत में बचल रहे हैं। आज का श्रीडी प्रिंटेड घर विकसित भारत का प्रतीक है। साथ ही, भारत की ग्रामीण आवास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो प्रत्येक ग्रामीण परिवार के लिए सुरक्षित, किफायती और लक्षित पर उपलब्ध बनाने की सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डा. पेम्मासानी ने ज्ञान आवास और स्वच्छता के लिए नवाचारी विषयों व अस्पद प्रतिरोधी

समाधान विकसित करने में पीएमवाई-सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने संस्थान के योगदान की सराहना की। जैसे कि ग्रामीण आवास प्रकल्पों का फल संकलन, जो अब 250 से अधिक अस्पद-प्रतिरोधी आवास प्रकल्पों का डिजाइन प्रसारित कर रहा है। दो-गुना शीतलय तकनीकें को स्वच्छ भारत मिशन के तहत पंच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों में स्वच्छता प्रसारित करने में सक्षम बनाया है। उन्होंने 'ग्राम - उत्तराखंड में ग्रामीण आवास' नामक पुस्तक का भी उल्लेख किया। उन्होंने सीबीआरआई में पूर्ण-सतर्क भूकंप और अग्नि-प्रतिरोधी परियोजनाओं की सराहना की। इसके बाद उन्होंने डा. मिथिल साहू के नेतृत्व में ज्ञान आवास और स्वच्छता के लिए नवाचारी स्वच्छता मिशन द्वारा विकसित

एक चंद्रशेखर और जल टैंकर प्रौद्योगिकी का निरूपण किया। वह नवाचार उद्घाटन-उत्सव सीटिंग और स्टेज कंटीनरिंग सम्पादन देती है। जो स्वच्छता को बढ़ावा देने के साथ-साथ स्वच्छता उत्सवों को कम करता है। इसके अलावा उन्होंने रुड़की में ग्रामीण आवास संरक्षण सुविधा, पावर गैरवैट टैट टूरिज्म, केंद्रस्थान टेकनोलॉजी डेवेलपमेंट पार्क का भी दौरा किया। उन्होंने संस्थान के इन में "सिस्टम" का भी दौरा किया। इसमें आवास यात्रा आवास संरक्षण "सिस्टम" का विमोचन किया। सीबीआरआई रुड़की के निदेशक डॉ. अरुण कुमार ने संस्थान के ग्रामीण विकास और भवन विभाग एवं प्रौद्योगिकी में नवाचारी में महत्वपूर्ण योगदान के बारे में बताया। कार्यक्रम का संस्थान मुख्यालय प्रिंटिंग प्रो. एरुके सिंह ने किया।

Express

Published in Rashtriya Sahara

देश की पहली 3 डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास योजना शुरू

देश की पहली 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास योजना शुरू

- ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासांनी चन्द्र शेखर ने किया उद्घाटन
- पीएमएवाई(ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत
- 2.87 करोड़ पूर्ण
- केंद्रीय मंत्री ने रुद्राक्ष उत्तराखंड में ग्रामीण आवास पुस्तक का भी किया विमोचन

देहरादून/रुड़की(एसएनबी)। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासांनी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआरसीवीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डा.पेम्मासांनी चन्द्र शेखर ने कहा कि कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊपर उपलब्ध करने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। यह 3डी प्रिंटेड घर केवल



3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासांनी चन्द्र शेखर। तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील

और पर्यावरण-अनुकूल होगा। डा. शेखर ने बताया कि योजना के अंतिम अंश तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं।

स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 वीं वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14 को कमी आई है और 72 घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और परिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआरसीवीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Union MoS inaugurates country's first 3D concrete printed rural house at CBRI

Union MoS inaugurates country's first 3D concrete printed rural house at CBRI

PIONEER NEWS SERVICE ■ Roorkee

The union Minister of State for Rural Development, Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR-CBRI) here on Wednesday.

Speaking on the occasion, Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology but they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awaas Yojana - Gramin (PMAY-G) the union minister said that 3.85 crore houses have been sanctioned and 2.87 crore completed. He informed that independent assessments show a 17 per cent rise in household incomes, 14 per cent decline in hospital visits

and 72 per cent houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over five crore rural households to live with dignity

and 72 per cent houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

The union minister urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

"Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India," he said.

Senior scientists of CSIR-CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the ministry of Rural Development, social organisations and students attended the programme.



under Swachh Bharat Mission. On this occasion, the Minister also released a book titled 'Rudraksh - Rural Housing in Uttarakhand', which docu-

कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर

कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर

न्यूज वायरस नेटवर्क

रुड़की 02 अक्टूबर : ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्रशेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्रशेखर ने कहा, "कच्चे दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध बनाने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे विचार्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ते, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि

- डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन
- पीएमएवाई-ग्रामीण के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत और 2.87 करोड़ हुए पूरे, करोड़ों ग्रामीण परिवारों को मिला सम्मान और सुरक्षा
- केंद्रीय मंत्री द्वारा "रुद्रक्ष - उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" पुस्तक का भी किया गया विमोचन
- पीएमएवाई-ग्रामीण के तहत 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों के पायलट प्रोजेक्ट का किया आह्वान

योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकषनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अल्पजल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के खेगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन

तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्टर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गुना सौंपालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिम्पूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने "रुद्रक्ष - उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की संस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील



आवासीय परंपराओं का संकलन है।

पवित्र्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करे, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यापार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को राष्ट्रीय आराम नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सभी ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सके।

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा -

"विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोयनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से परे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दुर्घ से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।"

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के चरिप्ट वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

सुमित तिवारी / उत्तराखंड प्रहरी
ब्यूरो

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से उडी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये उडी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण



(पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-

रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है। इस अवसर पर केन्द्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष - उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।

भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती उडी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ताकत वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सके। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा - "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।" उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Uttrakhand Prahari

रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

अमर हिन्दुस्तान

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासांनी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर सीबीआरआई रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है। वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासांनी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्चे दौरा से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध करने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल



तकनीक नहीं है, बल्कि एक ऐसे पक्व का प्रतीक है, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना—ग्रामीण पीएमएवाई की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया

कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है

और 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और परिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशेष आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासांनी ने रुड़की उतराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया जिसमें उतराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। पक्व की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किसानों की 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे

ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक को व्यवहार्यता सिद्ध हो सके।

उन्होंने संस्थान को तृतीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सके। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा विकास केवल महकन बनाने तक सीमित नहीं है।

बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।

Published in Amar Hindustan

Dr Pemmasani Chandra Sekhar inaugurates Nation's First 3D Concrete Printed Rural House At CSIR-CBRI, Roorkee

Dr Pemmasani Chandra Sekhar inaugurates Nation's First 3D Concrete Printed Rural House At CSIR-CBRI, Roorkee

- From Mud Walls to 3D Printing: CBRI Pioneers Affordable Homes for Rural India : Dr. Pemmasani
- Over 3.85 crore houses sanctioned and 2.87 crore completed under PMAY-G, bringing dignity and security to crores of rural families
- CBRI develops 250 region-specific, disaster-resilient housing designs; innovates non-erodible mud plaster, low-cost strengthening techniques, and two-pit pour-flush toilets under Swachh Bharat Mission
- Book "Rudraksh - Rural Housing in Uttarakhand" released by Union Minister
- Call for piloting 100 cost-effective 3D printed houses under PMAY-G

Roorkee (The Hawk): Union Minister of State for Rural Development, Dr. Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee today. The landmark innovation marks a defining moment in India's rural housing journey, bridging traditional knowledge with cutting-edge technology.

Addressing scientists, researchers, and stakeholders, Dr. Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology—they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awaas Yojana-



Gramin (PMAY-G) under the leadership of Prime Minister Shri Narendra Modi, Dr. Sekhar stated that 3.85 crore houses have been sanctioned and 2.87 crore completed. He shared that independent assessments show a 17% rise in household incomes, 14% decline in hospital visits, and 72% houses in the names of women,

strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Dr. Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over

5 crore rural households to live with dignity under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled "Rudraksh - Rural Housing in Uttarakhand", which documents culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the hill state. Looking ahead, Dr.

Sekhar urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

Concluding his address, the Minister said, "Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India."

The inauguration ceremony was attended by senior scientists of CSIR-CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the Ministry of Rural Development, social organisations, and students.

Published in The Hawk

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी

इंडिया वार्ता ब्यूरो
रुड़की : ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ.

3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अद्वितीय प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पुरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी स्पष्ट आया है कि ग्रामीण परिवारों को आप में 17% की वृद्धि हुई

है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्टर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दोगुने शीघ्रता प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने रुद्राक्ष - उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।

भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि

यह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिट्टी प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा - विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई को वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विचारधारा के नेतृत्व में शामिल हुए।



पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला

भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

"ग्रीन दून - क्लीन दून" विषय पर विशाल दौड़
एवं एन्वयन एन्विरोमिन्ट का आगे बढ़ना

Published in India Warta

اجراء رسم کا کتاب رہائش، دیہی میں اتراکھنڈ درکش رو

’رودرکش-اتراکھنڈ میں دیہی رہائش‘ کتاب کا رسم اجراء

ڈاکٹر ہیماسانی چندر شیکھر نے CBRI-CSIR، روڑکی میں ملک کے پہلے 3D کنکریٹ پرنٹ شدہ دیہی گھر کا افتتاح کیا



روڑکی: دیہی ترقی کے وزیر مملکت ڈاکٹر ہیماسانی چندر شیکھر نے آج روڑکی کے سنٹرل بلڈنگ ریفرنس انسٹیٹیوٹ (CBRI-CSIR) میں ملک کے پہلے 3D کنکریٹ پرنٹ شدہ دیہی گھر کا افتتاح کیا۔ یہ تاریخی انجرائمنڈ ہندوستان کے دیہی رہائشی سڑ میں ایک اہم لمحے کی نشاندہی کرتی ہے، جو روڈکی میں دیہی گھرانوں کی ترقی کے ساتھ مربوط کرتی ہے۔ سائنسدانوں، محققین، اور اسٹیپنڈ ہولڈرز

مکانات کو منظوری دی گئی ہے، اور 28.7 ملین ملین ہو چکے ہیں۔ آزادانہ جائزوں سے دیہی گھریلو آمدنی میں 17 فیصد اضافہ، ہتھیانوں میں داخل ہونے میں 14 فیصد کمی اور 72 فیصد گھروں کی ملکیت خواتین کی ہے، جس سے خواتین کی بااختیاریت اور خاندانی بہبود کو تقویت ملتی ہے۔ سی آئی آر آئی کے تعاون کی تعریف کرتے ہوئے، انہوں نے کہا کہ انسٹیٹیوٹ نے 250 علاقائی مخصوص تہائی سے نیچے والے مکانات کے ڈیزائن تیار کیے ہیں۔ مزید برآں، انجرائمنڈ جیسے جان ریڈیو پلاننگ، کم لاگت کلک بنانے کی تکنیک، اور ٹوپ ٹو ٹرانٹ سسٹم نے 50 ملین

زیادہ دیہی خاندانوں کو سوچ بھارت مشن کے تحت باوقار زندگی گزارنے کے قابل بنایا ہے۔ اس موقع پر مرکزی وزیر مملکت ڈاکٹر ہیماسانی نے کتاب ’رودرکش-اتراکھنڈ میں دیہی رہائش‘ کا بھی اجراء کیا جو ریاست اتراکھنڈ کی ثقافتی طور پر بڑی ہوئی، پائیدار اور آب و ہوا سے متعلق احساس بااثریت کو مرحب کرتی ہے۔ مستقبل کی سمت پر زور دیتے ہوئے، ڈاکٹر شیکھر نے CBRI پر زور دیا کہ وہ 100 سستی 3D پرنٹ شدہ مکانات کا پائلٹ پروجیکٹ کرے تاکہ دیہی ہندوستان کے لیے اس ٹیکنالوجی کی فروغ دیا جائے۔ انہوں نے انسٹیٹیوٹ پر زور دیا کہ وہ قرضوں سکون، قابل تجدید توانائی کے انضمام، آب و ہوا کے لیے چھدار ڈیزائن، اور مین کی تربیت پر توجہ مرکوز کرے تاکہ سائنسی ایجادات سے دیہی خاندانوں کو براہ راست فائدہ پہنچ سکے۔ اپنے خطاب کو ختم کرتے ہوئے، انہوں نے کہا، ’ترقی صرف مکانات بنانے کے بارے میں نہیں ہے، بلکہ ایسے گھروں کی تعمیر کے بارے میں ہے جو روشنی، دھار اور خود انحصاری سے بھرے ہوں۔ CBRI-CSIR کے سینئر سائنسدان، IIT روڑکی کے نیشنل ممبران، دیہی ترقی کی وزارت کے نمائندے، سماجی تنظیموں اور طلباء نے افتتاحی تقریب میں شرکت کی۔

سے خطاب کرتے ہوئے، ڈاکٹر ہیماسانی چندر شیکھر نے کہا، ’مٹی کی دیواروں سے لے کر 3D پرنٹنگ تک، ہندوستان نے سب کے لیے محفوظ، مشہور اور پائیدار مکانات فراہم کرنے کے لیے ایک غیر جزئی عزم کا مظاہرہ کیا ہے۔ یہ 3D پرنٹ شدہ گھر صرف ٹیکنالوجی نہیں ہیں، بلکہ مستقبل کی ایک علامت ہیں، جہاں ایک قابل اعتماد اور قابل اعتماد مستقبل ہے۔ ’وزیر اعظم ہناب نریندر مودی کی قیادت میں ہندوستان کی آواہن یوجنا گرامین (G-PMAY) کی کامیابیوں پر روشنی ڈالتے ہوئے، ڈاکٹر شیکھر نے کہا کہ اس انجیم کے تحت اب تک 38.5 ملین

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में किया

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

नागरिक व्यूरो रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएस आईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत को ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकता तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध करने की अद्भुत प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर



केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और

स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पर्यंत हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान को सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणाशील मिट्टी का पलस्टर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और ए-गजु शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ

भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने "रक्षा ख उल्लेखित में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक को व्यवहार्यता प्रिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण

पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लक्ष्यित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आर्यानिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर और सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Param Nagrik

ऐतिहासिक कदम: रुड़की में देश के पहले 3डी प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

ऐतिहासिक कदम: रुड़की में देश के पहले 3डी प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत को ग्रामीण आवास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकता तकनीक से जोड़कर सस्ते, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध करने को दिशा में नई राह दिखाएगा।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने इस उपलब्धि को सराहा। उन्होंने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध करने की अद्भुत प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। उन्होंने और देकर कहा कि ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। केंद्रीय मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चल रही प्रधानमंत्री

आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की सफलताओं का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि इस योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पर्यंत हो चुके हैं। उन्होंने स्वतंत्र आकलनों का हवाला देते हुए बताया कि इस योजना से ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण को मजबूती मिली है। डॉ. शेखर ने ग्रामीण आवास में सीएसआईआर-सीबीआरआई के महत्वपूर्ण योगदान को सराहना की। उन्होंने बताया कि संस्थान ने अब तक 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अलावा, गैर-क्षरणाशील मिट्टी का पलस्टर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत ए-गजु शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों से पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को लाभ मिला है।

इस अवसर पर, केंद्रीय राज्य मंत्री ने रक्षा-उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया।



इस पुस्तक में उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का विस्तृत संकलन है। भविष्य की योजनाओं पर बल देते हुए डॉ. पेम्मासानी ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, ताकि ग्रामीण भारत के

लिए इस अत्याधुनिक तकनीक को व्यावहारिकता प्रिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा, जिससे वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लक्ष्यित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि, विकास केवल

मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आर्यानिर्भरता से भरे हों। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

Published in Vichar Suchak

Dr PC Sekhar inaugurates nation's 1st 3D Concrete Printed Rural House at CSIR-CBRI

Dehradun

Dehradun, 2 Oct, 2025

www.garhwalpost.in (Garhwal Post 11)

Dr PC Sekhar inaugurates nation's 1st 3D Concrete Printed Rural House at CSIR-CBRI

Garhwal Post Bureau

ROORKEE, 1 Oct: Union Minister of State for Rural Development, Dr Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, today. The landmark innovation marks a defining moment in India's rural housing journey, bridging traditional knowledge with cutting-edge technology.

Addressing scientists, researchers, and stakeholders, Dr Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology—they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awas Yojana-Gramin (PMAY-G) under the leadership of Prime Minister Shri Narendra Modi, Dr Sekhar stated that 3.85 crore houses have been sanctioned, and



2.87 crore completed. He shared that independent assessments show a 17% rise in household incomes, 14% decline in hospital visits, and 72% houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Dr Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pour-pour-flush system that has enabled over 5 crore rural households to live with dignity under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled "Rudraksh - Rural Housing in Uttarakhand", which documents culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the hill state.

Looking ahead, Dr Sekhar urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

Concluding his address, the Minister said, "Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India."

The inauguration ceremony was attended by senior scientists of CSIR-CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the Ministry of Rural Development, social organisations, and students.

Published in Garhwal Post

सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे 3डी कंक्रीट प्रिंटेड घर

सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे 3डी कंक्रीट प्रिंटेड घर

केन्द्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने किया देश के पहले ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुड़की। केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्रशेखर ने आज केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. चन्द्रशेखर ने कहा, कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक भारत ने रम्यो के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उत्पन्न करने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे परिवेश का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ते और पर्यावरण अनुकूल



होंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी स्पष्ट

आया है कि ग्रामीण परिवारों को आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है और 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सर्वाधिकारण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती

मिली है। सीबीआरआई के योगदान को सराफा करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासों को डिजाइन किया है। इसके अतिरिक्त गैर-क्षरणशील मिट्टी का पल्लवर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-मज्जा शीतलय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पांच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

डॉ. पेम्मासानी ने रुद्राक्ष-उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए उन्होंने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस

तकनीक को व्यवहारयोग्य सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को राष्ट्रीय अग्रण, स्वीकारणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिम्की प्रोत्साहन पर विशेष ध्यान देने को कहा, ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें।

उन्होंने कहा कि विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में जो रोशन, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई को वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत को नींव रख रहे हैं। समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Uttar Ujala

डॉ. पेम्मासानी ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

डॉ. पेम्मासानी ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

पीआईबी देहरादून/रुड़की १ अक्टूबर । ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर/सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत को ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।" प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना/ग्रामीण (पीएमएवाईएन) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक ३.८५ करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और २.८७ करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों

पीएमएवाईएन (ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत और 2.87 करोड़ पूरे, करोड़ों ग्रामीण परिवारों को मिला सम्मान और सुरक्षा। सीबीआरआई ने विकसित किए 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन; नवाचार में गैर-क्षरणशील मिट्टी की पलस्टर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली।

केंद्रीय मंत्री द्वारा "रुद्राक्ष ख उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" पुस्तक का भी किया गया विमोचन।

पीएमएवाईएन-ग्रामीण के तहत 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों के पायलट प्रोजेक्ट का किया आह्वान।



से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में १७% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में १४% की कमी आई है और ७२% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने २५० क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त,

राज्य को सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि यह १०० किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत २०४७ की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।" उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

India's 1st 3D-printed rural home comes up in Roorkee

India's 1st 3D-printed rural home comes up in Roorkee

Tapan Susheel | TNN

Roorkee: India's first 3D concrete-printed rural house was inaugurated at the Central Building Research Institute (CBRI) in Roorkee on Wednesday. The prototype, built under the Pradhan Mantri Awas Yojana-Gramin (PMAY-G), was developed to offer a fast, affordable and sustainable housing solution in village settings using advanced construction technology and eco-friendly materials.

Union minister of state for rural development Chandra Sekhar Pemmaseani, who inaugurated the structure, said it marked a



The 3D printed rural house was inaugurated at the Central Building Research Institute

significant milestone in India's rural housing journey. He said the house blends traditional wisdom with cutting-edge science and represents a scalable model that can be replicated in rural India.

► **Continued on P 7**

Published in Times of India

Agro-industrial waste used in Roorkee's 3D house

► Continued from P 1

These 3D-printed houses are not merely about technology — they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible," Pemmasani said.

In April 2021, finance minister Nirmala Sitharaman unveiled India's first 3D-printed house at IIT-Madras. Developed by the startup Tvasta Manufacturing Solutions, the 600sqft urban prototype was designed to offer affordable housing for low-income families in cities and was completed in just five days using a proprietary concrete mix. However, that house was not part of any rural housing scheme.

The Roorkee house, by contrast, is the first rural version designed under PMAY-G by scientists at CSIR-CBRI. Unlike the IIT-Madras model, it uses sustainable cement mixes incorporating agro-industrial waste such as fly ash and bagasse ash. It is also aligned with PMAY-G norms for rural homes, which include essential amenities.

Researchers said the prototype demonstrates significant time and cost efficiency. A rural house measuring 25 square metres can be printed in under a week at an estimated cost of Rs 1.8 lakh, compared to four to five months needed for traditional rural

construction. The CBRI model is designed to last over 70 years. "This is the first time 3D printing has been directly applied to rural housing delivery, combining speed, affordability, and green materials for scalable village use," said Dr Ajay Chourasia, chief scientist at CBRI. He led the project along with scientist Ashish Kapoor.

Pemmasani also cited achievements under PMAY-G during PM Narendra Modi's tenure, noting that 3.85 crore houses have been sanctioned so far, with 2.87 crore already completed. He said independent studies have reported a 17% increase in household incomes and a 14% reduction in hospital visits due to better housing. Additionally, 72% of the houses were registered in the names of women, contributing to women's empowerment and family well-being.

He acknowledged CBRI's past innovations, highlighting its development of over 250 region-specific, disaster-resilient housing designs, and rural technologies like non-erodible mud plaster, simple strengthening methods, and the two-pit pour-flush toilet system that benefitted over 5 crore households under Swachh Bharat Mission. "Today's inauguration marks the beginning of its journey into the villages of India," said institute director R Pradeep Kumar.

Published in Times of India

देश के पहले उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

देश के पहले उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

■ कच्ची दीवारों से उडी
प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई
ने ग्रामीण भारत के लिए
सस्ते घरों की राह दिखाई

रुड़की, 1 अक्टूबर (अनिल) : ग्रामीण विकास राज्यमंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा कि कच्ची दीवारों से उडी प्रिंटिंग तक, भारत ने



पुस्तक का विमोचन करते केंद्रीय मंत्री व अन्य।

सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये उडी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण अनुकूल होगा।

प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया

कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं।

स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तीकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती

मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।



Published in: Swatantra Chetna Newspaper

सीबीआरआई ने मनाया सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस

स्वतंत्र चेतना
रुड़की। सीएसआईआर -केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर अडि्टोरियम में एक भव्य कार्यक्रम के साथ सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर, भवन विज्ञान और अनुसंधान के उल्लेखनीय योगदानों को स्मरण किया गया। इस कार्यक्रम में कर्मचारियों, छात्रों और गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पदमश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन, पूर्व कुलपति, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एवम् संस्थापक निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गांधीनगर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई, इसके बाद सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। अपने भाषण में उन्होंने संस्थान के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं को भी रेखांकित किया। इसके पश्चात एक वर्ष के अंतराल में सीएसआईआर-सीबीआरआई की सेवा से अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों को मुख्य अतिथि द्वारा सम्मान पत्र, शाल और कलाई घड़ी भेंट कर सम्मानित किया गया। साह ही 25 वर्ष की निरंतर सेवा पूर्ण

कर चुके कार्मिकों को भी कलाई घड़ी भेंट की गई, इसके उपरान्त मुख्य अतिथि की उपस्थिति में संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक ड. चन्दन स्वरूप मीना द्वारा विकसित सोलर एयर कन्डिशनर और वाटर हीटर की तकनीक का प्रौद्योगिकी हस्तांतरण डेा लम्बे दूरस दृज रज्ज पुणे, महाराष्ट्र को किया गया। यह अभिनव तकनीक, ऊर्जा दक्ष हीटिंग और स्पेस कंडीशनिंग समाधान प्रदान करती है तथा स्वच्छ ऊर्जा एवं कार्बन उत्सर्जन में कमी की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके पश्चात ड. डीपीक कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, स्थापना दिवस आयोजन समिति ने मुख्य अतिथि पदमश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन का परिचय प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी उपलब्धियों पर बधाई दी और कहा कि नई तकनीक भवन विज्ञान को नई दिशा देने के साथ-साथ भारत की ऊर्जा सुरक्षा एवं सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगी। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए परस्पर सहयोग एवं सकारात्मक सोच तथा प्रेरक वातावरण आवश्यक है। प्रदीप कुमार वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक ने सभी का वन्द्यवाद किया। इस आयोजन समिति के अध्यक्ष ड. डीपीक कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक रहे। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने समारोह के मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न और शाल भेंट की। कार्यक्रम का संचालन प्रो. एसक के. सिंह, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने गृह एवं यांत्रिक अनुप्रयोगों के लिए स्वचालन एवं विश्लेषण (आज्ञा) आईओटी प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। यह प्रयोगशाला चंद्रभानु पटेल, वैज्ञानिकय कांती सोलंकी, वैज्ञानिकय तथा ड एसके पाणिग्राही, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा विकसित की गई है। इसके अतिरिक्त, निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा (छम्मज) और उडी कक्रीट प्रिंटड प्रयोगशाला के भ्रमण का संचालन ड अजय चौरसिया, मुख्य वैज्ञानिक, आशीष पिपल, प्रधान वैज्ञानिक, ड. किशोर कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, ड चंचल सोनकर, प्रधान वैज्ञानिक और आशीष कपूर वैज्ञानिक द्वारा किया गया, इसके साथ ही, मुख्य अतिथि ने प्रदर्शनी गैलरी का भी भ्रमण किया। कार्यक्रम का समापन राह्र गान के साथ हुआ। इस अवसर पर एक सार्वजनिक संस्था का आयोजन भी किया गया।

Published in: Swatantra Chetna Newspaper



अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित करते अतिथि। संवाद

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने 84वां स्थापना दिवस मनाया

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में भव्य कार्यक्रम के साथ सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस मनाया।

मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और संस्थापक निदेशक आईआईटी गांधीनगर पद्मश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन ने दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। निदेशक प्रो. आर प्रदीप

कुमार ने स्वागत भाषण दिया और संस्थान के योगदानों पर प्रकाश डाला।

समारोह में सेवानिवृत्त और 25 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके कर्मचारियों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि ने स्वचालन एवं विश्लेषण प्रयोगशाला का उद्घाटन किया निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा एवं 3डी कंक्रीट प्रिंटेड प्रयोगशाला का अवलोकन किया। संवाद

Published in: Dainik Jagran Newspaper



सीबीआरआई की टीम ने किया आपदा क्षतिग्रस्त क्षेत्रों का सर्वेक्षण

हरिद्वार। मानसून काल के दौरान जनपद में आई बाढ़ एवं आपदाओं से हुई वास्तविक क्षति के आंकलन के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा पोस्ट डिजास्टर नोड्स असेसमेंट प्रक्रिया के तहत गठित सर्वेक्षण टीम ने सीबीआरआई के चीफ साइंटिस्ट डा.अजय चौरसिया के नेतृत्व में रविवार को जिला आपदा कार्यालय सभागार हरिद्वार में बैठक ली तथा आपदा प्रभावित एवं भूस्खलन क्षेत्रों का भ्रमण एवं सर्वेक्षण किया गया। सचिव एचआरडीए मनीष कुमार सिंह ने बैठक का संचालन करते हुए जनपद को सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक व भौगोलिक स्थिति के बारे में जानकारी देते हुए मानसून काल में हुए नुकसान के बारे में पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से विस्तार से जानकारी दी।

बैठक में सीबीआरआई के चीफ साइंटिस्ट डा.अजय चौरसिया ने निर्देशित करते हुए कहा कि सभी अधिकारी आपसी समन्वय से बरसात के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में जाने वाली बाढ़ तथा होने वाले नुकसान को रोकने के लिए प्रभावी कार्य योजना बनाकर भारत सरकार में भेजी जाये। उन्होंने सिंचाई विभाग के अभियन्ताओं को निर्देशित करते हुए कहा कि बाढ़ एवं भू-कटाव को रोकने के लिए लॉग ट्रम्प स्थायी समाधान किया जाये ताकि संभावित बाढ़ एवं उसके नुकसान से बचा जा सके। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि हमारे एसेसमेंट इस प्रकार के होने चाहिए कि भविष्य में आपदा की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि नदियों के तटबंध से सम्बन्धित प्रस्ताव भी प्रस्तावित की जाये। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में वश आउट हुई सड़कों के लिए भी स्थायी समाधान हेतु प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिये ताकि भविष्य में मार्ग बाधित न हो। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि आंकलन प्राप्त किया जाये तथा जिस क्षेत्रों का कार्य है, उसे उसी क्षेत्रों में

प्रस्तावित किया जाये तथा डेटा देने में विशेष सावधानी बरती जाये। उन्होंने कम्प्यूटेशन हेतु प्लान बी के तहत भी कार्य योजना बनाने के निर्देश दिये। उन्होंने साँवर, डूनेज तथा एसटीपी निर्माण से सम्बन्धित कार्य हेतु भी कार्य योजना के बारे में महत्वपूर्ण निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये। बैठक में पोस्ट डिजास्टर नोड असेसमेंट (चक्रट) टीम ने राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण से हरिद्वार जनपद में हुई भारी बारिश-भूस्खलन के कारण हुए जनहानि, पशुहानि एवं क्षतिग्रस्त भवनों का विवरण लिया साथ मानसून सत्र 2025 में हुए क्षति का विभागवार विवरण की जानकारी ली गई।

उन्होंने विद्युत, पिटकुल, सिंचाई, लोनिवि, शिक्षा, चिकित्सा, बाल विकास, सिंचाई सहित अन्य सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने पीडीएमए से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी। भीमगोदा पुल के पास बार-बार रैलवे ट्रेक पर गिर रहे मलवा स्थल तथा मनसा देवी क्षेत्र में भू-स्खलन सम्भावित क्षेत्रों का भी स्थलीय निरीक्षण किया गया। उन्होंने निरीक्षण के दौरान इन समस्याओं के स्थायी समाधान हेतु महत्वपूर्ण निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये।

इस दौरान अपर जिलाधिकारी वैशेद सिंह नेगी, एनडीएम प्रोफेसर डा.राजगदीप, असि.प्रोफेसर एचपी युनिवर्सिटी डी.एम समी, स्टेट नोडल अफिसर डा.मोहित कुमार पुनिया, एचआरडीए सचिव मनीष सिंह, उप जिलाधिकारी जितेंद्र कुमार, जिला विकास अधिकारी वेदप्रकाश, आपदा प्रबंधन अधिकारी भोरा रावत, जिला अर्थ संख्या अधिकारी नलिनी श्यामी, जिला परिषदका प्रबंधक संजय सक्सेना, रोज ऑफिसर राजाजी टाडगर रिजर्व ब्रिजेंद्र दत्त तिवारी, जिला पर्यटन अधिकारी सुरतोष नौदियाल सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

my
ity

अमर उजाला



देहरादून |

सोमवार | 26

आरियन रूकल-सप्तमी विक्रम स

amarujala.co

बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए करें स्थायी समाधान

सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक ने दिए अधिकारियों को बैठक में निर्देश

मानसून के दौरान आपदाओं से हुए नुकसान का एनडीएमए की टीम ने किया सर्वेक्षण

संवाद न्यूज एजेंसी

हरिद्वार। विभागों के अधिकारी आपसी समन्वय से एक प्रभावी कार्ययोजना बनाकर केंद्र सरकार को भेजें ताकि भविष्य में बाढ़ से होने वाले नुकसान को रोका जा सके। सिंचाई विभाग बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए दीर्घकालिक और स्थायी समाधान करें।

यह बात सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) के चीफ साइंटिस्ट डॉ. अजय चौरसिया ने रविवार को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) द्वारा गठित सर्वेक्षण टीम की ओर से आयोजित बैठक में कही।

मानसून के दौरान जिले में आई बाढ़ और आपदाओं से हुए नुकसान का आकलन करने के लिए टीम ने हरिद्वार के जिला आपदा कार्यालय सभागार में यह बैठक आयोजित की। बैठक के बाद टीम ने आपदा प्रभावित और भूस्खलन संभावित क्षेत्रों का दौरा भी किया। बैठक में हरिद्वार-रुड़की विकास प्राधिकरण (एचआरडीए) के अधिकारी मनीष



पहाड़ी का निरीक्षण करते सीबीआरआई के चीफ साइंटिस्ट डॉ. अजय चौरसिया। संवाद

भूस्खलन संभावित इलाकों का किया निरीक्षण

टीम ने भीमगोंडा पुल के पास बार-बार रेलवे ट्रैक पर गिरने वाले मलबे वाले स्थल और मनसा देवी क्षेत्र में भूस्खलन संभावित इलाकों का भी निरीक्षण किया और इन समस्याओं के स्थायी समाधान के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए।

कुमार सिंह ने जिले की सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और भौगोलिक स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से मानसून काल में हुए नुकसान का ब्योरा भी प्रस्तुत किया।

इस मौके पर अपर जिलाधिकारी दीपेंद्र सिंह नेगी, प्रो. डा.गगनदीप, असि.प्रोफेसर एचपी यूनिवर्सिटी डा.एम.शर्मा, स्टेट नोडल ऑफिसर डा.मोहित कुमार पुनिया, उप जिलाधिकारी जितेंद्र कुमार, जिला विकास अधिकारी वेदप्रकाश, आपदा

क्षतिग्रस्त हुई सड़कों के लिए भी बनाएं प्रस्ताव

डॉ. चौरसिया ने जोर दिया कि हमारी संपत्तियां ऐसी होनी चाहिए कि भविष्य में आपदा की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने नदियों के तटबंधों से संबंधित प्रस्ताव तैयार करने के भी निर्देश दिए। साथ ही क्षतिग्रस्त हुई सड़कों के लिए भी प्रस्ताव बनाने को कहा ताकि भविष्य में मार्ग बाधित न हों। उन्होंने अधिकारियों को डेटा देने में विशेष सावधानी बरतने और आकलन को उचित श्रेणी में प्रस्तावित करने का निर्देश दिया। संचार व्यवस्था के लिए उन्होंने प्लान बी के तहत भी कार्ययोजना बनाने को कहा। इसके अलावा सोबर, ड्रेनेज और एसटीपी निर्माण से संबंधित कार्यों के लिए भी योजना बनाने के निर्देश दिए गए।

प्रबंधन अधिकारी मीरा रावत, जिला अर्थ संख्या अधिकारी नलिनी ध्यानी, जिला परियोजना प्रबंधक संजय सक्सेना, रेंजर बृजेंद्र दत्त, जिला पर्यटन अधिकारी सुरील नौटियाल आदि मौजूद रहे।

सहारा लाइव NEWS

हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी टैलेंट राष्ट्रीय लोकतन्त्र स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उपरोक्त

राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता

By Sahara Live News
© SEP 26, 2025



इस कार्यक्रम में मेथोडिस्ट गर्ल्स डिग्री कॉलेज, रुड़की तथा पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय संख्या 1, रुड़की के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों सहित विभिन्न स्कूलों से आए प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके अतिरिक्त, ट्रेनिंग एवं एकेडमी ऑफ साइंटिफिक एंड इन्ोवेटिव रिसर्च (AcSIR) के छात्र-छात्राओं ने भी सक्रिय रूप से सहभागिता की। खास बात यह रही कि बिहार सरकार के 50 नव नियुक्त सहायक वास्तुविदों का एक विशिष्ट दल शैक्षणिक-सह-तकनीकी भ्रमण हेतु संस्थान पहुंचा।

ओपन डे के दौरान प्रतिभागियों के लिए संस्थान के विभिन्न प्रमुख अनुसंधान स्थलों जैसे डॉ. बिलिंग प्रदर्शनी दीर्घा, राष्ट्रीय भूकंप परीक्षण सुविधा, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी प्रयोगशाला एवं ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का सुव्यवस्थित भ्रमण कराया गया। यहाँ उन्हें भूकंप अभियांत्रिकी, अग्नि सुरक्षा, टिकाऊ ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं संरचनात्मक नवाचारों के क्षेत्र में किए जा रहे शोध कार्यों की जानकारी दी गई। यह जानकारी डॉ. नवीन, डॉ. हेमलता, श्री नदीम, डॉ. नीरज एवं ओर भी संस्थान के वैज्ञानिकों कि उपस्थिति म हुआ।

विशेष प्रदर्शनों में श्रीराम मंदिर के सूर्य तिलक तंत्र का मॉडल, नवोदय विद्यालयों के लिए विकसित वास्तु नवाचार तथा खारे क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों के लिए अग्निरोधक घरों की तकनीक शामिल थीं। इन प्रदर्शनों ने आधुनिक विज्ञान के साथ परंपरा के समन्वय और देश की बुनियादी संरचना एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु संस्थान के प्रयासों को उजागर किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को अग्रणी वैज्ञानिकों से सीधे संवाद करने, उन्नत यंत्रों एवं अनुसंधान सुविधाओं को देखने तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के व्यावहारिक पहलुओं को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर यह भी उल्लेख किया गया कि नई दिल्ली स्थित वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) अपनी 37 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के नेटवर्क के साथ विश्व की सबसे बड़ी सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित अनुसंधान संस्थाओं में से एक है। भवन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में समर्पित एक प्रमुख संस्थान के रूप में सीएसआईआर-सीबीआरआई देश की आधारभूत संरचना के लिए सतत, लचीले एवं अभिनव समाधान विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

यह ओपन डे कार्यक्रम विशेष रूप से अगली पीढ़ी के वैज्ञानिकों, अभियंताओं एवं वास्तुविदों को प्रेरित करने और उन्हें कक्षा में प्राप्त ज्ञान को वास्तविक तकनीकी प्रगति से जोड़ने हेतु तैयार किया गया था। यह आयोजन जिज्ञासा, नवाचार और वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करने में सफल रहा तथा अनुसंधान एवं नवाचार के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को एक बार फिर सशक्त रूप से प्रदर्शित किया।

Presented in: <https://www.saharalivenews.com/archives/9838>

www.livehindustan.com

हिन्दुस्तान

देहरादून, गुरुवार, 25 सितंबर 2025

यह कदम है।

कमीपटापटा प्रदान करगा।

सीएसआईआर को शोध के लिए 2277 करोड़ रुपये

केंद्र सरकार ने उच्चस्तरीय शोध को बढ़ावा देने के लिए सीएसआईआर की योजना को मंजूरी दी है। इसके तहत देश भर के शोध संस्थानों में रिसर्च फेलोशिप की शुरुआत की जाएगी। इसके लिए 2277 करोड़ रुपये मंजूर किए गए हैं। अश्विनी वैष्णव ने बताया कि योजना का क्रियान्वयन वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) द्वारा किया जाएगा। इसके दायरे में सभी केंद्रीय प्रयोगशालाएं एवं संस्थान आएंगे। योजना के तहत योग्य नौजवानों को रिसर्च फेलोशिप और पीएचडी के लिए अवसर प्रदान किए जाएंगे।

Published in: Hindustan newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 23.09.2025

उत्तराखंड-हिमाचल के छह शहरों में एक तिहाई इमारतें खतरनाक

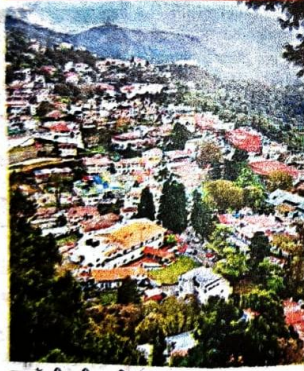
जागरण विशेष

टीम संरचना • जबरन

रुड़की: उत्तराखंड के कर्णप्रवाम, नैनीताल, मसूरी और हिमाचल प्रदेश के कंडावाट, टांडा, पंचवटी साहिब में एक तिहाई से अधिक इमारतें संरचनात्मक अभियांत्रिकी (स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग) के मानकों पर खरी नहीं हैं। इनके भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल डिजाइन नहीं किया गया है। इस कारण वे इमारतें उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में हैं, जिनके भूकंपीय घटनाओं के दौरान ढहने या भारी क्षति की आशंका रहती है। इन संरचनाओं में अस्पताल, स्कूल और प्रशासनिक कार्यालय भी चल रहे हैं। यह बात केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के अध्ययन में सामने आई है। अध्ययन की रिपोर्ट गृह मंत्रालय के अर्धन राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को भेजी गई है।

सीबीआरआई रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी व इस परियोजना के प्रोजेक्ट लीडर

- उच्च जोखिम वाले इन भवनों के भूकंप के दौरान ढहने या भारी क्षति की आशंका
- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के अध्ययन में सामने आई है यह बात



पहाड़ों की रानी मसूरी • जबरन आर्काइव

डा. अजय चौरसिया ने बताया कि जुलाई 2024 से मार्च 2025 के मध्य यह अध्ययन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य भूकंपीय खतरों का मूल्यांकन,

1,000

इमारतों पर प्रत्येक शहर में यह अध्ययन किया गया संस्थान के छह-सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट की टीम की ओर से



सीबीआरआई के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया • छव

4,978 इमारतों में से अधिकांश में रहना जोखिम भरा, तत्काल पुनर्निर्माण की आवश्यकता

डा. अजय चौरसिया ने बताया कि अध्ययन में शामिल शहर भूकंपीय क्षेत्र चार व पांच में आते हैं। ये शहर तीव्र भू-गति के प्रति संवेदनशील हैं। ये खड़ी ढलानों, अनियमित विकास और संरचनात्मक अभियांत्रिकी की अनदेखी के कारण अधिक जोखिम भरे हैं। इन छह शहरों में 4,978 इमारतें चिह्नित की गई हैं, जिनमें अप्रबलित चिनाई (युआरएम) है। इन्हें तत्काल पुनर्निर्माण की आवश्यकता है। इन इमारतों में 37,822 लोग रहते हैं।



रिपोर्ट में दिए गए सुझाव

- सभी प्रभावित शहरों में प्राथमिकता के आधार पर संरचनात्मक रेट्रोफिटिंग कार्यक्रम बने।
- आपदाकालीन निवृत्तों और प्रतिक्रिया प्रोटोकॉल।
- वास्तविक समय भूकंपीय निगरानी प्रणालियां।
- संवेदनशील संरचनाओं विशेष रूप से सर्वजनिक और संस्थागत भवनों के रेट्रोफिटिंग को प्रोत्साहित किया जाए, ताकि उच्च जोखिम कम हो।
- सभी नए निर्माणों के लिए अनिवार्य भवन कोड के अनुपालन को लागू करना और पालन करना।
- नगर पालिका नियोजन और जोड़िंग विनियमों में जोखिम संवेदनशीलता मानदंडों को एकीकृत करना, ताकि जरूरी कदम उठाए जा सकें।
- आपदा प्रतिरोधी केंद्रों में बुनियादी ढांचे का उन्नयन किया जाए। साथ ही पहुंच, क्षमता और संरचनात्मक मजबूती जरूरी।
- लचीली निर्माण प्रथाओं और आपदा तैयारियों पर सामुदायिक जागरूकता और प्रशिक्षण।

इमारतों की भेद्यता का आकलन, संभावित मानवीय व आर्थिक नुकसान का अनुमान, भविष्य के जोखिम न्यूनीकरण और शहरी रणनीतियों के लिए मजबूत आधार प्रदान करना था। उनके अनुसार चिह्नित क्षेत्रों का जोखिम मूल्यांकन मानचित्र तैयार करने के लिए एक

व्यापक पद्धति विकसित की गई है। संस्थान के छह-सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट ने प्रत्येक शहर में 1,000 इमारतों पर अध्ययन किया।

Published in: Dainik Jagran newspaper

CBRI Roorkee study found that out of 4,978 buildings surveyed in six cities of Uttarakhand and Himachal, about 40% are unsafe and 1,000 highly dangerous. Many schools, hospitals, and offices lack proper structural design, posing serious risks in earthquake-prone zones. The report calls for urgent reconstruction, strict building code compliance, and earthquake-resistant measures.



हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ हुआ हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ

रुड़की। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में सोमवार से हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ हो गया। 6 अक्टूबर तक पखवाड़े का आयोजन होगा। संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो ने किया। इस अवसर पर हिन्दी पुस्तक पर चर्चा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के प्रधान तकनीकी अधिकारी राजीव कुमार शर्मा ने हरिवंश राव बच्चन की पुस्तक 'मधुशाला' पर चर्चा प्रस्तुत की। हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्माकर ने किया। हिन्दी पखवाड़ा समाप्त पर 6 अक्टूबर को पुरस्कार वितरण होगा। इस अवसर पर आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. पीसी थपलियाल, डा. नीरज जैन, डॉ. राजेश वर्मा, डॉ. नवल किशोर बंजारा, अवनोश कुमार, हुमैरा अतहर, अर्पिता महेश्वरी, दिनेश, अमित, भारती आदि उपस्थित रहे।

Published in: Rashtriya sahara newspaper

देवरतन, भगलवार
16 नोवंबर, 2025
हिन्दुस्तान संस्करण
₹ 7.00
पृष्ठ 20
www.jagran.com

सात करोड़ से अधिक आइटोआर चाखिल 15

पहलाम गीडिओं के साथ दिखाना चाहते थे एकजुदता 16

रुड़की जागरण

हिंदी में कामकाज की प्रवृत्ति को अपनाने पर दिया जोर

सीबीआरआइ रुड़की में हिंदी पखवाड़ा शुरू, विभिन्न प्रतियोगिताएं होंगी, हिंदी पुस्तक पर किया गया चर्चा

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ किया गया। इस मौके पर हिंदी में कामकाज करने की प्रवृत्ति को गंभीरता के साथ अपनाने पर जोर दिया गया। वहीं 'हिंदी पुस्तक पर चर्चा' कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

संस्थान में सोमवार को हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन वरिष्ठ विज्ञानी डा. डीपी कानुनगो ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़ रहे हैं, जिनमें अपनी मातृभाषा को

अपनाया है। उन्होंने कहा कि बार संस्थान के पुस्तकालय में कार्मिकों के बच्चों को माहौल में एक जकूर लाना चाहिए। ताकि बच्चों में

पुस्तकों को पढ़ने की रुचि बढ़े। साथ ही उन्होंने सभी से मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने का अनुरोध किया। इस दौरान 'हिंदी पुस्तक पर चर्चा' कार्यक्रम में संस्थान के प्रधान तकनीकी अधिकारी राजीव कुमार शर्मा ने हरिवंश राय बच्चन की पुस्तक 'भूपुराणा' पर चर्चा प्रस्तुत की। संस्थान की हिंदी अधिकारी अरुणा चौधरी ने बताया कि हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, अनु भाषण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी, हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए हिंदी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी।

साथ ही कार्मिकों के बच्चों के लिए भी हिंदी कविता पाठ और भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित होंगी। हिंदी पखवाड़े का समान एवं पुरस्कार वितरण छह अक्टूबर को होगा। हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन वीरत कर्माकर ने किया। इस मौके पर आयोजन समिति के अध्यक्ष डा. पीसी बपतिवहन, डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, डा. नवल किशोर बंजारा, अरुणा कुमार, बुधेश अतार, अरुण महेश्वरी, मोहर सिंह, धर्म सिंह नेगी, अमन कुमार, विनीत सेनी, डा. चंदन स्वरूप मौन, मोहित, दिनेश, भारती आदि उपस्थित रहे।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में हिंदी पखवाड़े के शुभारंभ के मौके पर हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते विज्ञानी और अन्य - 20/11/2025

Published in: Dainik Jagran newspaper

At CSIR-CBRI Roorkee, Hindi Pakhwada was inaugurated with emphasis on adopting Hindi in official work. Various competitions will be organized during the program, and discussions were held on Hindi books to promote the use of Hindi in daily functioning.

CSIR-CBRI in the Limelight | 14.09.2025



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूड़की में संस्थान परिवार के बीच कबड्डी टीम का आयोजन किया गया।

इस आयोजन का शुभारंभ माननीय निदेशक, Dr. Ramancharla Predeep Kumar, सीबीआरआई द्वारा किया गया।

प्रतियोगिता में दो टीमों ने भाग लिया:

- टीम-A
हिमांशु शर्मा, शिवम सोलंकी, सुरज कुमार, सोनू, शुभम, मोहद अज़ीम, रजनीश, ए. अरविंद, शुभम, रजनीश
- टीम-B
दिनेश, मनीष, मोहित, हिमांशु, हरजीत, अमित यादव, सोहन कुमार राय, एन के बंजारा, धिपूष, धिजेंद्र

मैच का संचालन रेफरी सिद्ध द्वारा किया गया।

यह खेल प्रतिस्पर्धी न केवल कर्मचारियों के बीच आपसी सहयोग और खेल भावना को बढ़ावा देती है बल्कि स्वास्थ्य एवं फिटनेस के प्रति जागरूकता का भी संदेश देती है।

सीबीआरआई परिवार ने उत्साहपूर्वक इस खेल का आनंद लिया और खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। इस कार्यक्रम में श्री अमन, श्री अर्पण एवं Dr. Chandan Swaroop Meena भी उपस्थित थे।

सोनु शर्मा + शुभम बेस्ट डिफेंडर, बेस्ट केचर मोहित/मनीष कुमार, टीम A कप्तान श्री हिमांशु शर्मा, टीम B श्री दिनेश विजेता रही, निदेशक महोदय के उद्घोषन में भारत के पारंपरिक खेलों से युवाओं को जोड़ने और स्वास्थ्य व्यायाम के साथ टीम भावना से आगे बढ़ने के साथ आह्वानित रहने के लिए संदेश दिए।

सोनु शर्मा एवं शुभम को बेस्ट डिफेंडर, और बेस्ट केचर मोहित/मनीष कुमार, रहे इन टीमों का नेतृत्व।

हिमांशु शर्मा और दिनेश ने किया, निदेशक महोदय के उद्घोषन में भारत के पारंपरिक खेलों से युवाओं को जोड़ने और स्वास्थ्य व्यायाम के साथ टीम भावना से आगे बढ़ने के साथ आह्वानित रहने के लिए संदेश दिए।

आयोजन में डॉ चंदन स्वरूप मीणा एवं रोवक कर्मेटी अमन कुमार ने भी, अंत में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

ईश्वर चंद संगवदता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9761>

CSIR-CBRI, Roorkee organized a Kabaddi match to promote team spirit, fitness, and traditional sports. Team A's Himanshu Sharma and Team B's Vinesh were winners, while Sobha, Shubham, and Mohit received Best Player awards. The event was graced by Director Dr. Ramancharla Pradeep Kumar and Dr. Chandan Swaroop Meena.

CSIR-CBRI in the Limelight | 01.09.2025



Published in: Rashtriya sahara newspaper

CSIR-CBRI team completed the structural survey of Tungnath temple to assess its stability. Using advanced techniques, they studied construction, materials, and condition of the temple. The data will help in its preservation and restoration.

CSIR-CBRI in the Limelight | 31.08.2025

सहारा लाइव
NEWS

हर खबर पर पैनी नजर



अंतरराष्ट्रीय

राज्य

टेक्नोलॉजी

ट्रेवल

राष्ट्रीय

लोकल न्यूज़

स्वास्थ्य

LIVE TV

CONTACT

उत्तराखंड

खेल हमारे जीवन का अंग, डॉ आर प्रदीप कुमार निदेशक CBRI



By Sahara Live News

□ AUG 31, 2025





राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूड़की में 29 अगस्त से 31 अगस्त 2025 तक विभिन्न स्वास्थ्य एवं फिटनेस गतिविधियों का आयोजन किया गया।

29 अगस्त को भारत माँ के वीर सपूत एवं हॉकी जादूगर मेजर ध्यानचंद जी की जयंती के अवसर पर संस्थान परिवार ने सामूहिक प्रतिज्ञा ली कि वे स्वयं को स्वस्थ एवं फिटनेस वॉक के साथ-साथ अपने मित्रों और परिवारजनों को भी स्वस्थ जीवनशैली अपनाने हेतु प्रेरित करेंगे।

इसके उपरांत, 30 अगस्त की प्रातः 7:30 बजे कॉलोनी वासियों एवं संस्थान के अनेक कार्मिकों ने cycling में भाग लिया।

31 अगस्त की सुबह 7:30 बजे वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूनगो एवं वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक के द्वारा हरी झंडी दिखाकर साइकिल यात्रा का शुभारंभ किया गया। यह यात्रा उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई और समापन फलाहार एवं भारत माँ के वीर सपूत मेजर ध्यानचंद जी के जयघोष के साथ हुआ।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ आर प्रदीप कुमार ने संदेश दिया कि खेल, पैदल चलना, साइकिलिंग और स्वस्थ आहार न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं बल्कि सामूहिक एकता और सामाजिक सौहार्द को भी मजबूत करते हैं।

ईश्वर चंद संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9715>

CSIR-CBRI, Roorkee celebrated National Sports Day (29-31 Aug 2025) with fitness pledge, cycling events, and a bicycle rally. Director Dr. Pradeep Kumar highlighted the importance of sports, walking, cycling, and a healthy lifestyle.

4 हरिद्वार: दैनिक हाक, शनिवार, 30 अगस्त 2025 **रुड़की**

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा

एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को तकनीक हस्तांतरित

रुड़की (दैनिक हाक): दर्ब को, जब संस्थान द्वारा सीएसआईआर, केंद्रीय भवन विकसित प्रौद्योगिकी " 120 मिन्ट

सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस के इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया गया। ये प्रौद्योगिकी डॉ नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के अभिनव शोध और प्रयासों से सफलतापूर्वक

श्रीमती सानीओ नायक, श्रीमती सुरशीला वर्मा उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकी औपचारिक रूप से ग्रहण कीं, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप

सीमित करने में मदद करते हैं। अस्पतालों, कार्यालय भवनों, शॉपिंग मॉल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े मानव-आवासीय स्थलों जैसी जैसी महत्वपूर्ण इमारतों में अग्नि अवरोधित दरवाजों का उपयोग होता है। विकसित आग्नि रूप से अग्नि अवरोधित दरवाजों का परीक्षण आई एस ओ. 834 मानक ताप चक्र का पालन करते हुए, आईएस 3614:2021 के अनुसार 120 मिन्ट तक किया गया। दरवाजे ने 30 मिन्ट तक आग्नि अग्नि रोधित के मानकों को पूरा किया और पूरे 120 मिन्ट तक अपनी अखंडता और स्थिरता बनाए रखी। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार को गरिमामयी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानुंगो, डॉ एस. के. पाणिग्रही, डॉ. सौरव जैन, डॉ. नंदीय अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमति माधवी देवी, एचयन सयसत तकनीकी व परिवेक्षण स्टाफ इत्यादि उपस्थित रहे।



अनुसंधान संस्थान, सीबीआरआई को लिए आगिक रूप से अग्नि विकसित हुई है। कुमार के कर-कर्मलों द्वारा किया ने शुक्रवार को इमारतों में आग रोधित एकल पल्ले वाला एक इस अवसर पर कंपनी के गया। अग्नि अवरोधित दरवाजे को आपद को निर्यात करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि संचित दरवाजा।'' का निदेशक, मानस दाम निदेशक, खुर्दा और गर्मी की गति को

Presented in Newspaper: Dainik Hak

epaper **हिन्दुस्तान**

Share Copy url Save Font Size D'load Image Image Text Listen

रुड़की में सीबीआरआई ने बनाया अग्नि अवरोधित विशेष दरवाजा

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई रुड़की ने इमारतों में आग को आपद को निर्यात करने के लिए एक विशेष प्रकार के दरवाजा विकसित किया है। जो किसी इमारत या मकान के कमरे में आग लगने के 2 घंटे तक आग को दरवाजे से बाहर फैलने से रोक सकता है। कमरे में एक हजार डिग्री तापमान होने के बावजूद भी यह दरवाजा कारगर साबित होगा। संस्थान द्वारा शुक्रवार को एसके इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड खुर्दा औद्योगिक एस्टेट ओडिशा को

02 घंटे तक कमरे से बाहर नहीं फैलेगी आग

यह तकनीक हस्तान्तरित किया गया। ये प्रौद्योगिकी डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के अभिनव शोध और प्रयासों से सफलतापूर्वक विकसित हुई है। मौके पर कंपनी के प्रबंध निदेशक मानस दाम, सुरशीला वर्मा उपस्थित रहे। जिन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकी औपचारिक रूप से ग्रहण कीं। जिनका हस्तांतरण

सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के द्वारा किया गया। अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने के दौरान लपटें, धुंए और गर्मी को गति को सीमित करने में मदद करते हैं। अस्पतालों, कार्यालय भवनों, शॉपिंग मॉल अन्य बड़े मानव-आवासीय स्थलों जैसी जैसी महत्वपूर्ण इमारतों में अग्नि अवरोधित दरवाजों का उपयोग होता है इस दौरान वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डीपी कानुंगो, डॉ. एसके पाणिग्रही, डॉ. सौरव जैन आदि मौजूद रहे।



यह होगा फायदा

सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने बताया कि अगर किसी मकान के कमरे में आग लग जाती है तो आग की लपटें सबसे पहले दरवाजे या डिंडली से होकर ही बाहर वीर फैलती है। जिससे की कई बार बड़ी जनहानि हो जाती है। उन्होंने बताया कि अगर इस दरवाजे को लगा दिया जाए तो करीब 2 घंटे तक इस कमरे से आग बाहर को नहीं फैलेगी। जिससे आवासीय से उस मकान या इमारत में मौजूद लोग बाहर निकल सकेगें।

रुड़की सीबीआरआई में शुक्रवार को अग्निरोधित एकल पल्ले वाला एक तरह खुलने वाला धातु का संचित दरवाजा का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया गया। • हिन्दुस्तान

Presented in Newspaper: Hindustan



Uk Bharat
सत्य की खोज

Home / Uncategorized / सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

Dehradun | Haridwar | Roorkee | Uncategorized

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

© Uk Bharat | August 29, 2025



सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने भवन निर्माण क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि दर्ज की है। संस्थान ने "120 मिनट के लिए आंशिक रूप से अग्नि रोधित, एकल पल्ले वाला, एक तरफ खुलने वाला धातु का संमिश्रित दरवाजा" विकसित कर उसकी प्रौद्योगिकी का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया।

इस अभिनव तकनीक का विकास डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं उनकी शोध टीम द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कंपनी की ओर से प्रबंध निदेशक श्री तापस दास, निदेशक श्री मानस दास, श्रीमती बानीश्री नायक और श्रीमती सुशीला वर्मा उपस्थित रहे। प्रौद्योगिकी का औपचारिक हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के कर-कमलों से संपन्न हुआ।

विशेषज्ञों के अनुसार, अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने की स्थिति में लपटों, धुँएँ और गर्मी के प्रसार को सीमित करने में मदद करते हैं। इनका उपयोग अस्पतालों, कार्यालयों, शॉपिंग मॉल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े सार्वजनिक भवनों में सुरक्षा हेतु किया जाता है।

संस्थान द्वारा विकसित दरवाजे का परीक्षण आईएसओ 834 मानक ताप वक्र का पालन करते हुए आईएस 3614:2021 के अंतर्गत किया गया। दरवाजे ने 30 मिनट तक आंशिक अग्नि-रोधित मानदंडों को पूरा किया और पूरे 120 मिनट तक अपनी अखंडता व स्थिरता बनाए रखी।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानूनगो, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ. सौरभ जैन, डॉ. नदीम अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमती गायत्री देवी सहित तकनीकी और परियोजना स्टाफ मौजूद रहा।

Published in :- <https://ukbharat.com/csir-cbri-work-for-fair/>

CSIR-CBRI, Roorkee developed a fire-resistant composite metal door (120-minute rating) and successfully transferred the technology to S.K. Engineers India Pvt. Ltd., Odisha.

CSIR-CBRI in the Limelight | 21.08.2025

सहारा लाइव
NEWS
हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकत न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उत्तराखंड

शोध और प्रयास से सीबीआरआई रुड़की को बड़ी सफलता

By Sahara Live News
AUG 21, 2025



सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा पिडिलाइट उद्योग को द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

दिनांक : 21 अगस्त 2025

रुड़की स्थित सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने 21 अगस्त 2025 को भवन निर्माण क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की, जब संस्थान द्वारा विकसित दो अभिनव प्रौद्योगिकियों का सफलतापूर्वक हस्तांतरण पिडिलाइट इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड, मुंबई को किया गया। दोनों प्रौद्योगिकियां श्री राजेश कुमार शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के शोध और प्रयासों से विकसित हुई हैं। इस अवसर पर कंपनी के प्रतिनिधि डॉ. अनिल बांडेले (वरिष्ठ उपाध्यक्ष, पिडिलाइट उद्योग) उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकियाँ औपचारिक रूप से ग्रहण कीं, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—संरचनात्मक ग्रेड/भार-वहन करने वाला हल्का कंक्रीट, ढलाई के समय किसी यांत्रिक कंपनी की आवश्यकता नहीं होने वाली स्वसंपीड्य प्रकृति, नव पीढ़ी का सीमेंट अर्थात् एलसी3 (LC3) प्रौद्योगिकी के कारण क्लोराइड प्रवेश और सल्फेट आक्रमण के विरुद्ध बेहतर ये नवाचार संयुक्त राष्ट्र (UN) के सतत विकास लक्ष्य- 9, 11 और 12 के अनुरूप हैं। द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. एस. के. पाणिग्राही, एवं समस्त तकनीकी व परियोजना स्टाफ इत्यादि उपस्थित रहे।

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9680>

On 21st August 2025, CSIR-CBRI Roorkee transferred two innovative construction technologies to Pidilite Industries, including a self-compacting lightweight concrete and advanced LC3 cement. These sustainable technologies support UN SDGs and were developed under the leadership of Chief Scientist Rajesh Kumar Sharma.



Dehradun: The Aug 5 flash flood in Uttarakash's Dharali was likely triggered by a "cloudburst-induced moraine debris flow along the Kheer Gad stream", as per a five-member multi-institutional team of scientists who spent four days surveying the areas flattened by the deluge.

Advertisement

Tired of too many ads? [Go Ad Free Now](#)

"The debris may have accumulated from a past event, obstructing the stream's course, which then breached catastrophically," said Shantanu Sarkar, director of Uttarakhand Landslide Mitigation and Management Centre (ULMMC), who led the team. The scientists from ULMMC, Geological Survey of India, IIT Roorkee, Wadia Institute of Himalayan Geology, and the Central Building Research Institute (CBRI) surveyed Dharali and Harsil between Aug 13 and 16. They interviewed locals, ground search teams, and village elders before returning to Dehradun on Saturday.

"A key part of the exercise was attempting to reach the glacier site but thick cloud cover prevented us from reaching the glaciated portion directly", said Sarkar. However, the team was the first to conduct an aerial survey of the affected area after the tragedy. He added, "Our chopper ascended to around 8km above Dharali. We observed the Kheer Gad stream and the debris." Sarkar said that once cloud-free satellite images of the glaciated area are available, the team will finalise its findings in a report which will be submitted to the govt.

Advertisement

Debi Prasanna Kanungo, chief scientist at CBRI, added, "Combined rainfall and snowmelt likely triggered the cloudburst-induced glaciofluvial debris flow due to elevated daytime temperatures. Data from Wadia Institute shows around 100mm of rainfall occurred on Aug 4 and 5 in the area. This substantial precipitation, combined with snowmelt runoff, appears to have played a critical role in mobilising the debris."

Based on the aerial survey, the team has ruled out both Glacial Lake Outburst Flood (GLOF) and Landslide Lake Outburst Flood (LLOF) as causes of the flash flood. "We did not see any fresh active landslide marks for LLOF along the Kheer Gad or depressions that could indicate a glacial lake for GLOF," Kanungo said.

The scientists also dismissed the possibility of an ice-rock avalanche. "In the 2021 Rishiganga disaster in Chamoli, debris travelled nearly 25km and carried huge ice and rock pieces. Here, the debris moved just 8km and contained no ice or large rocks. We specifically asked locals and rescue teams about sightings of ice and rock, but they denied it, which rules out the avalanche theory," the team noted.

Advertisement

Published in :- https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/1st-aerial-survey-by-scientists-identifies-cloudburst-induced-debris-flow-as-likely-trigger-of-dharali-flood/amp_articleshow/123349265.cms

The August 4, 2025 flash flood in Uttarakhand's Chaurali area was likely caused by a cloudburst-triggered landslide that deposited moraine debris into the Kheer Ganga stream, blocking it and leading to a glacial lake outburst. A team of scientists from various institutes found no signs of a major avalanche but confirmed rainfall and temperature shifts played key roles in triggering the disaster.

कुदरत का कहर

2000 से अधिक फूट फीट डैंगरसूनुन से हेलेीकाप्टर से भेजे गए हैं आपदा प्रभावित क्षेत्र धरती में

2023 में जनरल के ही सिलसिलाम में निर्माणवाीन सुगम ढढने से कने व 41 प्रकिक

डैनिक जागरण
धरमपुरा/हरिद्वार, 8 अगस्त, 2025
www.jagran.com

आपदाओं का जोखिम कम करने को मजबूत प्रबंधन की जरूरत

आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण व तैयारी और वाद में प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण



रुड़की: भारतीय हिमालय आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप, भूखंडन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झील, बादल फटना आदि की दृष्टि से संवेदनशील है।

रुड़की, जहां जवा एव कर्मचारी परत है। बाढ़, डरगखंड, विमानच प्रदेग जैसे ढाढ़ाी घने ने धरती जैसे न्यूनीक आपदाओं का जोखिम हमेशा बन रहता है। इसलिए इन घने में मजबूत आपदा प्रबंधन योजना खेद जरूरी है। इससे पहले ही



2013 की आपदा उत्तराखंड को छह से आठ हजार करोड़ का नुकसान

डा. चौरसिया के अनुसार हिमखंडन में 2023 की आपदा के नगरा वदी के प्रदेग को करीब 10 हजार करोड़ रुपया का नुकसान और उत्तराखंड को 2013 की आपदा के बाद 18 से आठ हजार करोड़ रुपया का नुकसान नुकसान हुआ था। बताया कि किसी भी प्रकार की आपदा का प्रहार लंबे समय तक रहता है। इसलिए आपदाओं से होने वाले जन-मानस के जोखिम को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाने की जरूरत है।

प्रकार की आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण (मिनिमिजन) और तैयारी शामिल है। जबकि, आपदा के बाद प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण आवश्यक होता है, क्योंकि प्रकृतिक

आपदाओं को रोक नहीं जा सकता। ऐसे में बाकी रोक कनेक्ट पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। खतरा ही खतरा होने में निम्नलिखित को लेकर विशेष ध्यान देना जरूरी है और उनके कारण को दूर करना जरूरी है। जिसकी दिशा में केंद्रों को 50 से अधिक के घने में नकबन खेद का निर्माण की जा सकता है।

विज्ञानी डा. चौरसिया बताते हैं कि आपदा के बाद उठाए गए कदम काफी महत्वपूर्ण होते हैं। ऐसे में धरती जैसे आपदा के रोकथाम में सामान्य घने को दूर करना जरूरी है। जिसकी दिशा में केंद्रों को 50 से अधिक के घने में नकबन खेद का निर्माण की जा सकता है।

Presented in Newspaper: Dainik Jagran

प्राथमिक कक्षा से ही पढ़ाया जाए आपदा प्रबंधन

रुड़की: भारतीय हिमालय क्षेत्र भूकंप, भूखंडन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झील, बादल फटना, बाढ़ की दृष्टि से हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। आपदा से निपटने के लिए होमवर्क जरूरी है। यही वजह है कि आपदाओं के लिहाज से संवेदनशील राज्य उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर आदि में प्राचीन काल में परंपरागत तरीके से निर्माण कार्य किया जाता था, जो आपदाओं की भी होता था और किसानों की भी। जापान, ताइवान और नेपाल जैसे देशों ने आपदा प्रबंधन को प्राथमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया है। वहां बच्चों को आपदाओं से सबक लेते हुए तैयारियों में जुटने का पाठ पढ़ाया जाता है। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के संरचना

350 प्रतिशत अधिक भार सहने की क्षमता

डा. चौरसिया के अनुसार, सीबीआरआई ने कन्फाईड तकनीकी की सफलतापूर्वक टेस्टिंग की है। प्रयोगशाला में जांच के दौरान पाया गया कि कन्फाईड मेसनरी से निर्मित निर्माण में सामान्य घनाई के मुकाबले 350 प्रतिशत अधिक भार सहने की क्षमता है।

● जापान, ताइवान और नेपाल जैसे देशों ने इसे स्फूली पाठ्यक्रम में किया है शामिल

● पूर्वजों से सीख लेते हुए भवन निर्माण में भूकंपरोधी तकनीक के प्रयोग की जरूरत

कन्फाईड मेसनरी तकनीक का करें उपयोग

डा. अजय चौरसिया बताते हैं कि भवन निर्माण में कन्फाईड मेसनरी तकनीक का उपयोग करना चाहिए। इस तकनीक से भवन भूकंपरोधी व अन्य आपदाओं की बनाए जा सकते हैं। इसमें स्थानी निर्माण सामग्री का इस्तेमाल होता है। इस तकनीक में दीवार के दोनों



सीबीआरआई रुड़की के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया।

अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया बताते हैं कि आपदाओं से होने वाले जान-माल के नुकसान को कम करने के लिए इन तीन देशों से सीख लेने की आवश्यकता है। इन देशों ने आपदाओं से सबक लेते हुए तैयारियों पर जोर दिया। यही वजह है कि ताइवान में वर्ष 2024 में 7.2 तीव्रता का भूकंप आने पर 10 से भी कम लोगों की जान गई। जबकि, वर्ष 1999 में इसी देश में 7.6 तीव्रता के भूकंप में लगभग 2500 लोगों की जान गई थी और हजारों इमारतें तबाह हो गई थीं। डा. अजय चौरसिया के अनुसार, पूर्व में जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड व हिमाचल में पारंपरिक तकनीक काठकुनी से भवनों का निर्माण किया जाता था। जिस तरह पूर्वजों ने अपने अनुभवों से सीख लेकर आपदाओं से निपटने का पाठ पढ़ाया जाता है।

पहाड़ों में ढलान पर न हो निर्माण

डा. चौरसिया बताते हैं कि पहाड़ों में ढलान पर निर्माण नहीं होना चाहिए। इससे जब तीव्र गति से वर्षा का पानी आया तो इमारत को साथ लेकर चला जाएगा या नीव को कमजोर कर देगा। साथ ही पहाड़ों पर अधिक बहुमंजिला भवन न बनाया जाए।

Presented in Newspaper: Jagran

जोखिम कम करने को चाहिए मजबूत प्रबंधन

टीमा डेडिफिकेशन • जगदण



रुड़की: भारतीय हिमालय आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झील, बादल फटना आदि की दृष्टि से संवेदनशील है। क्योंकि, वह नया एवं कमजोर पर्वत है। वहीं, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में धराली जैसी प्राकृतिक आपदाओं का जोखिम हमेशा बना रहता है। इसलिए इन राज्यों में मजबूत आपदा प्रबंधन योजना बेहद जरूरी है। इससे भले ही प्राकृतिक आपदाओं को रोका न जा सके, लेकिन जान-माल के खतरे को काफी कम किया जा सकता है। यह कहना है केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया का।

डा. चौरसिया बताते हैं कि आपदा प्रबंधन योजना के छह कंपोनेंट (अवयव) होते हैं। जिसमें किसी भी प्रकार की आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण (मिटिगेशन) और तैयारी शामिल है। जबकि, आपदा के बाद प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता। इसे में बाकी पांच कंपोनेंट पर विशेष

राहत की पहले से हो तैयारी विज्ञानी डा. चौरसिया कहते हैं कि आपदा के बाद राहत एवं बचाव कार्य में काफी दिक्कत आती है। ऐसे में धराली जैसी आपदा के पीड़ितों को तुरंत राहत पहुंचाने के लिए पहले से व्यवस्था होनी चाहिए। सर्व करके कुछ सुरक्षित स्थानों पर स्कूल, अस्पताल आदि में कमरों की व्यवस्था करनी चाहिए। ताकि किसी भी प्रकार की आपदा आने पर पीड़ितों को तत्काल राहत पहुंचाई जा सके।

ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनके पालन की सख्त जरूरत है। चिंता की बात है कि पर्वतीय क्षेत्रों में करीब 85 प्रतिशत गैर इंजीनियर्ड इमारतें हैं। यानी इन्हें किसी पेशेवर इंजीनियर की ओर से डिजाइन एवं प्रमाणित नहीं किया गया है। नियमानुसार नदियों के

उत्तराखंड को छह से आठ हजार करोड़ का नुकसान डा. चौरसिया के अनुसार हिमाचल में 2023 की आपदा के कारण वहां के पर्यटन को करीब 10 हजार करोड़ रुपये का सालाना और उत्तराखंड को 2013 की आपदा के बाद छह से आठ हजार करोड़ रुपये का सालाना नुकसान हुआ था। आपदा का प्रभाव लंबे समय तक रहता है, इसलिए जोखिम को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए।

50 मीटर के दायरे में मकान आदि का निर्माण नहीं किया जा सकता। बावजूद इसके पहाड़ी क्षेत्रों में नदियों के आसपास निर्माण हो रहा है। उनके अनुसार 2023 में जोशीमठ भूधंसव की वजह नियमों का पालन नहीं होना था। जोशीमठ में लूज मलबे में लोगों ने मकान बना रखे हैं। ड्रेनेज की कोई व्यवस्था नहीं है।

- आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण व तैयारी और बाद में प्रतिक्रिया पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण
- पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनका सख्ती से पालन कराने की जरूरत

विशेषज्ञों ने आपदाग्रस्त क्षेत्र में की पड़ताल

उत्तरकाशी। धराली में आपदा से प्रभावित क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण करने और इस घटना के संभावित कारणों को जानने के लिए शासन की ओर से गठित विशेषज्ञों की टीम बुधवार को धराली पहुंची।

टीम ने प्रभावित क्षेत्र में आपदा से हुए नुकसान, उसकी प्रवृत्ति और कारणों की मीके पर पड़ताल की। पांच सदस्यीय विशेषज्ञों की यह टीम पूरे आपदाग्रस्त क्षेत्र का सर्वे करने के बाद अपनी रिपोर्ट शासन को सौंपेगी।

विशेषज्ञों की इस टीम में उत्तराखंड भूस्खलन शमन एवं प्रबंधन केंद्र के निदेशक शांतनु सरकार, केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के निदेशक रवि नेगी, वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अमित कुमार, उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण और प्रबंधन केंद्र के प्रधान सलाहकार मोहित कुमार शामिल हैं। बुधवार को विशेषज्ञों ने धराली में फले मलबे के नमूनों को भी परखा। खीरगंगा के प्रवाह क्षेत्र और मलबे के प्रसार का भी जायजा लिया।

स्थानीय लोगों से घटना के बारे में जानकारी प्राप्त की। बुधवार को भी विशेषज्ञों की टीम धराली में अलग-अलग स्थानों पर जाकर बीते पांच अगस्त को खीर गंगा में आई तबाही के कारणों को तलाशने का काम करेगी। ज्ञात हो कि यह टीम दो दिन से मौसम खराब होने के कारण प्रभावित क्षेत्र में नहीं पहुंच सकी थी। ब्यूरो

Presented in Newspaper: Jagran

Dr. Ajay Chourasia, senior scientist at CSIR-CBRI, emphasizes the need for strong disaster management through risk assessment, early warnings, and preparedness. Citing the 2013 Kedarnath and 2023 Uttarakhand disasters, he highlights the importance of coordinated response and long-term recovery to reduce future risks.

पब्लिक न्यूज़
राष्ट्रीय
5

सीबीआरआई रुड़की और एचपीएसडीएमए का संयुक्त प्रयास आपदा प्रबंधन में नई दिशा

संक्षेप रूप से

रुड़की: सीएसआईआर-सीडीएआर का संयुक्त प्रयास (सीबीआरआई), रुड़की में "सुशम प्रॉपर्टीज एंड बिल्डर्स" द्वारा आयोजित "सिटी प्रॉपर्टीज प्रीशियर कार्यक्रम" का शुभारंभ "1 अगस्त 2025" को संजय शर्मा ने हुआ। यह कार्यक्रम "28 अगस्त" से "अगस्त" तक "सीएसआईआर एबीडूएन कौशल प्रसार" के तहत "विश्वव्यापी प्रोग्राम" का हिस्सा है।



यह प्रीशियर कार्यक्रम "शुभ आरंभ" के तहत आयोजित किया गया, जिसका शुभारंभ "सिटी प्रॉपर्टीज प्रीशियर कार्यक्रम" का शुभारंभ "1 अगस्त 2025" को संजय शर्मा ने हुआ। यह कार्यक्रम "28 अगस्त" से "अगस्त" तक "सीएसआईआर एबीडूएन कौशल प्रसार" के तहत "विश्वव्यापी प्रोग्राम" का हिस्सा है।

SHUSHAM PROPERTIES AND BUILDERS

Shusham Kumar 9111111111

DR. MPT, Man, Man, Durgam

Published in Public News Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 30.07.2025

Low cost construction technologies book published by cbri researcher.

• The Voice Of Nation

Dr Rakesh Vashishtha

News Room Roorkee –CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025) by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.



Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Voice of Nation"

Low cost construction technologies book published by cbri researcher.



• The Times Of Suncity
(Dr Rakesh Vashishtha) N.O. Roorkee

CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025) by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.

Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Times of Suncity"

CSIR-CBRI Roorkee released a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947–2025)" by Ar. S.K. Negi on 30th July 2025, showcasing affordable, sustainable, and disaster-resilient building solutions. The launch was led by CBRI Director Prof. R. Pradeep Kumar and senior scientists.

CSIR-CBRI in the Limelight | 29.07.2025

उत्तराखंड

Skill Initiative Program.



By Sahara Live News

○ JUL 28, 2025



A five-day Training Program on Seismic Retrofitting and DPR Preparation commenced today at CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. Scheduled from July 28 to August 1 2025, the workshop is sponsored by the Himachal Pradesh State Disaster Management Authority (HPSDMA) and coordinated by Er. Ashish Pippal, Senior Scientist, CSIR-CBRI. The inaugural session was graced by the Chief Guest, Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, along with Ar. S.K. Negi, Chief Scientist, and other eminent dignitaries including Dr. Ajay Chaurasiya, Sh. Nadeem Ahmad, Dr. Leena Chaurasiya, Dr. Chandan Swaroop Meena, and Dr. Naveen Nishant. Along with that, Sh. Rajnish Kumar, Technical Assistant, Ms. Sanskriti Sharma, Sh. Amzad, Sh. Mahesh, and other staff members from the ODS Division also extended their valuable support and presence. Dr. Ajay Chaurasia briefed the participants about the objectives and structure of the training program. He motivated the participants by highlighting the importance of such technical workshops in enhancing practical knowledge and skills. Thereafter, Ar. S.K. Negi expressed heartfelt appreciation for the unwavering support and trust shown by the Himachal Pradesh Government towards CSIR-CBRI. He remarked that such collaborations not only strengthen institutional ties but also play a pivotal role in advancing safer and more resilient infrastructure across vulnerable regions. Director Prof. R. Pradeep Kumar, in his inaugural address underlined the importance of hands-on training and real-world experience in the field of structural engineering. He remarked, "It is through practice that knowledge becomes wisdom. In hilly regions, the risk of structural failures is significantly higher, and hence, engineers must meticulously examine every aspect on the ground." He also introduced the participants to CSIR-CBRI's vision, capabilities, and ongoing research in earthquake-resistant construction and retrofitting technologies. The vote of thanks was proposed by Sh. Nadeem Ahmad, Chief Scientist, who extended a warm welcome to all participants and conveyed his best wishes for a productive and enriching training experience. He acknowledged the collective efforts of the organizing team and emphasized the value of collaborative learning in strengthening disaster resilience. The training program comprises expert lectures, technical sessions, and hands-on demonstrations designed to enhance the practical skills and awareness of engineers and professionals engaged in structural safety and disaster risk mitigation.

Ishwar chand reporter sahara tv uttrakhand

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9548>

www.hindustannews.com
हिन्दुस्तान 04
देहरादून, गंगालतार, 29 जुलाई 2025

‘इंजीनियरों को हर पहलू का निरीक्षण करना चाहिए’

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि संरचनात्मक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में व्यावहारिक प्रशिक्षण और कार्यस्थल अनुभव का विशेष महत्व है। अभ्यास से ही ज्ञान में परिपक्वता आती है। पहाड़ी क्षेत्रों में संरचनात्मक असफलताओं की संभावना अधिक होती है। इसलिए इंजीनियरों को प्रत्येक पहलू का गहन निरीक्षण करना चाहिए। सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने प्रतिभागियों को सीबीआरआई की गतिविधियों, क्षमताओं और भूकंपरोधी निर्माण तथा रेट्रोफिटिंग तकनीकों पर किए जा रहे अनुसंधान से भी अवगत कराया।

सीबीआरआई में भूकंपीय रेट्रोफिटिंग और डीपीआर तैयारी पर आधारित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ सोमवार को किया गया। जिसका प्रयोजन हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

सीबीआरआई में भूकंपीय रेट्रोफिटिंग तैयारी पर प्रशिक्षण शुरू

(एचपीएसडीएमए) द्वारा किया गया है। सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी ने सीबीआरआई के प्रति हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा प्रदर्शित सहयोग और विश्वास के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार का सहयोग संस्थानगत साझेदारी को आगे बढ़ाता है।

इस दौरान डॉ. अजय, नदीम, डॉ. लीना, डॉ. सीएस मीना, डॉ. नवीन निशांत आदि मौजूद रहे। पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेषज्ञ व्याख्यान, तकनीकी सत्रों और व्यावहारिक प्रदर्शन के माध्यम से प्रतिभागियों की संरचनात्मक सुरक्षा और आपदा जोखिम न्यूनीकरण से संबंधित व्यावहारिक दक्षताओं को बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है।



रुड़की सीबीआरआई में सोमवार को आयोजित कार्यशाला में उपस्थित लोग। • हिन्दुस्तान

Published in Hindustan Newspaper



सीबीआरआई में स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ करते संस्थान के निदेशक • संस्थान

सीबीआरआई में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर शुरू

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में सोमवार को स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ संस्थान के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने किया। उन्होंने कहा कि समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण जरूरी है। जिस तरह की लाइफ स्टाइल हो चली है उसमें तमाम विकार शरीर में उत्पन्न हो रहे हैं। इनको शुरुआत में

अनदेखा करने से बाद में यह बड़ी बीमारी बन जाते हैं। आज डायबिटीज, ब्लड शुगर, कोलेस्ट्रॉल का बढ़ना, हाई बीपी आदि की समस्या बढ़ती जा रही है। यह शिविर 30 जुलाई तक चलेगा। सोमवार को संस्थान के 55 प्रतिभागियों ने स्वास्थ्य जांच कराई। इस मौके पर समन्वयक सीबीआरआई के डा. राजेश कुमार वर्मा, सह समन्वयक डा. नीरज जैन आदि मौजूद रहे।

Published in Dainik Jagran

CSIR–CBRI, Roorkee started a five-day training on Seismic Retrofitting and DPR Preparation on 28 July 2025, supported by HPSDMA. Inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, the program focuses on practical training for disaster resilience and structural safety.

CSIR-CBRI in the Limelight | 19.07.2025

Shah directs formation of team to address Himachal natural disasters

Jayashree Nandi

letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: Union home minister Amit Shah has directed the formation of a multi-sectoral central team to study and address increasing frequency and intensity of natural disasters in Himachal Pradesh, the ministry of home affairs (MHA) said in a statement.

In a recent meeting chaired by

Shah, it was observed that the Himalayan state has witnessed an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread loss of life, damage to infrastructure, livelihoods and environmental degradation.

To address these concerns, the MHA constituted a multi-sectoral central team, comprising experts from National Dis-

aster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, Geologist, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore, the statement said.

At least 85 lives have been lost, and 34 people are still missing in rain-related incidents in the hill state in the ongoing monsoon so far.

-P8

Published in Hindustan Times Newspaper

Set up multi-sectoral team for natural disasters, says Shah

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: In view of the increasing frequency and intensity of natural disasters and the need to mitigate losses, Union home minister Amit Shah on Sunday directed the formation of a multi-sectoral central team.

Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported due to an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread damage to infrastructure and environmental degradation in the state.

The multi-sectoral central team would comprise experts from National Disaster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore.

To provide immediate relief to affected people in Himachal Pradesh, the Union govt has already deputed an Inter-Ministerial Central Team (IMCT) for a



Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported

first-hand assessment of the damages. IMCT is visiting the affected areas of the state from July 18-21.

A high-level committee chaired by Shah has already approved an outlay of over Rs 2,006 crore to Himachal Pradesh for recovery and reconstruction in areas affected by disasters like floods, landslides and cloudbursts in 2023, releasing the first instalment of this package (Rs 451 crore) on July 7.

Earlier on June 18, Centre released an instalment of Rs 198 crore for relief measures in Himachal Pradesh under State Disaster Response Fund.

Published in Times New Network Newspaper

हिमाचल प्रदेश में आपदाओं पर केंद्र गंभीर, बनाएगा विशेष टीम

गृह मंत्री राह का निर्देश-पता लगाएं, क्यों बढ़ी आपदाएं

अमर उजाला ब्यूरो



नई दिल्ली: हिमाचल प्रदेश में बाढ़ फटने, अचानक बाढ़ आने और भूस्खलन की बढ़ती घटनाओं पर केंद्र सरकार गंभीरता से ध्यान दे रही है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति के कारणों का पता लगाने के लिए एक बहु-क्षेत्रीय समिति के गठन का निर्देश दिया है। इसमें कई प्रमुख संस्थानों के विशेषज्ञ शामिल होंगे।

गृह मंत्री शाह की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में इस बात पर संयम किया गया कि हिमाचल प्रदेश में बाढ़ल फटने, भूस्खलन और मूसलाधार बारिश की आवृत्ति और तीव्रता में सुदृढ़ हुई है। इससे राज्य में व्यापक जनहानि, वृद्धिवादी बांधे और आजीविका को नुकसान और पर्यावरण क्षरण भी हुआ है। शाह ने तुरंत राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एडीएमए), केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की, भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) पुणे, भूविज्ञानी और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के विशेषज्ञों को एक बहु-क्षेत्रीय केंद्रीय टीम गठित करने का निर्देश दिया।

बैठक में कहा गया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, केंद्र सरकार आपदाओं के समय बिना किसी भेदभाव के राज्यों के साथ प्रज्वलित से खड़ी है। अमित शाह की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति वर्ष

अंतर-मंत्रालयी दल ले रहा हालात का जायजा. हिमाचल प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में दक्षिण-पश्चिम मानसून 2025 के दौरान बाढ़, अचानक आई बाढ़ और भूस्खलन के मद्देनजर केंद्र सरकार राज्य के ज्ञान का इंतजार किए बिना ही नुकसान के प्रत्यक्ष आकलन के लिए एक अंतर-मंत्रालयी केंद्रीय दल को 18 जुलाई को ही भेज चुका है। यह केंद्रीय दल 21 जुलाई तक राज्य के प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करेगा।

अन्य राज्यों की भी लगातार की जा रही है मदद. हिमाचल प्रदेश के आपदा प्रभावित लोगों को सहायता के लिए केंद्र सरकार 18 जून को राज्य आपदा मंत्रालय निधि से 198.80 करोड़ रुपये को केंद्रीय हिस्सेदारी को पहली किस्त भी दे चुकी है। केंद्र ने हिमाचल समेत सभी राज्यों को आंतरिक राष्ट्रीय आपदा मंचन प्लान (एडीएमएएफ) टीमें, सेना टोमें और वायु सेना को तैनाती सहित सभी प्रकार की रसद सहायता भी प्रदान की है।

2023 के लिए आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वास और पुनर्निर्माण के लिए हिमाचल प्रदेश को 2006.40 करोड़ के परिचय्य को पहले ही मंजूरी दे चुकी है। 17 जुलाई 2025 को 451.44 करोड़ रुपये को पहली किस्त भी जारी कर दी गई थी।

Published in Amar Ujala Newspaper

Union Home Minister Amit Shah has called for the formation of a multi-sectoral central team to tackle natural disasters, following increased incidents in Himachal Pradesh. The proposed team will include experts from various institutions like CSIR-CBRI and focus on damage assessment, infrastructure restoration, and long-term disaster management planning.

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण का भव्य समापन — युवाओं को मिली ऊर्जा दक्ष और सतत भवन निर्माण तकनीकों की गहन जानकारी

📍 bahadradnews 📅 July 19, 2025 🕒 11:21 am



प्रशिक्षण-कक्ष में शिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत 'भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों में नवीनतम प्रवृत्तियों' का समापन शुक्रवार को संस्थान परिसर में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।



यह प्रशिक्षण 16 से 18 जुलाई तक आयोजित किया गया, जिसमें देश के विभिन्न तकनीकी संस्थानों से आए प्रतिभागी छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।



प्रशिक्षण-कक्ष में शिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत 'भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों में नवीनतम प्रवृत्तियों' का समापन शुक्रवार को संस्थान परिसर में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।



वर्ल्ड-कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम के अंतर्गत 'भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों में नवीनतम प्रवृत्तियों' का समापन शुक्रवार को संस्थान परिसर में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

बल्कि उन्हें सतत और ऊर्जा दक्ष निर्माण तकनीकों से भी अवगत कराते हैं। उन्होंने भवन निर्माण क्षेत्र में तकनीकी विकास और पर्यावरणीय स्थायित्व को एक साथ जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया।



ओडीएस प्रमुख श्री नदीम अहमद ने युवाओं में व्यावहारिक कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि आज का निर्माण उद्योग उन्नत तकनीकों और स्मार्ट समाधानों की ओर बढ़ रहा है, ऐसे में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है।

इस कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम द्वारा किया गया, जिनके नेतृत्व में श्री रजनीश सहित आउटरीच एवं प्रचार-प्रसार सेवा प्रभाग (ओडीएस) की टीम ने उत्कृष्ट समन्वय किया। प्रतिभागियों को ऊर्जा दक्ष भवन निर्माण, स्मार्ट निर्माण प्रणालियाँ और टिकाऊ तकनीकों पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी अनुभव रहा।

Published in :- <https://bahadradnews.com/csir-cbri-grand-closing-of-three-day-national-training-in-roorkee-energy-of-energy-and-sustainable-building-construction-techniques-received-by-the-youth/>

CSIR-CBRI in the Limelight | 16.07.2025

उत्तराखंड

“Latest Trends in Building Construction



By Sahara Live News

© JUL 16, 2025



Three-Day Training Program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" Begins at CSIR-CBRI, Roorkee

Roorkee, July 16, 2025 — A three-day national-level training program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" commenced today at the CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee. Scheduled from July 16 to 18, the program is specially designed for trainee students from various technical institutes across India, aiming to expose them to cutting-edge innovations and sustainable practices in the field of building construction.

The training program was inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, Director of CSIR-CBRI. In his inaugural address, Prof. Kumar highlighted the importance of staying abreast of technological advancements in the construction sector. He stated, "Innovations are continuously reshaping the building construction landscape. It is crucial for today's youth to be aware of sustainable, advanced, and environmentally friendly technologies. This program will not only impart practical knowledge but also instill confidence in young professionals to face future challenges." He also underlined the significance of both academic education and value-based learning for holistic development.

The inauguration began with a warm welcome to all participants by Shri Nadeem Ahmad, Chief Scientist. The training is being coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, and includes a series of expert sessions on vital topics such as precast construction systems, prefabricated construction technology, energy-efficient building design, and smart construction methods.

To provide experiential learning, the program also features guided tours of CSIR-CBRI's state-of-the-art labs at CSIR-CBRI, Roorkee, allowing participants to witness firsthand the practical application of the technologies discussed.

Present during the inauguration were Er. Ashish Pippal, Dr. Chandan Swaroop Meena, Mr. Rajnish Kumar (Technical Assistant), and other members of the Outreach and Dissemination Services (ODS) team. The inaugural session concluded with a vote of thanks by Er. Ashish Pippal, who urged participants to make the most of this learning opportunity and channel their knowledge towards meaningful societal and academic contributions.

Certificates will be distributed to all participants during the closing ceremony on July 18, marking the successful culmination of this impactful training initiative.

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9509>

CSIR-CBRI Roorkee held a three-day training program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" from July 16–18, 2025, for technical students across India. The program featured expert sessions, lab visits, and hands-on demonstrations on modern, sustainable construction practices.

उत्तराखंड

डेस्टिनेशन हिमाचल 2025



By Sahara Live News

© JUL 3, 2025



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुधीर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दिलचस्प प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्कूली छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और लचीले निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ईश्वर चंद्र संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9454>

From 2nd-4th July 2025, CSIR-CBRI Roorkee participated in "Destination Himachal 2025" in Dharamshala, showcasing innovative building technologies for disaster-prone, high-altitude regions. Its exhibits like prefab shelters and solar water heaters drew attention from dignitaries and visitors.

CSIR-CBRI in the Limelight | 28.06.2025

राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय खास खबर राजनीति लोकतन्त्र स्वास्थ्य राज्य शिक्षा एक्सक्लूसिव बॉलीवुड

UNCATEGORIZED

सीएसआईआर - सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट रुड़की में महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव पहुंची रूड़की, हुआ स्वागत



सीएसआईआर - सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की में सीएसआईआर की महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (श्रीमती) एम. Kalaiselvi तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के दौरे पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के साथ बरिष्ठ वैज्ञानिक एस. के. नेगी, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. डी. पी. कनुगो, डॉ. पी. सी. पणशियाल, एस. के. सिंह, डॉ. घंटन स्वरूप मीणा, अशोष विप्लव, डॉ. हेमलता, डॉ. हीना गुप्ता, ashwathi और डॉ. सीमा चौरसिया उपस्थित रहे। आगंतुक विभिन्न अतिथियों ने संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिसमें विरासत दीर्घा (Virasat Dirgha), राष्ट्रीय भूकंप अभियंत्रण परीक्षण सुविधा (NEETF), डेडवुड फ्लो सुविधा, लिक्विफैक्शन प्रयोगशाला, उडी प्रिंटिंग लेब, अग्नि अभियंत्रण परीक्षण सुविधा एवं ऑपन वेस फायर मिटिगेशन सुविधा प्रमुख रही।

भ्रमण के पश्चात आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: "हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

डॉ. कलाईसेवी ने अपने संबोधन में सीबीआरआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकारक भवनों, 12000 फीट की ऊँचाई or uske uppar उपयोग योग्य solar water heater सौर तापीय प्रणाली, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी, उडी प्रिंटिंग तकनीक, और HARI Project के अंतर्गत लेह-लद्दाख जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित आवासीय समाधानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना .

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-समृद्ध और नवाचार केंद्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआरआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है। उन्होंने और आयदा-नेधी भवन डिजाइन परियोजनाओं में सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रचारित करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि उनका लाभ सुदूरवर्ती और आयदा-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्थान निदेशक द्वारा अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33794>

उत्तराखण्ड

हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR" ।



By Sahara Live News
© JUN 28, 2025



सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में टीजी, सीएसआईआर और सचिव, टीएसआईआर, भारत सरकार एवं सचिव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार का आगमन रुड़की, 28/06/2025.

सीएसआईआर – उद्युत विशिष्ट रिचार्ज इंडीएटुए (सीबीआरआई), रुड़की में आज सीएसआईआर की महानिदेशक एवं टीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (बीमती) एन कलाईसेली तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के टोरे पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआरआई निदेशक प्रो. अरु. प्रदीप कुमार के साथ वैश्व वैज्ञानिक एस के नेगी, डॉ. अमय चौधरी, डॉ. डी. पी. कन्नू, डॉ. पी. सी. धरियावाल, एस. के. सिंह, डॉ. वंदन सरस्वती, मीरा, आशीष शिवाल, डॉ. हेमलता, डॉ. हीम गुप्ता, ashwathi और डॉ. तीना चौधरी उपस्थित रहे। अग्रगण्य विशिष्ट अतिथियों ने संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिनमें विरसात दीर्घा (Virasat Digha), राष्ट्रीय भूकंप अभियंत्रण परीक्षण सुविधा (NEETF), डीएस एल सुविधा, डिजिटल प्रयोगशाला, उड़ी प्रिंटिंग टेब, अग्रि अभियंत्रण परीक्षण सुविधा एवं अंतरिक्ष वेत फायर प्रिंटिंग सुविधा प्रमुख रही।

भ्रमण के पश्चात अव्योक्त कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. अरु. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: "हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

डॉ. कलाईसेली ने अपने संबोधन में सीबीआरआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकारक भवनों, 12000 फीट की ऊंचाई पर solar water heater और तापीय प्रणाली, अग्रि सूर्य अभियंत्रण, उड़ी प्रिंटिंग तकनीक, और HARU Project के अग्रगत तैयार-तलाश जैसे उच्च दिशात्मक क्षेत्रों के लिए विकसित आवासीय समाधानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना चाहिए: "To touch the untouched, to reach the unreached"।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-सम्पन्न और नवाचार-केन्द्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआरआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने Polar Mission Centers, Coastal Marine Spatial Planning, और आपदा-रोधी भवन डिजाइन परियोजनाओं में सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रदर्शित करने की आवश्यकता पर बत दिया ताकि उनका लाभ सतृप्तता और आपदा-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्थान निदेशक द्वारा अतिथियों को सृष्टि भिन्ने करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Ishwar chand reporter sahara tv

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9416>

On 28 June 2025, Dr. N. Kalaiselvi (DG, CSIR & Secretary, DSIR) and Dr. M. Ravichandran (Secretary, MoES) visited CSIR-CBRI, Roorkee. They reviewed CBRI's advanced facilities and praised its innovations in disaster-resilient housing, green technologies, and its role in achieving the CSIR@2047 vision, especially for remote and high-altitude areas.

CSIR-CBRI in the Limelight | 27.06.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में 'कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर कार्यशाला का समापन



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा आयोजित 'उत्तर-पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र की कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर केंद्रित पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन शुक्रवार को ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, सीएसआईआर-सीबीआरआई परिसर में हुआ। यह कार्यशाला 23 जून से प्रारंभ हुई थी, जिसमें विभिन्न अभियंता, वास्तुविद, शोधकर्ता और तकनीकी पेशेवर शामिल हुए। इसमें ऐसे निर्माण तरीकों पर चर्चा की गई जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार, किफायती और पर्यावरण के अनुकूल हों। प्रस्तुतियों और प्रायोगिक सत्रों के माध्यम से पारंपरिक हिमालयी तकनीकों को आधुनिक निर्माण विधियों के साथ जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया गया। समापन सत्र में कार्यशाला के प्रमुख बिंदुओं की संक्षिप्त समीक्षा की गई। वक्ताओं ने ऐसे निर्माण समाधान अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया जो स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल हों और प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर सकें, विशेषकर ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में। इस अवसर पर सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूंगो ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक शोध और पारंपरिक ज्ञान को मिलाकर निर्माण क्षेत्र की कई समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। उन्होंने बताया कि संस्थान ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी तकनीकों के विकास के लिए कार्य करता रहेगा। इसके पूर्व प्रमाण पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों को डॉ.कानूंगो, डॉ.ताबिश आलम, आर्किटेक्ट अनुप कुमार प्रसाद, और डॉ.नवीन निशांत द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ.ताबिश आलम द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सभी वक्ताओं, आयोजकों और उपस्थितजनों का सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। यह कार्यशाला निर्माण तकनीकों की समझ और अनुभव साझा करने का अवसर बनी, जिससे क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान तैयार करने में सहयोग मिल सकता है।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33769>

CSIR-CBRI, Roorkee held a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost, eco-friendly construction for the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.

CSIR-CBRI in the Limelight | 23.06.2025

उत्तराखण्ड

उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों”



By Sahara Live News

© JUN 23, 2025



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट, रुड़की द्वारा आयोजित “उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों” पर पांच दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन सत्र 23 जून 2025 को शुरू हुआ और यह 27 जून 2025 तक जारी रहेगा, जिसमें विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और पेशेवरों को क्षेत्रीय रूप से टिकाऊ और लागत प्रभावी निर्माण विधियों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ लाया जाएगा। उद्घाटन सत्र की शुरुआत कार्यशाला के उद्देश्यों के विस्तृत अवलोकन के साथ हुई। अनूप कुमार प्रसाद ने पुष्प के साथ निदेशकों महोदय का स्वागत किया। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक सुरेंद्र कुमार नेगी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार, रुड़की ने कम लागत वाले समाधानों के माध्यम से हिमालय क्षेत्र में निर्माण चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से विशेषज्ञों की भागीदारी पर प्रकाश डालते हुए उद्घाटन भाषण दिया।

Published in:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9387>

CSIR-CBRI, Roorkee organized a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost construction in the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.

CSIR-CBRI in the Limelight | 06.06.2025

उत्तराखंड

प्रधानमंत्री आवास योजना- ग्रामीण, उदय भारत की तस्वीर



By Sahara Live News

© JUN 6, 2025



सीबीआरआई रुड़की अपने कार्यों के लिए भारत के साथ-साथ विदेश में भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं भारत सरकार की लोक कल्याणकारी नीतियों को धरातल पर उतरने के लिए रोजाना नए आयाम स्थापित और प्रयास करती रहती है प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण उदय भारत की एक साथ तस्वीर है सी बी आर आई विभिन्न क्षेत्रों में शोध करके कार्यों को जमीन से जुड़े हुए कार्यों को आम आदमी तक पहुंचाने के कार्य करती है यहां के वैज्ञानिक और रोजाना नए शोध कर करके भारत को एक नई पहचान देते हैं

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने पीएमएवाई-जी, एमओआरडी के तहत क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के तहत आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

इस कार्यक्रम में गोवा के माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत ने मुख्य अतिथि के रूप में और मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री पेम्मासानी चंद्रशेखर ने सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लिया।

कार्यशाला में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने, नवीन समाधानों की खोज करने और पीएमएवाई-जी योजना के लिए आगे का रास्ता तय करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

कार्यशाला के दौरान ग्रामीण आवास महानिदेशक और रक्षा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने पीएमएवाई-जी मिशन की सफलता में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अपार योगदान को स्वीकार किया और उसकी सराहना की। 2016 में कार्यक्रम की स्थापना के बाद से, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने निम्नलिखित में महत्वपूर्ण योगदान दिया है:

Published in:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9345>

CSIR-CBRI, Roorkee participated in World Environment Day by contributing to rural development under Unnat Bharat Abhiyan, showcasing its efforts toward sustainable village growth.

CSIR-CBRI in the Limelight | 05.06.2025

पर्यावरण संरक्षण हम सब की जिम्मेदारी, नरेंद्र पन्त डीएसपी



रुड़की सी बी आर आई परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण का आयोजन किया गया कार्यक्रम में पहुंचे

श्री नरेंद्र पंत , डीएसपी रुड़की और विश्व पर्यावरण दिवस के मुख्य अतिथि, डॉ डी पी कानूनगो जी, आज के कार्यवाहक निदेशक सीबीआरआई, डॉ आर के वर्मा, समिति के अध्यक्ष, सभी वरिष्ठ वक्ताओं और छात्रों ने पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए व्याख्यान दिए

कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना और हरित भारत के संकल्प को साकार करना था। इस अवसर पर फलदार, छायादार और औषधीय पौधों का रोपण किया गया, जिनमें पीपल, नीम, आम, बेल, अशोक और तुलसी प्रमुख रहे।

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते प्रदूषण के बीच हमें प्रकृति के संरक्षण की ओर गंभीरता से ध्यान देना होगा। उन्होंने युवाओं से विशेष रूप से अपील की कि वे अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल भी करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण मिल सके।

उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि प्रकृति हमारी जिम्मेदारी है। वृक्षारोपण केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन देने वाला प्रयास है।

कार्यक्रम का समापन देश के पर्यावरण की रक्षा हेतु सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हुए किया गया

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9334>

A tree plantation drive was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on World Environment Day to promote environmental awareness. Director Dr. Naresh Batra emphasized the importance of connecting with and protecting nature.

CSIR-CBRI in the Limelight | 15.05.2025

स्वच्छता सबका दायित्व 'प्रो. आर. प्रदीप कुमार, निदेशक सी बी आर आई'



By Sahara Live News

© MAY 15, 2025



"स्वच्छता सबका दायित्व" थीम के तहत भारत सरकार की प्दत स्वच्छता पखवाड़ा 2025 चल रहे उत्सव के हिस्से के रूप में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की ने अपने दो सप्ताह के स्वच्छता अभियान (1-15 मई, 2025) का समापन 15 मई, 2025 को आरएफटी ऑडिटोरियम में आयोजित एक समापन समारोह के साथ किया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. तीना चौरसिया और डॉ. नीरज जैन ने किया। डॉ. तीना चौरसिया ने सम्मानित सभा का स्वागत किया और पखवाड़े के दौरान आयोजित गतिविधियों का विस्तृत अवलोकन प्रस्तुत किया, जिसमें वृक्षरोपण अभियान, सीएसआईआर-सीबीआरआई सदस्यों के लिए एक नारा प्रतियोगिता, सीएसआईआर-सीबीआरआई कर्मचारियों और बात विद्या मंदिर स्कूल के छात्रों के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता, बिजली के उपकरणों की सफाई और पूरे संस्थान में व्यापक सफाई अभियान आदि शामिल थे। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और सभी समन्वयकों, प्रतिभागियों और सहयोगी कर्मचारियों के समूहिक प्रयासों की सराहना की। उन्होंने स्वतंत्र विकास के महत्व पर जोर दिया, युवाओं को अपेक्षित प्रबंधन के लिए अतिमन समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित किया और बाहरी सफाई के साथ-साथ मानसिक शांति बनाए रखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा, "स्वच्छता पूजा के बाद दूसरे स्थान पर है।"

डॉ. नीरज जैन ने चित्रकला प्रतियोगिता में उल्लेखनीय उदाहरण और प्रतिभा के साथ प्रतियोगिताओं के विजेताओं और उपविजेताओं के नामों की घोषणा की। प्रशंसा और प्रेरणा के रूप में, प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने रत्नगण और चित्रकला प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए, बच्चों और प्रतिभागियों के प्रयासों और रचनात्मकता की सराहना की।

एक विशेष सम्मान के रूप में, ए.आर. एस.के. नेगी, वरिष्ठ मुख्य वैज्ञानिक ने संस्थान के सफाई कर्मचारियों को स्वच्छता बनाए रखने के उनके निरंतर प्रयासों के लिए प्रशंसा का प्रतीक देकर सम्मानित किया।

समारोह का समापन डॉ. एस. मैती द्वारा दिए गए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने निदेशक महोदय, बात विद्या मंदिर के शिक्षकों और छात्रों, आगोजन टीम और सीएसआईआर-सीबीआरआई में स्वच्छता पखवाड़ा 2025 के सफल आगोजन में योगदान देने वाले सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

Published in Sahara news :- <https://www.janmudde.com/archives/33392>

The valedictory ceremony of Swachhta Pakhwada 2025 was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on 15th May 2025. Director Prof. R. Pradeep Kumar distributed prizes to children and appreciated their active participation in promoting cleanliness.

The event also saw enthusiastic involvement from scientists, staff, and officials of the institute.

CSIR-CBRI in the Limelight | 13.05.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर की चर्चा

Jan Mudde · 3 days ago · 1 min read



आरिफ़ नियाज़ी।

रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं।

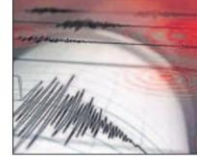
[Published in Jan Mudde E-newspaper](#)

आधुनिक उपकरणों का प्रयोग जरूरी

चर्चा

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में सीबीआरआई में एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। खंडहर से लचीलापन सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक शीर्षक पर वैज्ञानिकों ने अपनी-अपनी राय दी। वैज्ञानिकों का मानना है कि भूकंप और भूस्खलन के जनहानि से बचने के लिए आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करना होगा। हेल्थ और एनर्जेशन सेंटर को और मजबूत करना होगा।

कार्यक्रम की शुरुआत सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने की। इसके बाद पैनल चर्चा हुई। चर्चा का मुख्य निष्कर्ष यह



निकला कि स्थानीय इंजीनियरों, राजमिस्त्रियों और अधिकारियों के बीच क्षमता निर्माण को मजबूत करने की तत्काल आवश्यकता है। भूकंप सुरक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम को संशोधित करना है। विशेषज्ञों ने कमजोर इमारतों, विशेष रूप से स्कूलों, अस्पतालों और विरासत संरचनाओं को फिर से तैयार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। पैनल ने भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ के जोखिमों को नियोजन में सम्मिलित करते हुए बहु-खतरों जोखिम

क्षेत्रीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने भारतीय मानकों (आईएस कोड) को नियमित रूप से अपडेट करने और गैर-संरचनात्मक तत्वों जैसे कि इन्फिल्ट दीवारों और फिक्स्चर पर अधिक ध्यान देने का भी आह्वान किया। जीआईएस, ड्रोन और त्वरित ऑकलन जैसे आधुनिक उपकरणों के उपयोग को भविष्य की तैयारियों के लिए आवश्यक माना गया।

कार्यक्रम का संपन्न सीबीआरआई के वैज्ञानिक एसके नेगी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया। इस दौरान आशीष पिप्लत, मिनी दलवेहरा, डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, आशीष कपूर, समीर यादव, अमित कुश, प्रो. सीबी आर मूर्ति, प्रो. डी श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेण गोस्वामी आदि शामिल रहे।

[Published in Hindustan Times](#)

खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 के नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक

सीएसआईआर-सीबीआरआई में हुई परीचर्चा

गोल्डन टाइम्स रुड़की (आरिफ़ नियाज़ी) रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं। दरअसल

2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने 13 मई, 2025 को "खंडहर से लचीलापन" सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण

के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक शीर्षक पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर



सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार के अध्यक्षीय सम्बोधन से हुई, जिसके बाद डॉ. अजय चौरसिया ने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के तहत नेपाल में सीबीआरआई के योगदान पर प्रस्तुति

दी। इन प्रयासों को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष वृत्तचित्र फिल्म, "खंडहर से लचीलापन" भी जारी की गई। इस कार्यक्रम में भारत और नेपाल के प्रमुख विशेषज्ञ, इंजीनियर, आर्किटेक्ट और नीति निर्माता पुनर्निर्माण प्रयासों पर विचार करने और सुरक्षित बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सबक साझा करने के लिए एक साथ आए। पैनल में प्रो. सी.वी. आर. मूर्ति, प्रो. डी. श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, श्री अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, श्री जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेण गोस्वामी, डॉ. अजय चौरसिया, श्री एसके नेगी और डॉ. डीपी कानुनगो जैसे प्रसिद्ध विशेषज्ञ शामिल थे। शेष पृष्ठ 2 पर.....

[Published in Golden Times E-newspaper](#)

❖ E-News Clips:-

उत्तराखंड

समाज पर तकनीकी का बड़ा प्रभाव, निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार सीबीआरआई

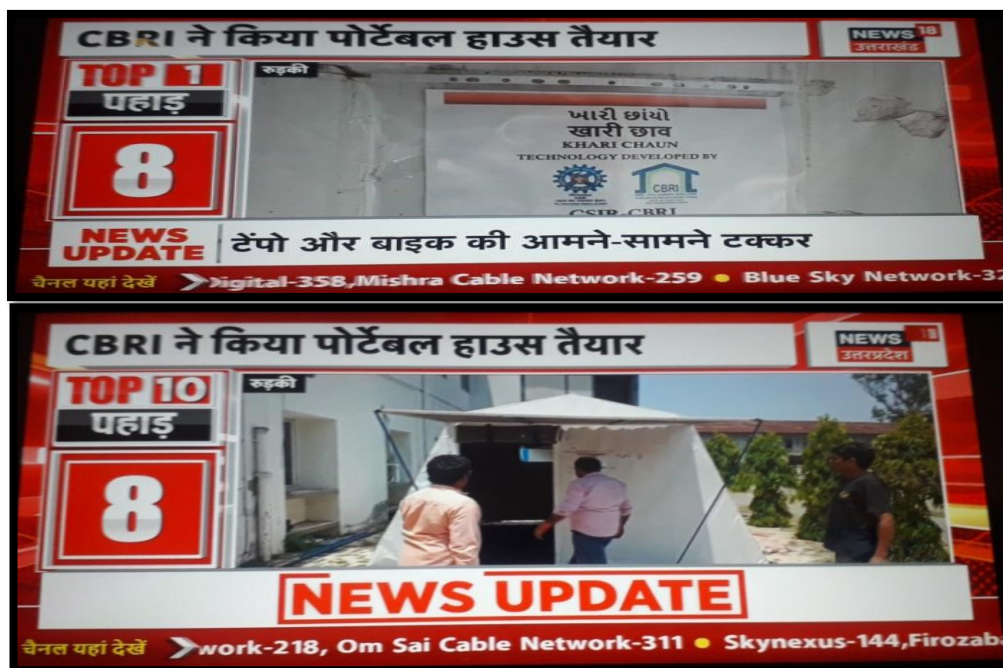
By Sahara Live News
© MAY 13, 2025



सीएसआईआर-सीबीआरआई ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2025 का तकनीकी हस्तांतरण एवं नवाचार प्रदर्शनी के साथ किया उत्सव
रुड़की, 13 मई 2025

Published in E-Sahara News:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9252>

❖ Television News :-



[Telecasted in News Uttar Pradesh Channel](#)



[Telecasted in Nai Aawaz Channel](#)

Media Clips of a Technical Panel-discussion on “Lessons Learned from the 2015 Nepal Earthquake” held at CSIR-CBRI, Roorkee. Experts highlighted how post-earthquake reconstruction in Nepal guided the development of disaster-resilient building technologies. The event was chaired by Director Prof. R. Pradeep Kumar and included valuable insights from national and international scientists.

ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था का धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसी चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्टिसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजीनियरिंग रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

- सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनों केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिजाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसिंहाह कैरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई-ट्रैक्टर को ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। | हिन्दुस्तान



रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई-ट्रैक्टर को ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान

ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था का धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन

स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसी चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत कार्टिसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंजीनियरिंग रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने

- सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनों केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिजाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसिंहाह कैरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।

• Television clips :-



Television telecast on News 18 Uttar Pradesh

